हिन्दी दैनिक

प्रत्यूष नवबिहार

जोहार

रांची संस्करण

www.tezraftarlive.com
Email-navbiharjh@gmail.com

रांची, पटना और दिल्ली से प्रकाशित

रांची ● बुधवार ● 31.07.2024 ● वर्ष : 15 ● अंक : 12 ● पृष्ठ : 12 ● आमंत्रण मूल्य : ~~3 रुपये~~ 2 रुपये

वायनाड में भूस्खलन, 106 लोगों की मौत, 98 लापता

एजेंसी

वायनाड : केरल के पर्वतीय वायनाड जिले में मंगलवार तड़के कई जगहों पर भारी बारिश के बाद हुई भूस्खलन की घटना में मरने वालों की संख्या बढ़कर 106 हो गई है जबकि 98 लोग लापता हैं। सैकड़ों लोगों के मलबे में फंसे होने की आशंका के कारण मृतकों की संख्या बढ़ सकती है। केरल के मुख्यमंत्री पिनाराई विजयन ने बताया कि वायनाड में भूस्खलन में मरने वाले 34 व्यक्तियों के शवों की पहचान की जा चुकी है। इनमें से 18 शव मृतकों के परिवारों को सौंप दिए गए हैं। कई लोगों फंसे होने या बह जाने की आशंका; हम बचाव कार्य जारी रखेंगे।

केरल के मुख्यमंत्री पिनाराई विजयन ने वायनाड कहा, वायनाड में अग्निशमन बल के 321 सदस्यों को तैनात किया गया है। सेना की सेवाएं भी उपलब्ध कराई गई हैं। 60 सदस्यों वाली एनडीआरएफ की टीम वायनाड पहुंच चुकी है और बेंगलुरु से 89 सदस्यों वाली टीम रास्ते में है। आपदा की जानकारी मिलने पर प्रधानमंत्री और राहुल गांधी के साथ-साथ विभिन्न पार्टी नेताओं ने सहायता की पेशकश की है। उन्होंने हमें आश्वासन दिया है कि हम इस संकट से निपटने के लिए मिलकर काम करेंगे।

विजयन ने कहा कि हमने घायलों के लिए सर्वोत्तम संभव उपचार की व्यवस्था की है। मलबे में अभी भी कई लोग फंसे हुए हैं। हमने वायनाड में 45 राहत शिविर और पूरे राज्य में कुल 118 शिविर खोले हैं, जिनमें 5,531 लोग रह रहे हैं। अग्निशमन बल, एनडीआरएफ और पुलिस मिलकर काम कर रहे हैं। सेना और नौसेना की विभिन्न टुकड़ियां बचाव कार्यों का समन्वय कर रही हैं।

इस बीच सेना का एयरक्राफ्ट एक बचाव टीम को लेकर वायनाड पहुंच चुका है। त्रिवेंद्रम के रक्षा प्रवक्ता ने बताया कि भारतीय वायु सेना ने वायनाड में आपदा राहत दल तैनात किया है, जहां आज भूस्खलन हुआ। भूस्खलन में 106 लोगों की जान चली गई। केरल की मंत्री वीना जॉर्ज ने कहा कि भारतीय नौसेना की एक टीम भी बचाव प्रयासों में सहायता करेगी। जॉर्ज ने कहा, मलप्पुरम में नीलांबुर क्षेत्र का एक पुल भी बह गया है। उन्होंने कहा, लगभग 70 लोग घायल भी हैं। हमने घायलों का उचित इलाज सुनिश्चित किया है।

वेस्ट कोस्ट वेदरमैन द्वारा एक्स पर साझा किए गए एक कथित वीडियो में जिले में भूस्खलन की जगह दिखाई गई है, जो अपने सुरम्य स्थानों के लिए जाना जाता है। कई सड़कें बह गईं, पेड़ उखड़ गए और झोपड़ियां नष्ट हो गईं। बाढ़ के पानी में बह गए वाहनों को पेड़ों की टहनियों में फंसे देखा जा सकता है। लगातार बारिश के कारण बचाव अभियान में बाधा आ रही है और बड़े-बड़े पत्थरों के कारण बचाव कर्मियों का रास्ता अवरुद्ध होने के कारण कुछ इलाके पहुंच से बाहर हैं।

राष्ट्रपति, उपराष्ट्रपति, प्रधानमंत्री और गृहमंत्री ने घटना पर जताया दुःख, अनुग्रह राशि की घोषणा

नयी दिल्ली : राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू, उपराष्ट्रपति जगदीप धनखड़, प्रधानमंत्री और केंद्रीय गृहमंत्री अमित शाह ने मंगलवार को केरल के वायनाड में हुई भूस्खलन की घटना पर दुःख जताया है। राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू ने अपने आधिकारिक ट्वीटर हैंडल 'एक्स' पर लिखा, केरल के वायनाड में हुए भीषण भूस्खलन में लोगों की मौत से दुःखी हूं। शोक संतप्त परिवारों के प्रति मेरी संवेदना व्यक्त करती हूं। मैं घायलों के शीघ्र स्वस्थ होने और बचाव कार्यों की सफलता के लिए प्रार्थना करती हूं।

उपराष्ट्रपति जगदीप धनखड़ ने 'एक्स' पर पोस्ट किया, केरल के वायनाड में भूस्खलन के कारण हुई मौतों से मैं बहुत दुःखी हूं। शोक संतप्त परिवारों के प्रति मेरी हार्दिक संवेदनाएं और घायलों के शीघ्र स्वस्थ होने की प्रार्थना करता हूं।

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने मंगलवार को केरल के वायनाड में भारी वर्षा और भूस्खलन से जानमाल की क्षति पर दुःख जताया है। उन्होंने केरल के मुख्यमंत्री से टेलीफोन पर बात कर हरसंभव मदद का आश्वासन दिया है। इसके अलावा प्रधानमंत्री ने मृतकों के परिजनों को 2 लाख रुपये और घायलों को 50,000 रुपये की अनुग्रह राशि देने की घोषणा की है। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने 'एक्स' लिखा कि वायनाड के कुछ हिस्सों में भूस्खलन से व्यथित हूं। मेरी संवेदनाएं उन सभी लोगों के साथ हैं जिन्होंने अपने प्रियजनों को खोया है और जो घायल हुए हैं। मैं उनके स्वस्थ होने के लिए प्रार्थना करता हूं।

केंद्रीय गृहमंत्री अमित शाह ने भी लिखा कि केरल के वायनाड में भूस्खलन की घटनाओं से मैं बहुत चिंतित हूं। एनडीआरफ युद्ध स्तर पर खोज और बचाव अभियान चला रहा है। दूसरी टीम प्रतिक्रिया अभियान को और मजबूत करने के लिए रवाना हो गई है। मृतकों के परिवारों के प्रति मेरी संवेदनाएं और घायलों के शीघ्र स्वस्थ होने की प्रार्थना करता हूं।

झारखंड में हावड़ा-मुंबई मेल के 18 कोच पटरी से नीचे उतरे, दो लोगों की मौत

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

जमशेदपुर : झारखंड के जमशेदपुर में हावड़ा-मुंबई मेल एक्सप्रेस मंगलवार को राजखरसवां और बड़ाबाम्बो के बीच पटरी से उतर गई। हादसे में दो लोगों की मौत हो गई जबकि पांच लोग घायल हो गए। रेल मंत्रालय ने मंगलवार को बताया कि सुबह 3:43 बजे चक्रधरपुर मंडल के राजखरसवां पश्चिम आउटर और बड़ाबाम्बो के बीच चक्रधरपुर के पास ट्रेन संख्या 12810 हावड़ा-सीएसएमटी एक्सप्रेस पटरी से उतर गई। हादसे की सूचना मिलते ही दुर्घटना राहत चिकित्सा उपकरण स्टाफ और सहायक मंडल रेल प्रबंधक (एडीआरएम), चक्रधरपुर के साथ मौके पर पहुंच गए। रेलवे मेडिकल टीम ने सभी को प्राथमिक उपचार दिया और फिर घायलों को नजदीकी अस्पताल में उपचार के लिए पहुंचाया गया। हादसे में अब तक दो लोगों की मौत हो चुकी है जबकि एक यात्री गंभीर रूप से घायल है। इसके अलावा चार लोगों को मामूली चोट आई है।

ट्रेन हादसे के कारण हावड़ा-तितलागढ़ और खड़कपुर-झारग्राम सहित पांच ट्रेनें रद्द कर दी गई हैं। इसके अलावा बिलासपुर टाटानगर सहित कई ट्रेनों का रूट छोटा कर चलाया जा रहा है रेलवे ने ट्रेन के 80 प्रतिशत यात्रियों को बस से चक्रधरपुर स्टेशन पहुंचाया। बाकी यात्रियों को निकालने के लिए एक बचाव ट्रेन भी मौके पर पहुंची। रेलवे ने हेल्पलाइन नंबर जारी किए हैं। टाटानगर : 06572290324, चक्रधरपुर:06587 238072, राउरकेलाः 06612501072, 06612500244, हावड़ा : 9433357920 03326382217, मुंबई हेल्पलाइन 022-22694040, नागपुर हेल्पलाइन नंबर 7757912790।

मृतकों को 2 लाख, घायलों को 50 हजार मुआवजा देगी झारखंड सरकार

रेल हादसे को लेकर झारखंड सरकार एक्शन मोड में है। स्वास्थ्य एवं खाद्य आपूर्ति मंत्री बन्ना गुप्ता, जनजाति कल्याण मंत्री दीपक बिरुआ व स्थानीय विधायक दशरथ के साथ घटनास्थल का जायजा लेने पहुंचे। घटनास्थल पर पहुंचकर अधिकारियों से राहत बचाव कार्य को लेकर जानकारी ली। इसके साथ ही उन्होंने हादसे में शिकार लोगों की मदद सुनिश्चित करने के निर्देश दिए। इस दौरान मंत्री बन्ना गुप्ता ने हादसे में मरने वालों के परिजनों को 2-2 लाख रुपये तथा घायलों को 50-50 हजार रुपये देने की घोषणा की। मंत्री बन्ना गुप्ता ने वहां मीडिया से बात करते हुए कहा कि हादसे के शिकार लोगों की मदद सुनिश्चित करेंगे। उन्होंने मुख्यमंत्री राहत कोष से मृतक के परिजनों को दो-दो लाख रुपये तथा घायलों को 50-50 हजार रुपये देने की घोषणा की। साथ ही बेहतर स्वास्थ्य सुविधा उपलब्ध कराने का निर्देश दिया। विधायक दशरथ गागराई ने भी रेल हादसे में दो लोगों के मौत पर गहरा शोक व्यक्त किया। उन्होंने घायलों के शीघ्र स्वास्थ्य होने की कामना की है।

हेमंत सोरेन का पांच महीना कौन लौटायेगा : कल्पना सोरेन

रांची : झारखंड विधानसभा के मानसून सत्र के तीसरे दिन मंगलवार को सदन में कल्पना सोरेन ने कहा कि आपलोग सभी माननीय हैं। कृपया सभी बैठ जाएं। मेरी पहली स्पीच है, कृपया बैठ जाएं। स्पीकर के आग्रह पर कल्पना सोरेन ने बोलना शुरू किया। उन्होंने अपनी बात शुरू करने से पहले सीएम हेमंत सोरेन और सदन के सभी सदस्यों का अभिवादन किया। उन्होंने कहा कि झारखंड की जनता हेमंत सरकार के साथ खड़ी है। टीवी चैनल, न्यूज एजेंसी और समाचार पत्र जो विचार छापते थे, आज चुप हैं। बीच-बीच में हंगामा चलता रहा। कल्पना नेपूछा कि हेमंत सोरेन का पांच महीना कौन लौटायेगा। कल्पना सोरेन के मेडन स्पीच के दौरान मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन सदन के अंदर मौजूद रहे। कल्पना सोरेन ने कहा कि विपक्ष गरीब, आदिवासी और महिला के खिलाफ है। हेमंत सोरेन की सरकार इन सभी के लिए अनुपूरक बजट लायी है। इन पैसों से गरीब, आदिवासी और महिलाओं की बेहतरी के लिए काम होना है।

झारखंड पहुंचे नये राज्यपाल संतोष गंगवार

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

रांची : झारखंड के नये राज्यपाल संतोष गंगवार मंगलवार को रांची पहुंचे। बिरसा मुंडा एयरपोर्ट में उन्हें गार्ड ऑफ ऑनर दिया गया। मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन, विधायक कल्पना सोरेन, विधानसभा अध्यक्ष, वित्त मंत्री रामेश्वर उरांव, स्वास्थ्य मंत्री बन्ना गुप्ता, मंत्री मिथिलेश ठाकुर, मंत्री इरफान अंसारी समेत आला अधिकारियों ने उनका स्वागत किया। संतोष गंगवार एयरपोर्ट से सीधे राजभवन गए। राजभवन में भी राज्यपाल का स्वागत किया गया। वे बुधवार को कार्यभार संभालेंगे।

झारखंड से विदा हुए राज्यपाल सीपी राधाकृष्णन, मुख्यममंत्री ने दी विदाई

रांची : राज्यपाल सीपी राधाकृष्णन आज मंगलवार को झारखंड से विदा हो गये। उन्हें महाराष्ट्र के नये राज्यपाल के रूप में नियुक्त किया गया है। बिरसा मुंडा एयरपोर्ट परिसर में मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन ने पुष्पगुच्छ एवं स्मृति चिन्ह भेंटकर सीपी राधाकृष्णन को भावपूर्ण विदाई दी। मौके पर मंत्री बन्ना गुप्ता, सांसद नलिन सोरेन, विधायक कल्पना सोरेन, मुख्य सचिव एल खियांगते, डीजीपी अनुराग गुप्ता, कैबिनेट सचिव वंदना दादेल सहित राज्य सरकार वरीय पदाधिकारी भी मौजूद रहे। इससे पहले मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन ने गांडेय विधायक व पत्नी कल्पना मुर्मू सोरेन के साथ राज्यपाल सीपी राधाकृष्णन से राजभवन में मुलाकात की। मौके पर हेमंत सोरेन ने राज्यपाल राधाकृष्णन को सप्रेम पुष्पगुच्छ भेंट किया और उनके सुदीर्घ एवं स्वस्थ जीवन के लिए उन्हें शुभकामनाएं दी। मुख्यमंत्री ने विश्वास जताया कि राज्यपाल सीपी राधाकृष्णन का स्नेह, आशीर्वाद एवं मार्गदर्शन झारखंडवासियों को सदैव मिलता रहेगा।

मेरठ में हाईटेंशन लाइन से टकराई 35 फुट ऊंची कांवड़, सात झुलसे

मेरठ : ऊंची कांवड़ पर रोक के बाद भी मंगलवार को हरिद्वार से दिल्ली ले जाई जा रही 35 फुट ऊंची कांवड़ बागपत रोड बाईपास फ्लाईओवर पर हाईटेंशन लाइन से टकरा गई। करंट की चपेट में आकर सात कांवड़िये झुलस गए। घायलों को अस्पताल में भर्ती कराया गया। पुलिस और प्रशासनिक अधिकारी मौके पर पहुंच गए और कांवड़ियों का हालचाल पूछा। स्थानीय पुलिस के मुताबिक दिल्ली के हैदरपुर से 20 कांवड़ियों का जत्था 35 फुट ऊंची कांवड़ लेकर आ रहे थे। सोमवार को यह कांवड़ सिवाया पार करके मोदीपुरम पहुंची थी। उस समय पुलिसकर्मियों की सूचना पर 220 केवीए बिजलीघर के कर्मचारियों ने हाईटेंशन लाइन की सप्लाई बंद कर दी।

मानसून सत्र : अनुपूरक बजट पास, वित्त मंत्री बोले सुखाड़ पर विशेष व्यवस्था करेगी हेमंत सरकार

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

रांची : अनुपूरक बजट पर सरकार का उत्तर देते हुए वित्त मंत्री रामेश्वर उराव ने भरोसा दिया है कि हेमंत सरकार सुखाड़ से निबटने के लिए विशेष व्यवस्था करेगी। सुखाड़ का तीसरा साल चल रहा है। विशेष व्यवस्था करना होगा इसके लिए सीएम को कहा है। सरकार की ओर से आश्वाशन दे रहा हूं की सरकार सुखाड़ के लिए विशेष व्यवस्था करेगी। उन्होंने कहा कि अनुपूरक की जरूरत का जवाब कल्पना सोरेन ने दिया था की क्यों आर्टिकल 2005 के तहत राज्य सरकार लाती है। नई योजनाओं के लिए, जेसीएफ से निकासी को रेगुलराइज करने के लिए और अनफोरेसेंट एक्सपेंडिचर के लिए अनुपूरक बजट सरकार लाती है। उन्होंने कहा कि मुख्यमंत्री मंइयां योजना क्रांतिकारी योजना है, यह प्रसंसनीय है। 872 करोड़ की यह योजना है।

फ्री बिजली के लिए भी बजट

रामेश्वर उरांव ने कहा कि फ्री बिजली के लिए और स्कॉलरशिप के लिए भी बजट लाया गया है। वर्तमान सरकार में जितना कुशल वित्त प्रबंधन किया है पिछली सरकारों ने नहीं किया है। 40हजार करोड़ से अधिक का ऋण सरकार ने लिया है।

नॉन टैक्सपेयर को फ्री में बालू देगी सरकार, सदन में सीएम हेमंत का एलान

रांची : नॉन टैक्सपेयर को फ्री में बालू देगी सरकार। यह घोषणा खुद सीएम हेमंत सोरेन ने सदन में की।उन्होंने कहा कि बालू के विषय पर कई बातें आयी। बताया गया कि अबुआ आवास और प्रधानमंत्री आवास योजना के तहत घर बनाने वालों को मंहगे दाम पर बालू मिल रहा है। ऐसे में नॉन टैक्सपेयर को फ्री बालू देने का निर्णय लिया गया है।

एक नजर

पत्थर खदान धंसने से दो मजदूरों का मौत

चौपारण : प्रखंड अंतर्गत पंचायत डेबो के ग्राम रैंबो करमा में मंगलवार को दोपहर डेढ़ बजे एक खदान के धंसने से दो मजदूरों का मौत हो गया और दो मजदूर घायल हो गए। ये सभी नागेश्वर राणा के पत्थर माइन्स में दैनिक मजदूरी करते थे। हर रोज की भांति मंगलवार को भी काम कर रहे थे। तभी दोपहर में लगभग डेढ़ बजे खदान के ऊपरी हिस्से लगभग 150 फिट से पत्थर और मिट्टी सहित गिर गया। जिससे समसुद्दीन अंसारी पिता जाफर मियां और मनोज भुईया पिता समर भुईया ग्राम रेनबो करमा दोनों व्यक्ति का घटनास्थल पर ही मौत हो गया। वहीं दो अन्य मजदूर द्वारिक सिंह पिता स्वर्गीय नारो सिंह, महेश भुईया पिता- स्वर्गीय ननकू भुईया यह लोग घायल हो गए। जिसे इलाज के लिए कोडरमा रेफर किया गया। वहीं घटना की खबर सुनकर जिला परिषद सदस्य भाग 2 रविशंकर अकेला भी घटनास्थल पर पहुंचे। और घटना की पूरी जानकारी ली। उन्होंने उक्त घटना पर गहरा शोक ब्यक्त किया।

नशा मुक्ति जागरूकता वाहन को डीसी ने दिखाई हरी झंड़ी

हजारीबाग : सद्भावना विकास मंच, हजारीबाग एवं जिला प्रशासन हजारीबाग के संयुक्त तत्वाधान में हजारीबाग जिला समाहरणालय भवन परिसर से नशा उन्मूलन हेतु दो जागरूकता वाहन को हरी झंडी दिखाकर रवाना किया गया। उपायुक्त नैंसी सहाय नैंसी सहाय, पुलिस अधीक्षक अरविंद कुमार सिंह तथा सद्भावना विकास मंच के सदस्यों के सामूहिक प्रयास से नशा उन्मूलन अभियान की शुरूआत की है। यह अभियान निरंतर 14 अगस्त तक चलाया जाएगा जिसमें हजारीबाग के प्रत्येक मोहल्ले, कस्बे, गांव गलियों में जागरूकता गाड़ी के द्वारा नशा उन्मूलन का संदेश एवं पंपलेट के माध्यम से लोगों को जागरूक किया जाएगा। उपायुक्त व पुलिस अधीक्षक ने सद्भावना विकास मंच के कार्यक्रम की प्रशंसा करते हुए इसे एक सराहनीय कदम बताया। स्वच्छ एवं स्वस्थ समाज के निर्माण के लिए सभी संस्थाओं को एक सकारात्मक उद्देश्य के लिए आगे आना चाहिए। नशा एक अभिशाप है इसे जड़ से खत्म किया जाना चाहिए। मौके पर विकास मंच के अध्यक्ष इरफान अहमद उर्फ काजू, उपाध्यक्ष दीपक कुमार, नौशाद,महताब आलम, जेपी जैन,मकसीर आलम, परवेज, सोहेल खान,शोएब मुस्तर शिवली अहमद, मोहम्मद शाहिद, अली खान सरफराज कमरुद्दीन रोशन सुनील गुप्ता सोहेल अहमद रमी नरूला राजा निजामुद्दीन इत्यादि ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

वन विभाग ने 62 टन अवैध कोयला लदे दो ट्रक को किया जब्त

बरही : बीते रात्रि एसीएफ ए. के. परमार के नेतृत्व में वन विभाग के अधिकारियों ने छापेमारी करते हुए 62 टन अवैध कोयला लदा दो ट्रक जब्त किया है। उक्त जानकारी रेंजर कमलेश कुमार सिंह ने दी। उन्होंने बताया कि विभाग को जानकारी मिली थी कि कोयला तस्कर हजारीबाग से डेहरी ऑन सोन की ओर कोयला ले जा रहे है। सूचना को गंभीरता से लेते हुए छापेमारी प्रारंभ की गई। इसी क्रम में एनएच 33 इटखोरी मोड़ के पास कोयला लदा दो ट्रक संख्या जेएच 2 एएफ 0249 और जेएच 02 एपी 0369 जब्त किया गया, परंतु चालक फरार हो गया। दोनो ट्रकों पर 31-31 टन कोयला लदा था, जिसका कोई भी कागजात नही था। जब्त किए गए ट्रक को वन विभाग परिसर बरही लाया गया और वाहन मालिक और अन्य के खिलाफ प्राथमिकी दर्ज करवाई गई है।

जवाहर घाट पर्यटन के रूप में विकसित होने से स्थानीय युवाओ को मिलेगा रोजगार : उमाशंकर

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

बरही : बरही विधायक उमाशंकर अकेला ने जवाहर घाट को पर्यटन स्थल के रूप में विकसित करने को लेकर सदन में मामला उठाया है। विधायक अकेला ने सदन में मंत्री, पर्यटन, कला संस्कृति, खेलकूद एवं युवा कार्य विभाग से सवाल किया है कि क्या यह बात सही है कि हजारीबाग एवं कोडरमा जिले में स्थित जवाहर घाटी प्राकृतिक सौंदर्य के लिए जाना जाता है। मंत्री ने इसका स्वीकारात्मक जवाब दिया है। इसके अलावा क्या यह बात सही है कि सैकड़ों पर्यटक यहाँ पर नौका विहार एवं भ्रमण करने हेतु आते है। सम्बंधित मंत्री ने भी इसे स्वीकारात्मक जवाब दिया हैं। विधायक अकेला ने सदन में मामला उठाया है कि यदि उपर्युक्त खण्डों के उत्तर स्वीकारात्मक है, तो क्या सरकार जवाहर घाटी को पर्यटन स्थल के रूप में विकसित करने का विचार रखती है, हां, तो कब तक, नहीं तो क्यों? मंत्री ने जवाब दिया है कि प्रश्नाधीन स्थल पर्यटक स्थल के रूप में अधिसूचित नहीं है। जिला पर्यटन संवर्धन परिषद व तदोपरांत राज्य पर्यटन संवर्धन समिति की अनुशंसा के आलोक में पर्यटन, कला संस्कृत्ति, खेलकूद एवं युवा कार्य विभाग द्वारा किसी भी स्थल को पर्यटक स्थल के रूप में अधिसूचित किया जाता है जिसके पश्चात उक्त स्थल के विकास हेतु राशि उपलब्ध कराई जाती है। विभागीय पत्रांक 1139 दिनांक 25.07.2024 द्वारा उक्त स्थल को पर्यटक स्थल के रूप में घोषित करने का प्रस्ताव जिला पर्यटन संवर्धन परिषद के समक्ष विचारार्थ रखने हेतु उपायुक्त सह अध्यक्ष, जिला पर्यटन संवर्धन समिति, हजारीबाग एवं कोडरमा को निर्देशित किया गया है। साथ ही जिला पर्यटन संवर्धन परिषद द्वारा प्रस्ताव विभाग को भेजने की कार्रवाई की जा रही है। विधायक अकेला ने कहा कि जवाहर घाट पर्यटन के रूप में विकसित होने से स्थानीय युवाओं को रोजगार मिलेगा, साथ ही क्षेत्र विकसित करेगा। इसके अलावा राज्य सरकार को भी राजस्व का फायदा होगा। कहा कि पर्यटन स्थल के रूप में विकसित होने से पर्यटकों के चहल कदमी से आस पास का इलाका गुलजार रहेगा।

भाई बना भाई का दुश्मन ब्लेड मार किया अधमरा

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

चौपारण : चौपारण थाना क्षेत्र के करमा पंचायत के लपसिया से बड़ा मामला प्रकाश में आया है। जहां सगा भाई ही भाई का जानी दुश्मन बनकर अधमरा कर दिया। जिसे सामुदायिक अस्पताल में इलाज के उपरांत रेफर कर दिया गया। इस सम्बंध में पीड़ित छोटू प्रसाद पिता जानकी प्रसाद ग्राम लपसिया द्वारा थाना में आवेदन देकर न्याय की गुहार लगाई है। थाने में दिए गए आवेदन में पीड़ित छोटू प्रसाद ने बताया कि हम सभी अपने घर मे थे। इसी बीच मेरा भाई सुरेश महतो पिता जानकी महतो, उसकी पत्नी अनिता देवी और रूपा देवी पति पंकज कुमार सभी ग्राम लपसिया अचानक मेरे घर मे पहुंचकर मेरी पत्नी पर डायन का झूठा आरोप लगाकर पत्नी को पटकर गाली गलौज और लोहे के पाइप और डंडे से मारपीट करने लगे। इसी बीच हम बचाने पहुंचे तो मेरे साथ भी मारपीट कर मुझे नीचे गिरा कर सुरेश महतो ने मुझे जान मारने के नियत से अपने हाथ मे रखे ब्लेड से मेरा गुप्तांग में मार दिया। ब्लेड मारने से मेरा गुप्तांग पूर्णरूप से जख्मी हो गया। जख्मी होने के बाद मुझे सरकारी अस्पताल लाया गया।

जहां से चिकित्सको ने गुप्तांग में कई टांका देकर रेफर कर दिया। वहीं पीड़ित ने कहा कि हम बाहर में रहते हैं, तो इससे पहले भी सुरेश महतो मेरी पत्नी को अकेला पाकर रात्रि में गलत नियत से घर मे घुसने का प्रयास कर चुका है। वहीं इससे पहले भी उक्त व्यक्ति ने मेरी पुतहु बरती देवी पति दीपक कुमार के साथ भी मारपीट कर चुका है। पीड़ित ने न्यायोचित जांच कर कानूनी कारवाई करने की मांग की है।

आपकी हर समास्या का निवारण करना यही होगा मेरा प्रयास : शेफाली गुप्ता

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

हजारीबाग : सदर विधानसभा के नगरनिगम क्षेत्र के वार्ड नं 23 कदमा में भाजपा नेत्री शेफाली गुप्ता ने मंगलवार को सघन दौरा किया। लोगों से मिलकर जनसमस्याओं से रूबरू हुई। इस दौरान कदमा पोस्ट ऑफिस के निकट देवी मंडप में जन चौपाल एवं संकलन कैंप लगाकर प्रधानमंत्री जनकल्याणकारी योजनाओं की ग्रामीणों को जानकारी दिया। प्रधानमंत्री विश्वकर्मा योजना, प्रधानमंत्री सृजन कार्यक्रम एवं प्रधानमंत्री सुक्ष्म खाद्य उद्योग उन्नयन योजनाओं की जानकारी दिया। इस अवसर पर राशन कार्ड, वृद्धा पेंशन, दिव्यांग पेंशन एवं विधवा पेंशन सहित कई जनसमस्याएं सुनी। केंद्रीय योजनाओं से संबंधित समास्याओं पर जल्द समाधान करने का ग्रामीणों को भरोसा दिया। इस दौरान अन्य मुलभुत समास्याओं की निराकरण में हर संभव सहयोग करने का आश्वासन दिया। इस मौके पर कदमा वासियों ने जरूरतमंदों की समास्याओं से रूबरू होने के लिए भाजपा नेत्री शेफाली गुप्ता का आभार जताया। मौके पर भाजपा नेत्री शेफाली गुप्ता ने कदमा वासियों को संबोधित कर कहा कि सदर विधानसभा क्षेत्र मेरा परिवार है। आपके हर समास्याओं की निवारण करूँ यही मेरी प्रयास है। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री जनकल्याणकारी योजनाओं से जरूरतमंद परिवारों को जोड़ने का प्रयास लगातार जारी है। हमारी टीम पूरी तत्परता के साथ कार्य कर रही है। हमारी इस पहल से वास्तव मे जरूरतमंद कई परिवारे केंद्रीय योजनाओं से लाभान्वित भी हो चुके हैं। भविष्य में भी यह प्रयास लगातार जारी रहेगी।

कांवरियों के दूसरे जत्थे को रामचरित मानस सेवा संस्थान ने किया रवाना

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

हजारीबाग : सावन आते ही हर तरफ भक्ति भाव का माहौल नजर आ रहा है पूजा अर्चना शिव भक्त करते नजर आ रहे हैं तो वहीं दूसरी ओर हजारीबाग में श्री रामचरितमानस सेवा संस्थान की बेहतर प्रयास शिव भक्तों को बाबा की धाम देवघर दर्शन करने के लिए आतुर नजर आ रही है। बाबा भोलेनाथ की असीम कृपा से संस्था के द्वारा पहला जत्था 24 जुलाई को बुढ़वा महादेव मंदिर से रवाना किया गया था। जिसमें 110 कांवरिया मौजूद थे सभी सकुशल 29 जुलाई को देर शाम अपने घर वापस लौट आए। जिसके पास 30 जुलाई दिन मंगलवार को ओकनी छोटा शिव मंदिर एवं डेमोटांड़ से दो बस में कुल 110 शिव भक्त देवघर बाबा धाम के लिए रवाना हुए। इस पूर्व संस्था के अध्यक्ष संजय सिंह ने छोटा शिव मंदिर में पूजा अर्चना कर क्षेत्र वासियों के सुख शांति समृद्धि की मंगल कामना की वही शिव भक्तों के यात्रा मंगलमय की बाबा से कामना की, इसके बाद सिंह ने बस का फीता काटकर शिव भक्तों को देवघर के लिए रवाना किया वहीं दूसरी ओर ग्रामीण क्षेत्र के शिव भक्त डेमोटांड़ से देवघर बाबा धाम के लिए रवाना हुए हैं। आगमन से लेकर प्रस्थान तक की पूरी व्यवस्था संस्था के अध्यक्ष संजय सिंह के द्वारा किया जाता है। जिसमें खानपान मेडिकल सुविधा सहित अन्य कई चीज उपलब्ध कराई जाती है।

पूर्व मंत्री योगेंद्र साव ने बड़कागांव अंचल कार्यालय में लगाया जनता दरबार

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

बड़कागांव : झारखंड विधानसभा का मानसून सत्र जारी है, मानसून सत्र में शामिल होने के कारण विधायक अंबा प्रसाद के द्वारा लगने वाले जनता दरबार में उनके अनुपस्थिति में पूर्व मंत्री योगेंद्र साव ने जनता दरबार लगाया। इस दौरान पूर्व मंत्री ने क्षेत्र से आए लोगों की समस्याएं सुनी एवं उनका निष्पादन हेतु मौजूद अंचलाधिकारी एवं प्रखंड विकास पदाधिकारी को निर्देशित किया। इस दौरान उन्होंने अंचलाधिकारी बालेश्वर राम को कहा कि अंचल संबंधित कई शिकायतें लगातार ग्रामीणों द्वारा प्राप्त हो रही है, कार्य में सुधार करने को कहा। जनता का कार्य सर्वोपरि है इससे किसी प्रकार का समझौता नहीं किया जाएगा। इस दौरान मुख्य रूप से अंचल अधिकारी बालेश्वर राम, प्रखंड विकास पदाधिकारी जितेंद्र मंडल, प्रखंड आपूर्ति पदाधिकारी भास्कर राज मोहम्मद बाबर, मोहम्मद तसलीम, मनदीप कुमार सिंह, चैतलाल महतो सहित कई गांव के लोग मौजूद थे।

बारिश कम होने से किसान हुए मायूस, विगत वर्ष भी नहीं हुई थी खेती, जिला में 49 और प्रखंड में 52 फीसदी कम हुई बारिश

अक्सर अंसारी

चौपारण : प्रखण्ड के 26 पंचायत के 269 गांवों के किसानों के चेहरे पर मायूस व निराशा ला दिया है। किसान मानो उस असहाय व्यक्ति के भाति सिर्फ देख सुन भर रहा है जो स्वयं अपना नित्यकर्म भी नहीं कर पाता। आज अन्नदाता स्वयं अन्न के लिये तरसने को मजबूर है। कुछ नगदी जो जमा पूंजी होता है उसे इस आशा में खेत मे फेक आता है कि फसल उगने पर वह सूद समेत लौट जाएगा। परन्तु लगातार सुखाड़ का दंश झेल रहा किसान अब मायूस व हताश नजर आता है। न उसके पास नौकरी है न रोजगार के कोई दूसरा साधन, बेचारा सिर्फ खेती पर आश्रित है जिसे मानसून ने बुरी तरह से कुचल दिया। यूं तो पूरा राज्य में औषत से बहुत कम बारिश हुवा है हजारीबाग और चौपारण की स्थित और भी बदतर है। चौपारण में औषत से लगभग 52 फिशदी कम बारिश रिकॉर्ड की गई है।

सूखने लगे बिछड़े, उठने लगे सुखाड़ घोषित करने की मांग

किसान समयानुसार अपने खेतों में धान का बिचड़ा लगा दिया और उसे उम्मीद था कि मानसून के बारे में लगाया गया पूवानुर्मान सही हुआ तो इसबार अच्छी खेती होगी। पर न मानसून बरसा न कोई चक्रवाती बारिश ही आया।परिणाम यह है कि बिचड़ा खेत में ही सूखने लगा है क्योंकि न तालाब में पानी है न सिंचाई की कोई साधन। जिसके बाद लोगों ने कहना शुरू कर दिया है कि इस बार फिर सुखाड़ दहलीज पर क्षेत्र खड़ा हो गया है। अगर 15 दिन और अच्छी और भारी बारिश नहीं हुई तो किसान की स्थिति दयनीय हो जाएगी। सिंचाई के साधन की मांग होती लगातार होती रही है। पिछले वर्ष भी औषत से कम बारिश हुआ जिसका असर बिगत गर्मी में देखने को मिला जहां कभी पीने के पानी का अभाव नहीं हुआ था वहां चापानल और कुआँ सुख गए थे और पीने के लिये दूर से पानी लाना पड़ता था। अब चुकी अभी तक बारिश की स्थिति बहुत खराब रही है। जिससे लोगों को स्वयं व मवेशियों को पिलाने के लिये पानी की समस्या सामने मुहं बाए खड़ी दिख रही है। ऐसा नही की सुखाड़ का यह पहला मामला है। पिछले वर्ष भी क्षेत्र सुखाड़ घोषित हुआ था। जिसके बाद सरकार ने 3500/- रुपया तय किया पर कुछ किसानों के अलावा पूरा मामला कागजो और फाइलों में ही रह गया। जबकि गरीब किसानों को कई बार केवाईसी तथा अन्य कागजातों के लिये प्रज्ञा केंद्रों व अंचल का चक्कर लगाना पड़ा था। जनप्रतिनिधियों से क्षेत्र के विकास के लिये अविलंब इस बात की चिंता करनी चाहिये और क्षेत्र में सिंचाई की उचित व्यवस्था करनी चाहिये। बराबर सुखाड़ का दंश झेल रहा क्षेत्र पूरी तरह खेती पर ही आश्रित है।

संक्षिप्त खबरें

पचड़ा सीसीएल चंद्रगुप्त का मामला विधायक अंबा प्रसाद ने विधानसभा में उठाया

केरेडारी : विधानसभा सत्र के तीसरे दिन बड़कागांव विधायक अंबा प्रसाद ने पचड़ा में प्रस्तावित सीसीएल चंद्रगुप्त का मामला विधानसभा में उठाया। विधायक अंबा प्रसाद ने सदन का ध्यान आकर्षित कराते हुए कहा कि हजारीबाग जिला अंतर्गत केरेडारी प्रखंड क्षेत्र के ग्राम पंचायत पचड़ा में सीसीएल की प्रस्तावित चंद्रगुप्त परियोजना के निमित्त बार-बार कराई जा रही ग्राम सभा स्थानीय ग्रामीण रैयतों के भारी विरोध के कारण सफल नहीं हो पा रही है। विगत दिनों पूर्व भी सीसीएल द्वारा आम सभा कराई गई जिसका भारी विरोध ग्रामीणों द्वारा किया गया, वहीं उक्त क्षेत्र के स्थानीय जनप्रतिनिधि यथा प्रमुख, मुखिया के द्वारा भी परियोजना का खुलकर विरोध किया जा रहा है लेकिन जिला प्रशासन व जिले के अधिकारियों द्वारा कंपनी के पक्ष में आमसभा को सफल घोषित कराने का षड्यंत्र रच रही है जो कि आम जनमानस के हित में नहीं है। उन्होंने सदन में मांग किया कि पचड़ा में सीसीएल की प्रस्तावित चंद्रगुप्त कोयला परियोजना के निमित्त कराई गई आम सभा को रद्द करते हुए बगैर ग्रामीणों के सहमति के कंपनी द्वारा किसी प्रकार का कार्य पर रोक लगाई जाए।

जेबीकेएसएस /जेएलकेएम सिरमा पंचायत कमेटी का हुआ विस्तार

बड़कागांव : झारखंडी भाषा खतियान संघर्ष समिति (जेबीकेएसएस) / जेएलकेएम के द्वारा आगामी विधानसभा चुनाव में जीत हासिल करने को लेकर तैयारियां शुरू कर दी गई है। संगठन मजबूती पर जोर दिया जा रहा है। जिसके तहत केन्द्रीय अध्यक्ष टाइगर जयराम महतो के निदेर्शानुसार के द्वारा झारखंडी भाषा खतियान संघर्ष समिति/जेएलकेएम के पंचायत कमेटी का विस्तार किया गया। जिसमें मनोज महतो को पंचायत अध्यक्ष, सचिव रमन महतो, वहीं कोषाध्यक्ष मुकेश महतो सह सचिव मोहम्मद, मुकेश कुमार, सहूद इमाम, उपाध्यक्ष मोहम्मद तौहीद रजा, मनोज कुमार बनें। मौके पर जेबीकेएसएस के नवचयनित प्रखंड पदाधिकारियों ने कहा कि मैं ईमानदारी पूर्वक अपने पद का निर्वहन करुंगा संगठन की मजबूती पर विशेष ध्यान रहेगा। इस मौके पर कई दूसरे दलों के लोगों ने जेबीकेएसएस का सदस्यता ग्रहण किया। इस बैठक में मुख्य रूप से जिला कमेटी का जिला महिला मोर्चा अध्यक्ष सुनीता साहू, जिला सचिव जानिसर आलम,प्रखंड कमेटी अध्यक्ष अशोक महतो, प्रखंड सचिव गोतम कुमार, प्रखंड कोषाध्यक्ष रामचन्द्र महतो, प्रखंड उपाध्यक्ष मोहम्मद तारिक और केन्द्रीय कमेटी के पदाधिकारी मिथलेश कुमार, पतरातू से संजीव साहू, गिरीशंकर प्रसाद के अलावे सक्रिय सदस्य के साथ जेबीकेएसएस कार्यकर्ता नकुल महतो, गोतम महतो, रमन महतो, सरजू महतो, मोहम्मद साहुद इमाम मोहम्मद मोनाजिर मोहम्मद सकीउल्लाह सरजू महतो, मनोज महतो, प्रभुदयाल, मुकेश, संकर, मुकेश, जगदीश, रौशन, मोहम्मद तौहीद रजा पंचायत के लोग उपस्थित थे।

युवा कांग्रेस बरही विधानसभा ने लॉन्च किया हर घर खटाखट कार्यक्रम

बरही : बरही विधानसभा के बरही प्रखंड अंतर्गत करसो में युवा कांग्रेस कार्यालय में राष्ट्रीय कॉर्डिनेटर प्रशांत तिवारी बरही पहुंचे। युवा कांग्रेस के पदाधिकारी से मिलते हुए उन्होंने कहा कि हर घर खटाखट कार्यक्रम के तहत युवा कांग्रेस के सभी कार्यक्रम झारखंड की 10 योजनाओं की जानकारी जनता को देंगे एवं बताएंगे कि किस प्रकार से झारखंड में कांग्रेस गठबंधन की सरकार ने सरकारी योजनाओं से लाभान्वित करने का कार्य किया है। विधानसभा अध्यक्ष मनोहर यादव ने कहा कि युवा कांग्रेस के सभी पंचायत और वार्ड में जाकर सरकार के महत्वपूर्ण योजनाओं को बताएंगे जिसमें सरकार के द्वारा महिलाओं को सर्वपेंशन योजना 200 यूनिट बिजली मुक्त, 2 लाख रुपए तक किसानों का ऋण माफी, अबुआ आवास योजना, सावित्रीबाई फुले योजना, सोना सोबरन साड़ी धोती योजना, मुख्यमंत्री बहन बेटी स्वावलंबन योजना सहित सभी कल्याणकारी योजना को घर-घर तक पहुंचाने का काम करेंगे। कांग्रेस प्रखंड उपाध्यक्ष जमुना यादव ने कहा कि यह योजना काफी शानदार है। इस योजना को घर-घर तक पहुंचने से ही कांग्रेस की जीत पक्की होगी। प्रखंड अध्यक्ष मंदिर यादव ने कहा कि हम पूरी टीम को लेकर इस योजना को घर-घर तक पहुंच कर कांग्रेस पार्टी को मजबूत करेंगे। विधानसभा महासचिव फिरदौस खान ने कहा कि हम पूरी टीम इस योजना को घर तक लेकर जाएंगे और कांग्रेस पार्टी को मजबूत करेंगे। मौके पर उपस्थित राष्ट्रीय कॉर्डिनेटर प्रशांत तिवारी, विधानसभा अध्यक्ष मनोहर यादव, प्रखंड उपाध्यक्ष जमुना यादव, प्रखंड अध्यक्ष मंजीत यादव, विधानसभा महासचिव प्रदोष खान, श्याम सुंदर कुमार, आकाश भारती, अरुण कुमार आदि मौजूद रहे।

विधायक ने मंत्री से बरही अवर निबंधक का तबादला रद करने की मांग की

बरही : बरही विधायक उमाशंकर अकेला मंगलवार को विधानसभा सत्र के दौरान अल्पसंख्यक कल्याण, नगर विकास एवं आवास विभाग, पर्यटन कला संस्कृति खेलकूद युवा कार्य निबंधन विभाग मंत्री हफीजुल हसन से मुलाकात कर लिखित ज्ञापन देकर मांग किया है कि बरही अवर निबंधक बिकास कुमार का तबादला रद्द किया जाए। ज्ञापन के माध्यम से उन्होंने मंत्री को अवगत करवाया है कि बरही काफी बड़ा अनुमंडल क्षेत्र है। जिसमें बरही, चौपारण, पदमा, बरकट्ठा, चलकुशा जैसे पांच बड़े बड़े प्रखंडों का एक इकलौता निबंधन कार्यलय बरही में स्थित है। जिसके निबंधन पदाधिकारी विकास कुमार का तबादला कोडरमा जिला निबंधन पदाधिकारी के रूप में हो गया है, जबकि बरही अवर निबंधक पदाधिकारी के रूप में किसी को पदस्थापित नही किया गया है। जिसे लेकर बरही विधायक उमाशंकर अकेला ने मांग किया है कि अवर निबंधक पदाधिकारी बरही विकास कुमार का तबादला रद्द किया जाए अन्यथा अतिरिक्त प्रभार देकर उन्हें अवर निबंधक पदाधिकारी बरही के रूप में कार्य करने की जिम्मेवारी दी जाए।

एक नजर

दो गुटों में मारपीट थाने का किया घेराव, मामला दर्ज

रांची : रांची के हिंदपीढ़ी थाना क्षेत्र के इमली पेड़ के मंदिर के समीप दो गुटों में मारपीट के बाद एक गुट के लोगों ने सोमवार देर रात थाने का घेराव किया। मामले को लेकर स्थानीय लोगों ने पुलिस पर गश्त नहीं करने का आरोप लगाया। साथ ही आरोपितों की गिरफ्तारी की मांग को लेकर सोमवार देर रात को हिंदपीढ़ी थाने पहुंच गए और हंगामा किया। मारपीट में दोनों पक्षों के युवकों को चोट लगी है। एक पक्ष से अब्दुल्ला हसनैन ने मंगलवार को चार नामजद और दो अज्ञात के खिलाफ एफआईआर दर्ज कराया है। दूसरे गुट से डेली मार्केट निवासी हर्षित प्रसाद ने अब्दुल्ला हसनैन और दो अज्ञात के खिलाफ मामला दर्ज कराया गया है। पुलिस एक पक्ष से तीन लोगों को हिरासत में लेकर पूछताछ कर रही है। कोतवाली डीएसपी प्रकाश सोए ने बताया कि मारपीट को लेकर दोनों पक्षों की ओर से एफआईआर दर्ज किया गया है। तीन युवकों को हिरासत में लेकर पूछताछ की जा रही है।

रांची जिला कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष ने मंत्री से की मुलाकात

रांची : रांची जिला कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष डॉ राकेश किरण महतो ने मंगलवार को ग्रामीण विकास मंत्री इरफान अंसारी से झारखंड मंत्रालय में मुलाकात की। उन्होंने सिल्ली विधानसभा क्षेत्र के सिल्ली, सोनाहातु और राहे प्रखंड के कुल 12 सड़क एवं पुल के निर्माण की मांग की। जिलाध्यक्ष डॉ महतो ने विभागीय मंत्री को अवगत कराया कि पिछले दिनों जिला कमेटी की ओर से तीनों प्रखण्डों में जन सहायता शिविर का आयोजन किया गया था, जिसमें इन जर्जर सड़क और पुल के निर्माण कराने का लिखित आग्रह स्थानीय ग्रामीणों के जरिये किया गया था। इनके निर्माण से ग्रामीणों को आवागमन में हो रही परेशानी से निजात मिलेगा। जिलाध्यक्ष की मांग पर मंत्री ने उन्हें आश्वासन दिया कि उनकी मांगों को सरकार गंभीरता से लेगी। इन ग्रामीण पथ और पुलों के निर्माण को प्राथमिकता के आधार पर करायेगी। मंत्री ने विभाग के सचिव को निर्देश देते हुए कहा कि इन पथ और पुल के निर्माण के लिए यथाशीघ्र डीपीआर बनाया जाए। जल्द ही स्थानीय ग्रामीणों की मांग पूरी होगी।

आरपीएफ ने भारी मात्रा में शराब किया जब्त

रांची : रेलवे सुरक्षा बल (आरपीएफ) ने टाटीसिलवे स्टेशन से भारी मात्रा में शराब बरामद किया है। एएसआई रवि शेखर ने मंगलवार को बताया कि ऑपरेशन सतर्क के तहत 47 (शराब की बोतल और केन बियर जब्त किया गया है। उन्होंने बताया कि रांची रेल मंडल के मंडल सुरक्षा आयुक्त पवन कुमार के निर्देश के बाद आरपीएफ टीम लगातार अवैध रूप से शराब और मादक पदार्थों के तस्करी करने वालों के खिलाफ कार्रवाई कर रही है। इसी क्रम में आरपीएफ रांची की ओर से गाडी संख्या 18624 एक्सप्रेस के आने पर टाटी सिलवे स्टेशन पर जांच की गयी। ट्रेन की जांच के दौरान, टीम ने देखा कि सामान्य डिब्बे में शौचालय के पास दो सफेद रंग के बैग पड़े थे। टीम ने सभी लोगों से पूछताछ की लेकिन किसी ने भी बैग की दावेदारी नहीं की। इसके बाद बैग की जांच करने पर रॉयल स्टैग, किंगफिशर बीयर बरामद किया गया। आगे की कानूनी कार्रवाई के लिए उत्पाद विभाग को सौंप दिया।

अतिक्रमण बताकर तोड़े गए मकान को बनाकर दें और पांच लाख मुआवजा का भी करें भुगतान : हाई कोर्ट

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

रांची : झारखंड हाई कोर्ट ने मंगलवार को दुमका में अतिक्रमण बताकर तोड़े गए मकान को फिर से बनवाने का आदेश राज्य सरकार को दिया है। साथ ही कोर्ट ने याचिकाकर्ता को पांच लाख रुपये मुआवजा राशि का भुगतान करने का भी निर्देश दिया है। सुनवाई के दौरान कोर्ट ने अपने आदेश में कहा कि जब कोर्ट के आदेश के आलोक में याचिकाकर्ता ने निर्धारित समय अवधि में अपीलेट अथॉरिटी के पास अपील दाखिल कर दिया था और मकान नहीं तोड़ने का कोर्ट का आदेश सीओ के समक्ष लाया था, इसके बाद भी उनका मकान क्यों तोड़ा गया? मकान तोड़ने के पहले झारखंड पब्लिक लैंड एंक्रोचमेंट एक्ट के तहत कोई प्रोसिडिंग भी नहीं चलाई गई, सिर्फ पत्राचार के आधार पर मकान तोड़ दिया गया, जो गलत है। याचिकाकर्ता ओमप्रकाश को दुमका सदर सीओ ने झारखंड लैंड एंक्रोचमेंट एक्ट के तहत उनके जमीन को अतिक्रमण बताते हुए दो सप्ताह में उसे हटाने का नोटिस आठ जून, 2016 को दिया था। इसके बाद में सीओ ने एक और आदेश पारित किया, जिसमें प्रार्थी की जमीन को पब्लिक लैंड बताकर अतिक्रमण एक सप्ताह में हटाने का आदेश दिया। ऐसा नहीं करने पर उसे तोड़ने का आदेश दिया जाएगा। इसके खिलाफ याचिकाकर्ता ने हाई कोर्ट में याचिका दाखिल की थी। उनकी ओर से कोर्ट को बताया गया कि उनके जमीन जो किसी के द्वारा गिफ्टेड किया गया था उसपर वह वर्ष 1949 से रह रहे हैं, उसे अतिक्रमण बताते हुए तोड़ने का आदेश सीओ ने दिया। हाई कोर्ट ने याचिकाकर्ता को दो सप्ताह में सक्षम अथॉरिटी के पास अपील दाखिल करने और इस दौरान किसी तरह की कोई कार्रवाई सरकार की ओर से नहीं करने का आदेश दिया था। कोर्ट के आदेश के आलोक में प्रार्थी ने निर्धारित समय सीमा के दौरान एसडीओ दुमका के पास अपना अपील दायर किया था लेकिन एसडीओ दुमका के द्वारा दो सप्ताह की अवधि पूरा होने के बाद बुलडोजर से उनके मकान को तोड़ दिया गया जबकि इस संबंध में अपील लंबित थी। हालांकि, मकान तोड़ने के पहले एसडीओ ने अपील को यह कहते हुए खारिज कर दिया कि यह अपील एडिशनल कलेक्टर के यहां किया जाना चाहिए था। इस पर याचिकाकर्ता ने दोबारा हाई कोर्ट में याचिका दाखिल की कि गलत जगह में अपील दाखिल करने के बावजूद भी उनकी अपील को एसडीओ खारिज नहीं की कर सकते। इससे संबंधित अथॉरिटी के पास उनकी अपील वापस भेज सकते थे, जिस पर हाई कोर्ट ने अपना फैसला सुनाते हुए राज्य सरकार को मकान बनाने देने और पांच लाख का मुआवजा भुगतान करने का निर्देश दिया।

झामुमो ने भाजपा सांसद के बयान के खिलाफ निकाला विरोध मार्च

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

रांची : झारखंड मुक्ति मोर्चा (झामुमो) रांची महानगर ने मंगलवार को मोरहाबादी स्थित बापू वाटिका से उपायुक्त कार्यालय तक एकदिवसीय विरोध मार्च सह प्रदर्शन किया। यह विरोध मार्च सह प्रदर्शन भाजपा सांसद निशिकांत दूबे के जरिये वर्तमान लोकसभा सत्र के दौरान झारखंड राज्य के अभिन्न अंग संथाल परगना प्रमंडल, बिहार एवं पश्चिम बंगाल के कुछ जिलों को मिलाकर यूनियन टेरिटरी बनाने के सम्बन्ध में दिए गए बयान के विरोध में किया गया। मौके पर झामुमो रांची जिला अध्यक्ष मुस्ताक आलम ने कहा कि झारखंड अलग राज्य के लिए आंदोलनकारियों ने पचासों साल की लड़ाई लड़ी है। कितने लोग शहीद हुए, तब जाकर झारखंड बना है। भाजपा सांसद के जरिये यूनियन टेरिटरी बनाने का बयान बेहद ही दुर्भाग्यपूर्ण है, हमारे हृदय स्थली संथाल परगना को झारखंड से अलग करना चाहते है। ये इनकी झारखंड विरोधी मानसिकता को दशार्ता है। केवल राजनीति करने के लिए उनके ये बयान आ रहे हैं। भारत के बॉर्डर के अंदर चाइना आ रहा है, भाजपा के ही शासित राज्य असम बॉर्डर पर भी घुसपैठ हो रहा है। इसपर ये लोग चुप्पी साधे हुए हैं। इस अवसर पर झामुमो के केंद्रीय सदस्य समनूर मंसूरी, रांची जिला उपाध्यक्ष बीरू तिर्की, अश्विनी शर्मा, जनक नायक, कलाम आजाद, रामानंद बेदिया, बीरू साहू, सचिव डॉ हेमलाल कु मेहता, संगठन सचिव आदिल इमाम, तालकेश्वर महतो, जिला प्रवक्ता अरविंदर सिंह सहित अन्य नेता उपस्थित थे।

आदिवासियों की जमीन को लैंड बैंक बनाकर लूटा गया : शिल्पी नेहा तिर्की

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

रांची : झारखंड विधानसभा के मानसून सत्र में मंगलवार को कांग्रेस विधायक शिल्पी नेहा तिर्की ने कहा कि आदिवासियों की सामाजिक जमीन, धार्मिक जमीन और वन जमीन को लैंड बैंक बनाकर लूटा गया। आदिवासियों की चिंता महज दिखावा है। वह अनुपूरक बजट के समर्थन में बोल रही थीं। शिल्पी नेहा तिर्की ने कहा कि असम और मध्यप्रदेश के लोग झारखंड में आकर नफरत फैला रहे हैं। उन्होंने कहा कि दुर्भाग्य यह है कि भाजपा के लोग झारखंडी मुसलमान को बांग्लादेशी बता रहे हैं। यह शर्मनाक है। वोट की राजनीति के लिए भाजपा के लोग नफरत फैला रहे हैं। उन्होंने कहा कि रांची के कई मौजा में बाहर के लोग बस गये। बाहरी लोगों के बसने के कारण झारखंड से आदिवासी कम हो गये। बाबूलाल मरांडी और रघुवर दास ने आदिवासी जमीन लूट के लिए सीएनजी एसपीटी एक्ट में संशोधन करने का प्रयास किया। इसलिए इन्हें आदिवासी की संख्या घटने के बात करने का नैतिक अधिकार नहीं है। इस बीच भाजपा विधायकों ने सदन से वॉक आउट कर दिया।

पुस्तक वितरण में हुआ घोटाला : नीलकंठ मुंडा

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

रांची : झारखंड विधानसभा के मानसून सत्र के तीसरे दिन मंगलवार को सदन में नीलकंठ सिंह मुंडा ने सवाल उठाया कि बच्चों को अब तक किताबें नहीं मिली हैं। सेशन भी समाप्त हो रहा है। राज्य परियोजना निदेशक आदित्य रंजन ने दो जुलाई को चिट्ठी जारी किया था, जिसमें कहा था कि किताब बीआरसी ब्लॉक में रख दिया गया है। अब टीचर को पुस्तक ले जाने को कहा जा रहा है। अब तक 42 लाख किताबें उपलब्ध नहीं कराई गई हैं। इसमें कहीं न कहीं वित्तीय अनियमितता या घोटाला हुआ है। इसपर शिक्षा मंत्री बैजनाथ राम ने कहा कि पुस्तक वितरण का काम आचार संहिता के कारण बाधित हुआ। एक सप्ताह में शत-प्रतिशत पुस्तक वितरण का काम पूरा हो जाएगा। सीपी सिंह ने पुस्तक वितरण को लेकर कहा कि शिक्षा मंत्री सदन को गुमराह कर रहे हैं। उन्होंने कहा कि चुनाव आयोग का आदेश बताएं। फिर कहा कि जो कार्य योजना चालू रहती है, उस पर चुनाव आयोग कोई रोक नहीं लगाता। नेता प्रतिपक्ष अमर बाउरी ने कहा कि अब किताबों को जिला से स्कूल तक ले जाने के लिए कोई दर का निर्धारण ही नहीं हुआ है। सेशन भी खत्म हो रहा है। सरकार का न शिक्षक पर और न ही शिक्षा पर ध्यान है। सदन में झामुमो विधायक मथुरा महतो ने कहा कि 24 साल बाद वन क्षेत्र पदाधिकारी के लिए वेकेंसी आई है। इसमें अनुसूचित जाति के लिए एक भी सीट नहीं है। दलित छात्र इससे वंचित हो जाएंगे। विधायक केदार हाजरा ने भी सरकारी नौकरियों के विज्ञापन में एससी कैटगरी के लिए सीट नहीं होने का मुद्दा उठाया। सूचना के माध्यम से उन्होंने कहा कि सरकार को इसपर ध्यान देना चाहिए। नीलकंठ सिंह मुंडा ने भी केदार हाजरा के द्वारा उठाये गए मुद्दे पर सहमति जताई, जिसपर स्पीकर रबिन्द्रनाथ महतो ने संसदीय कार्य मंत्री रामेश्वर उरांव से कहा कि इस मुद्दे पर सरकार ध्यान दे।

सम्मान और हमारी पहचान से खिलवाड़ है झारखण्ड के बंटवारे की बात करना : बंधु तिर्की

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

रांची : पूर्व मंत्री और झारखण्ड प्रदेश कांग्रेस कमेटी के कार्यकारी अध्यक्ष बंधु तिर्की ने कहा है कि लोकसभा देश की सबसे बड़ी पंचायत है। वहां झारखण्ड के संथाल परगना के साथ ही बिहार और पश्चिम बंगाल के कुछ जिलों को मिलाकर अलग केन्द्र शासित प्रदेश बनाने की मांग करना झारखण्ड की अस्मिता के साथ ही इसके सम्मान और सभी झारखण्डियों की पहचान से खिलवाड़ है। उन्होंने कहा कि सांसद निशिकांत दुबे के वक्तव्य के बाद अब यह फिर से स्पष्ट हो गया है कि भाजपा और इसके नेताओं सहित इसके सांसद और विधायक की मंशा क्या है। वे झारखण्ड को किन नजरों से और किस दृष्टिकोण से देखते हैं? वरिष्ठ कांग्रेस नेता ने कहा कि निशिकांत दुबे ने जिस गंभीरता के साथ झारखण्ड की अस्मिता, इसकी पहचान और सभी झारखण्डियों के आत्म सम्मान पर हमला किया है। उसके बाद भाजपा के प्रदेश अध्यक्ष बाबूलाल मरांडी और विधानसभा में विधायक दल के नेता अमर बाउरी द्वारा उसे निशिकांत दुबे का व्यक्तिगत बयान बताना पूरी तरीके से समझ से परे है क्योंकि लोकसभा में यदि कोई सांसद अपना वक्तव्य देता है तो वह पूरी समझ के साथ देता है। साथ ही वह कभी भी पार्टी के दिशानिर्देश की अवहेलना नहीं कर सकता। बंधु तिर्की ने कहा कि निशिकांत दूबे की सुलगाई चिंगारी को बुझाने का बाबूलाल मरांडी और अमर बाउरी असफल प्रयास कर रहे हैं जिसमें उन्हें सफलता नहीं मिलेगी। लोकसभा और विधानसभा कोई आम सभा नहीं है जो मर्जी आये बोल दे। उन्होंने कहा कि भाजपा को गंभीरता के साथ यह सोचना चाहिये कि झारखण्ड प्रदेश के गठन के लिए दिशोम गुरु शिबू सोरेन के साथ ही हजारों क्रांतिकारियों और आंदोलनकारियों ने अभियान चलाया। आंदोलन चलाया तभी जाकर अलग झारखण्ड प्रदेश मिला और झारखण्ड की अपनी पहचान बनी। जबकि अपनी अलग संस्कृति, भौगोलिक वातावरण के साथ ही अलग प्रदेश की जरूरत और यहां मौजूद खनिजों, मानव संसाधन और औद्योगिक वातावरण को देखते हुए झारखण्ड की जरूरत बहुत पहले से थी।

देश में दुग्ध एवं मांस उत्पादन में वृद्धि के लिए राज्यवार चारा योजना तैयार की जाये : डॉ टीआर शर्मा

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

रांची : देश में दूध एवं मांस का उत्पादन बढाने हेतु पशुओं को पर्याप्त पोषक आहार उपलब्ध करने के उद्देश्य से विभिन्न चारा फसलों का उत्पादन एवं उत्पादकता बढाने की रणनीतियों पर चर्चा के लिए मंगलवार को बिरसा कृषि विश्वविद्यालय में देश के अग्रणी चारा वैज्ञानिकों कि दोदिवसीय राष्ट्र स्तरीय कार्यशाला प्रारंभ हुई। कार्यशाला में चारा फसलों के विकास, संरक्षण एवं संवर्धन से जुड़े देश के 21 राज्यों के कृषि विश्वविद्यालयों एवं शोध संस्थानों के लगभग 100 वैज्ञानिक भाग ले रहे हैं। कार्यशाला के मुख्य अतिथि भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद् के उप महानिदेशक (फसल विज्ञान) डॉ टीआर शर्मा ने कहा कि सभी राज्यों के लिए अलग-अलग चारा योजना तैयार कर सरकारों को सौपना चाहिए तथा कहां कहां कितना कार्यान्वयन हो रहा है इसका डाटा बेस रखना चाहिए। अबतक देश में चारा फसलों की 122 उन्नत किस्में विकसित की गयी हैं जिनमे से 10-12 किस्मों का प्रोडक्ट प्रोफाइल तैयार किया जाना चाहिए। प्रोफाइल में उपज क्षमता, प्रोटीन एवं अन्य पोषक तत्व, प्रभेद का जलवायु लचीलापन, यंत्रीकृत कटाई की अनुकूलता आदि का विवरण हो कभारतीय चारागाह एवं चारा अनुसंधान संस्थान, झांसी को नये ऊजार्वान वैज्ञानिकों की सहभागिता से प्रभेद विकास में तेजी लानी चाहिए तथा भारतीय बीज अनुसंधान संस्थान, मऊ के साथ मिलकर चारा बीज का मानक तैयार करना चाहिए। अपने अध्यक्षीय संबोधन में बिरसा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ एससी दुबे ने ने कहा कि राष्ट्रीय औसत लगभग 400 ग्राम की तुलना में झारखण्ड में प्रति व्यक्ति दैनिक दुग्ध उपलब्धता मात्र 171 ग्राम है। जिसका मुख्य कारण राज्य में हरा चारा की अल्प उपलब्धता है। देश में हरा चारा आवश्यकता से मात्र 11 प्रतिशत कम उपलब्ध है जबकि झारखण्ड में यह कमी 70 प्रतिशत है कसूखा चारा और दाना की भी काफी कमी है। इन पहलुओं को ध्यान में रखते हुए झारखण्ड के लिए चारा नीति तैयार की जानी चाहिए क कृषि अग्रणी कुछ राज्यों में खेत में ही पराली जलाने के मामले बड़ी संख्या में सामने आते हैं। इसलिए खेत से सूखा चारा के एकत्रीकरण, प्रोसेसिंग एवं परिवहन की लागत का आकलन किया जाना चाहिए ताकि उपचारात्मक कदम उठाये जा सकें। आरम्भ में बीएयू के अनुसंधान निदेशक डॉ पीके सिंह ने स्वागत किया तथा संचालन शशि सिंह ने किया।

संक्षिप्त खबरें

सेना भर्ती रैली के चौथे दिन 1140 युवाओं ने लिया हिस्सा

रांची : सेना भर्ती रैली के चौथे दिन मंगलवार को 1140 युवाओं ने हिस्सा लिया। अग्निवीर जीडी श्रेणी के लिए राज्य के गढ़वा, जामताड़ा, लोहरदगा, पूर्वी सिंहभूम और पाकुड़ जिले के अभ्यर्थियों ने खेलगांव के स्पोर्टस कॉम्प्लेक्स के मैदान में शारीरिक दक्षता परीक्षा में शामिल हुए। इन जिलों के जांबाज युवाओं ने अपने पूरे जोश और जुनून के साथ अग्निवीर जीडी श्रेणी में उपस्थिति दर्ज की। प्रवेश गेट के बाद उम्मीदवारों को मार्शलिंग एरिया में लाने के बाद सेना की ओर से विशेष जानकारी के तहत बताया कि अभ्यर्थी दलालों के बहकावें में ना आये। दलाल कभी भी किसी का सिलेक्शन नहीं करवा सकते। वो सिर्फ आपका मेहनत का पैसा हड़प लेते है। सेना भर्ती प्रक्रिया निष्पक्ष और एकदम पूरी तरह कंप्यूटर आधारित है। इसी दौरान यह भी बताया गया कि बोनस दिलाने वाले प्रणाम पत्र जैसे एनसीसी सर्टिफिकेट, खेलकूद का प्रमाण पत्र या अन्य कोई प्रमाण पत्र सही और प्रमाणित होना चाहिए। जैसा कि ऑनलाइन फॉर्म भरते समय दशार्या गया हो। जो उम्मीदवार किसी कारण से एडमिट कार्ड नहीं निकाल पाए उनको रैली स्थल पर एडमिट कार्ड सेना भर्ती कार्यालय रांची के जरिये प्रदान किये गए। अग्निवीर रैली भर्ती के दौरान खेलगांव स्पोर्ट्स कॉम्प्लेक्स में दौड़ने के लिए मिले ट्रैक की सभी अभ्यर्थियों ने बेस्ट ट्रैक बताकर प्रशंसा की। सभी उम्मीदवार ट्रैक को लेकर उत्साहित दिखे। जिला प्रशासन की तरफ से प्रत्येक प्रकार की रैली के दौरान हर संभव सहायता प्रदान की गई। सम्पूर्ण रैली व्यवस्था, चिकित्सा, एम्बुलेंस, पानी जैसे तमाम सभी सुविधाएं मुहैया करवाई गई है।

मुख्यमंत्री से पूर्व विधायक और रूहानी मर्कज के अध्यक्ष ने की मुलाकात

रांची : मुख्यमंत्री हेमन्त सोरेन से झारखंड विधानसभा स्थित मुख्यमंत्री कक्ष में मंगलवार को रूहानी मर्कज के अध्यक्ष-सह-पूर्व विधायक हसन रिजवी ने मुलाकात की। मुख्यमंत्री को उन्होंने अवगत कराया कि रूहानी मर्कज (आध्यात्मिक केंद्र) जमशेदपुर की ओर से 11 अगस्त को राज्यवासियों की सुख, शांति, समृद्धि एवं खुशहाली के लिए दरगाह अजमेर शरीफ में चादरपोशी और दुआएं-ए-खास का आयोजन किया जाएगा। मुख्यमंत्री ने अजमेर शरीफ भेजी जाने वाली चादर-ए-मुबारक का अनावरण किया। मुख्यमंत्री को उन्होंने अजमेर शरीफ की टोपी तथा साफा पहनकर सम्मानित किया। इस अवसर पर विधायक मंगल कालिंदी, शोहदा-ए-कर्बला के महासचिव अब्बास अंसारी, झारखंड उच्च न्यायालय के अधिवक्ता गुलरेज अख्तर सहित अन्य उपस्थित थे।

रिम्स के छात्रों ने स्थानीय युवकों के साथ की मारपीट, एफआईआर दर्ज

रांची : राजधानी के बरियातू थाना क्षेत्र में सोमवार की देर रात दो स्थानीय युवकों के साथ रिम्स के छात्रों ने जमकर मारपीट की। स्थानीय युवकों का आरोप है कि रिम्स के छात्र उनको खींचकर कैंपस ले गये और उनकी जमकर पिटाई की। इस संबंध में बरियातू निवासी अनमोल और पुरानी रांची निवासी कुणाल ने रिम्स के 40-50 अज्ञात छात्रों के खिलाफ मारपीट का मामला दर्ज करवाया है। बताया जा रहा है कि पीने-खाने के विवाद में यह मारपीट हुई है। घटना की सूचना मिलते ही मौके पर सदर कोतवाली और सिटी डीएसपी पहुंचे थे। इसके बाद मारपीट में घायल दोनों युवकों को हॉस्पिटल में भर्ती करवाया। इस घटना के बाद स्थानीय लोगों में काफी आक्रोश है। मौके पर पुलिस की टीम नजर बनाये हुए है। सदर डीएसपी संजीव बेसरा ने मंगलवार को बताया कि फिलहाल पूरे मामले की जांच-पड़ताल की जा रही है। दोषियों के खिलाफ कानून के तहत कार्रवाई की जाएगी। मामले में एफआईआर दर्ज किया गया है।

बालू तस्करों के खिलाफ बड़ी कार्रवाई, बालू लोड 14 हाइवा जब्त

रांची : रांची के नगड़ी थाना पुलिस ने बालू तस्करों के खिलाफ बड़ी कार्रवाई की है। एसएसपी चंदन कुमार सिन्हा के निर्देश पर गठित टीम ने मेला टिकरा में छापेमारी की। रांची पुलिस की टीम को देख बालू तस्करों में खलबली मच गयी। बालू तस्कर पुलिस को देख इधर-उधर भागने लगे। इस दौरान पुलिस ने 14 बालू लोड हाइवा को जब्त किया है। छापेमारी के दौरान एक भी व्यक्ति नहीं पकड़ा गया। छापेमारी टीम में नगड़ी थाना प्रभारी अभिषेक राय सहित कई पुलिस बल मौजूद थे। थाना प्रभारी ने मंगलवार को बताया कि वरीय अधिकारी के निर्देश पर छापेमारी की गई छापेमारी के दौरान 14 बालू लदा हाईवा जब्त किया गया।

12वां सुंदरकांड पाठ का हुआ आयोजन

रांची : शंकर सुवन केसरी नंदन तेज प्रताप महा जग बंधन विद्या वन गुनी अति चातुर राम काज करीब को आतुर के सुरताल से हरमू रोड का श्री श्याम मंदिर गूंज रहा था। अवसर था 112 वा श्री सुंदरकांड श्री हनुमान चालीसा के संगीतमय पाठ का। श्री श्याम मित्र मंडल के द्वारा हरमू रोड के श्री श्याम मंदिर में प्रत्येक मंगलवार को होने वाला 112 वा कार्यक्रम आज भक्तिमय माहौल में संपन्न हुआ। मण्डल के उपमंत्री अनिल नारनोली ने हनुमान जी महाराज की दिव्य अखंड पावन ज्योति प्रज्वलित करके केसरिया पेड़ा गुड़ चना फल का प्रसाद अर्पित कर परिवार की खुशहाली की प्रार्थना की। मंडल के उपमंत्री अनिल नारनौली ने पूजन अनुष्ठान विधिवत संपन्न करवाया। श्रवण ढानढनिया ने चना प्रसाद की सेवा केसरिया पेड़ा सेवा पुष्पा देवी पोद्दार फल प्रसाद सेवा राजेश जयसवाल एवम गिरिगोला सेवा मुकेश मित्तल ने निवेदित की। अनिल नारनोली ने रामचरितमानस ग्रंथ व पाठ वाचको का चंदन वंदन किया। श्री गणेश वंदना करके हनुमान चालीसा का पाठ किया गया । पाठ वाचक मनीष सारस्वत ओम शर्मा ने अपने सहयोगियों के साथ ढोलक डफली झांझ करताल के सुरताल के साथ श्री सुंदरकांड का पाठ प्रारंभ किया। मंदिर परिसर में उपस्थित सैकड़ो भक्तों ने भक्ति भाव से सामूहिक रूप से पाठ किया। पाठ के मध्य में भजनों का गायन भी किया गया। बजरंगबली की जय जयकारों से हरमू रोड गूंज रहा था। पाठ के समापन के बाद श्री हनुमान चालीसा का संगीतमय संकीर्तन करके महाआरती की गई । सभी भक्तजनों को केसरिया पेडा चना गुड़ फल व नारियल का प्रसाद वितरित किया गया।

मुख्यमंत्री से मिला झारखंड पुलिस एसोसिएशन का प्रतिनिधिमंडल

रांची : झारखंड पुलिस एसोसिएशन और झारखंड पुलिस मेन्स एसोसिएशन का एक प्रतिनिधिमंडल मंगलवार को मुख्यमंत्री हेमन्त सोरेन से मिला। मुलाकात के दौरान राज्य के पुलिस पदाधिकारियों-कर्मियों को वर्दी भत्ता , राशन भत्ता, वाहन भत्ता और अन्य भत्तों को केन्द्रीय सरकार एवं पड़ोसी राज्य बिहार सरकार के तर्ज पर पुनरीक्षित दर से लागू करने के लिए अनुरोध किया गया। इस संबंध में मुख्यमंत्री हेमन्त सोरेन ने सभी भत्तो को पुनरीक्षित दर से शीघ्र लागू करने का आश्वासन दिया गया।

एक नजर

बिरहोर बच्चों के लिए निःशुल्क पठन सामग्री तथा यूनिफार्म का वितरण

बोकारो : मंगलवार को बीएसएल के सीएसआर विभाग के सौजन्य से डी.ए.वी - इस्पात पब्लिक स्कूल,सेक्टर 2-सी की प्राचार्या मौसमी मलिक के द्वारा बिरहोर बच्चों के बीच नि:शुल्क पठन सामग्री तथा यूनिफार्म का वितरण किया गया. इस मौके पर बीएसएल के वरीय प्रबंधक नीरज कुमार त्रिपाठी, उप प्रबंधक अशोक कुमार, सूरज चंद्र तिवारी, बिरहोर छात्रावास के वार्डन बहादुर सिंह सहित बिपिन राय, ए.आर.ओ, डी.ए.वी झारखण्ड जोन, सतेंद्र कुमार , प्रिंसिपल डी.ए.वी, डुमरी इत्यादि उपस्थित थे।

थैलेसीमिया ग्रस्त बच्चों के लिए डोनेशन कैंप का हुआ आयोजन

बोकारो : ओल्ड जैवेरीयनस एसोसिएशन की ओर से थैलेसीमिया से पीड़ित बच्चों के लिए एक ब्लड डोनेशन केम्प का आयोजन किया गया । ये कैंप संत जेवियर्स स्कूल के चैपल हाल में पुर्व छात्रों द्वारा संत एग्नानुस ऑफ लोयोला (यीशु समाज के संस्थापक) के पर्व के अवसर पर और संत जेवियर्स स्कूल के जन्मदिन के उपलक्ष्य में आयोजित किया गया था । इस ब्लड डोनेशन केम्प में एसोसिएशन के सचिव साजन कपूर , कोषाध्यक्ष नीतेश मिश्रा , रविन्द्र मांड, रोहित तलवार, सुनील यादव, शंकर अग्रवाल , चंदन झा, कंचन झा और कई अन्य लोगों ने सवेछिक रक्त दान किया । बोकारो ओल्ड जैवेरीयनस एसोसिएशन के सचिव ने बताया कि उनकी संस्था हर साल थैलेसीमिया पीड़ित बच्चों के लिए ब्लड डोनेशन कैंप के द्वारा रक्त इकट्ठा करती है और उन बच्चों को रक्त मुफ्त में मुहैया करवाती है ।

तम्बाकू के दुष्प्रभाव के प्रति जागरूकता पैदा करना जरूरी : डॉ सुधा सिंह

बोकारो : राष्ट्रीय तम्बाकू नियंत्रण कार्यक्रम बोकारो के अन्तर्गत सिविल सर्जन कार्यालय के सभागार में नोडल पदाधिकारी एन0सी0डी0 डा0 सुधा सिंह व जेएसएलपीएस के जिला कार्यक्रम प्रबंधक श्री प्रकाश रंजन के संयुक्त अध्यक्षता में तम्बाकू के दुष्प्रभाव के प्रति जन जागरूकता अभियान को ग्रामीण स्तर पर सफल बनाने हेतु सभी प्रखण्ड स्तरीय एवं कलस्टर स्तर के जेएसएलपीएस का एक दिवसीय प्रशिक्षण का आयोजन किया गया। सफल बनानें में विभिन्न विभागों की सहभागिता व जवाबदेही है प्रशिक्षण के दौरान जिला परामर्शी मो0 असलम द्वारा सभी प्रतिभागियों को बताया गया कि तम्बाकू के दुष्प्रभाव के प्रति जनजागरूकता को सफल बनानें में विभिन्न विभागों की सहभागिता व जवाबदेही है जैसे शिक्षा विभाग की जवाबदेही है कि व टाफी गाईडलाईन का अनुपालन करेंगे, पंचायतीराज विभाग का की जवाबदेही है कि वह तम्बाकू मुक्त ग्राम बनाने हेतु प्रयास करेंगें, पुलिस विभाग का कार्य है कि कोटपा-2003 की विभिन्न धाराओं का अनुपालन करना। साथ ही स्कूल के 100 यार्ड के अन्दर आने वाले तम्बाकू के दुकानों को हटाने में सहयोग करेंगे। इसी तरह जेएसएलपीएस विभाग के सभी कर्मी से अपेक्षा है कि वह तम्बाकू के दुष्प्रभाव के प्रति आनजनमानस मे जागरूकता लाने हेतु समुदाय स्तर पर जितनी भी बैठक हो उसमें वह तम्बाकू को एक एजेण्डा के रूप में शामिल करें ताकि ग्रामीण स्तर की महिलाये भी इसके दुष्प्रभाव से अवगत हो सकें क्यों झारखण्ड में 17 प्रतिशत महिलायें भी तम्बाकू किसी न किसी रूप में लेती हैं जिनमें कमी लाना बहुत ही आवश्यक है। संचालित तम्बाकू नशा मुक्ति केन्द्र से जोड़े प्रशिक्षण में तम्बाकू जिला कार्यक्रम प्रबंधक जेएसएलपीएस प्रकाश रंजन ने सभी को बताया कि ग्रामीण स्तर पर तम्बाकू के प्रति जागरूकता हेतु समुदाय स्तर पर लक्षित समूह के साथ बैठक कर उन्हें तम्बाकू के दुष्प्रभाव के बारे में बताया जाये और यदि कोई तम्बाकू छोडना चाहता है।

डीपीएस में चार दिवसीय सांस्कृतिक उत्सव 'तरंग' का हुआ शुभारंभ

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

बोकारो : विद्यार्थियों की कलात्मक एवं सांस्कृतिक प्रतिभा निखारने के उद्देश्य से डीपीएस बोकारो की सीनियर इकाई में मंगलवार को चार-दिवसीय सांस्कृतिक उत्सव - तरंग का शुभारंभ हुआ। इसके साथ ही गीत-संगीत, नृत्य और सुरों की महफिल का सिलसिला शुरू हो गया, जिसका उद्घाटन विद्यालय के प्राचार्य डॉ. एएस गंगवार ने वैदिक मंत्रोच्चार के बीच मंगलदीप प्रज्ज्वलित कर किया। कार्यक्रम के पहले दिन अंतर सदन आर्केस्ट्रा प्रतियोगिता आयोजित की गई। इस अवसर पर सप्तक के स्वर - षड्ज, ऋषभ, गंधार, मध्यम, पंचम और धैवत में बंटे सभी छह सदनों की टीमों ने भारतीय शास्त्रीय रागों पर आधारित अपनी मनोरम सामूहिक प्रस्तुतियों से बहुरंगी छटा बिखेरी। आकर्षक मंच-सज्जा के बीच सभी टीमों के सदस्य मंच पर मनोहारी भारतीय परिधानों में सज-संवरकर पहुंचे। पहली प्रस्तुति सतलज हाउस की रही, जिसमें विद्यार्थियों ने राग हंसध्वनि की विविधताओं को बखूबी दर्शाया। इसके बाद क्रमशः रावी सदन की टीम ने राग बिहाग, झेलम ने राग भैरवी, गंगा की टीम ने राग यमन, जमुना के विद्यार्थियों ने राग देश और चेनाब हाउस की टीमों ने राग जोग पर आधारित धुनें सुनाकर समां बांध दिया। गिटार, तबला, ढोलक, बांसुरी, की-बोर्ड (सिंथेसाइजर), वायलिन, क्लैप बॉक्स, मृदंगम आदि वाद्ययंत्रों पर प्रतिभागी छात्र-छात्राओं का सुर-ताल व लय में आपसी सामंजस्य सराहनीय रहा। प्रतियोगिता में बेहतर प्रदर्शन के आधार पर जमुना सदन की टीम ने प्रथम स्थान प्राप्त किया। चेनाब को दूसरा एवं रावी को तीसरा स्थान मिला। विद्यालय के प्राचार्य डॉ. गंगवार ने बच्चों की प्रस्तुतियों की सराहना करते हुए विद्यार्थियों के भीतर छिपी प्रतिभा निखारने में ऐसे आयोजनों को महत्वपूर्ण बताया। उन्होंने कहा कि प्रतियोगिता में हार-जीत से अधिक इसमें प्रतिभागिता मायने रखती है। प्रतियोगिता की निर्णायक मंडली में प्राइमरी इकाई से शिक्षक अंजलि कुमारी, प्रणति दास एवं जय प्रकाश सिन्हा शामिल थे। कार्यक्रम के आरंभ में स्वागत भाषण स्कूल की हेडगर्ल ऋद्धिमा कौशल ने किया। मंच संचालन छात्रा मीनाक्षी तनु, आद्विक एवं दीपांशी घोष तथा अंत में धन्यवाद ज्ञापन उप सांस्कृतिक सचिव रोशनी सिंह ने किया।

डीएवी 6 में स्पोर्टस एथलेटिक्स मीट प्रतियोगिता का हुआ आयोजन

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

बोकारो : मंगलवार डीएवी पब्लिक स्कूल सेक्टर- 6 बोकारो में चल रहे चार दिवसीय डीएवी स्पोर्ट्स 2024 क्लस्टर लेवल के तीसरे दिन एथलेटिक्स मीट 2024 प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। इस प्रतियोगिता के अंतर्गत अंडर -14, अंडर-17 तथा अंडर-19 के बालक एवं बालिका के लिए 100 मीटर , 400 मीटर,800 मीटर दौड़ , फेंकना, कूदना आदि प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया । कार्यक्रम की शुरूआत डीएवी गान से हुई । सभी विद्यालयों से आए टीम लीडर ने टॉर्च मैराथन में भाग लिया। मुख्य अतिथि झारखंड जोन -जी के ए .आर. ओ. विपिन राय द्वारा स्पोर्ट्स मशाल पिछले वर्ष रहे चैंपियन को दिया गया, जिसे विभिन्न विद्यालयों से आए प्रतिभागियों ने मशाल को लेकर पूरे ग्राउंड की दौड़ लगाई। तत्पश्चात मुख्य अतिथि ने एथेलेटिक्स मीट 2024 खेल की घोषणा की। इस अवसर पर मुख्य अतिथि झारखण्ड जोन-जी के सहायक क्षेत्रीय पदाधिकारी विपिन राय ने कहा कि प्रतियोगिता का मुख्य उदेश्य शारीरिक क्षमता का प्रदर्शन करना नही बल्कि विभिन्न कौशलों, टीम वर्क तथा अनुशासन में रहकर मानवीय मूल्यों को विकसित करना है। आज के विशिष्ट अतिथि सत्येंद्र कुमार, प्राचार्य,डीएवी ढोरी ने भी सभी खिलाड़ियों का उत्साह बढ़ाया और जीत की शुभकामनाएं दी। विद्यालय की प्रधानाध्यापिका अनुराधा सिंह ने सभी खिलाड़ियों को संबोधित करते हुए कहा है कि प्रतिभागियों द्वारा विभिन्न प्रकार के खेलों में भाग लेने से उनमें शारीरिक फिटनेस को बढ़ावा तो मिलता है, साथ ही मानसिक तनाव भी कम होता है।

वन विभाग ने चास तथा पेटरवार में की छापेमारी, विभिन्न वन्यजीवों के अंग बरामद

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

बोकारो : वन प्रमण्डल में वाइल्ड लाइफ क्राइम की गुप्त सूचना पर चास तथा पेटरवार क्षेत्र में 5 जगहों पर छापेमारी की. छापेमारी में अवैध रूप से बिक्री हो रही विभिन्न प्रकार के वन्यजीव ट्रॉफी बरामद किया गया। गुप्त सूचना के आधार पर बोकारो वन प्रमण्डल के प्रशिक्षु अधिकारी, संदीप कारभरी शिंदे, भा०व०से० ने अपनी चास टीम को छापेमारी के लिए सूचना दी. चास तथा पेटरवार से करीब 120 हथाजोड़ी (गोह प्राणी का लिंग), हाथी तथा सियार की हड्डियाँ, कस्तुरी, विभिन्न प्राणी की चमड़ी तथा पोर्कुपिन के काँटे जप्त की गई। उक्त छापेमारी में ज्यादातर पूजा भंडार शामिल है, जिनके पास से यह सामग्री पाई गई। जो कि काला जादू के लिए उपयोग में आती है। बोकारो वन प्रमण्डल द्वारा इसकी जाँच कर 6 अभिङ्गयुक्तों पर वन्यजीव संरक्षण अधिनियम, 1972 के तहत जिला न्यायालय, बोकारो में मुकदमा दायर किया गया है, जिसमें 3 से 7 साल तक का सजा का प्रावधान है। हथाजोड़ी जड़ी-बूटी नहीं एक वन्य प्राणी का अंग- रजनीश कुमार (भा०व०से०) वन प्रमण्डल पदाधिकारी, बोकारो ने इस संबंध में आम नागरिकों के लिए संदेश जारी किया, कि गोह प्राणी एक शेड्यूल 1 का प्राणी है। इसका शिकार कर उसके लिंग से हथाजोड़ी बनाया जाता है, जिसे लोग एक पेड़ का जड़ीबूटी मानते है। लेकिन वास्तविकता में वह एक प्राणी का अंग है। उन्होंने आम नागरिकों को इसके बारे में जागरूक करते हुए यह अपील किया, कि ऐसे कालेजादू के बहकावे में ना आए। इस हथाजोड़ी की लेन-देन, खरीद-फरोक्त में भाग ना लें।. उन्होंने सारे पूजा भंडारों को भी यह सूचना दी, कि इसके खरीद-फरोक्त में ना आए। उन्होंने कहा कि अगर आपको इसके बारे में जानकारी मिलती है तो इसकी सूचना तुरन्त बोकारो वन प्रमण्डल को। उक्त हथाजोड़ी से संबंधित मामला बोकारो प्रमण्डल में पहली बार पाया गया है।

बाघमारा का संपूर्ण विकास करना ही मेरा उद्देश्य है : सुरज महतो

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

धनबाद : बाघमारा के हर घर के एक युवा को रोजगार से जोड़ना व क्षेत्र का सम्पूर्ण विकास करना ही मेरी पहली प्राथमिकता है,उक्त बातें जन शक्ति दल के सुप्रीमो सुरज महतो ने काको मोड़ (कतरास) स्थित कार्यालय में जन शक्ति दल के प्रथम स्थापना दिवस समारोह के दौरान कहा ,श्री महतो ने कहा कि बाघमारा में अभी तक के जनप्रतिनिधियों ने सिर्फ लूटने का कार्य किया है,बाघमारा की जनता का आशीर्वाद मिला तो बाघमारा से रंगदारी, गुंडा गर्दी से निजात दिलाने का एलान किया,श्री महतो ने यह भी कहा कि बाघमारा में ट्रकों में भर भर कर बेरोजगारो को बाहर जाने को विवश है,बाघमारा में सिर्फ लूट मचा है,अपराध इस कदर हावी है कि कब किसकी कहा पर हत्या,अस्मत लूटने की घटना घट जाय कोई नही जानता है,इस लिये बाघमारा की जनता ने इस बार जन शक्ति दल से साथ विकसित बाघमारा का निर्माण में अपना योगदान देने के लिये संकल्प ले लिया है , यह आज के कार्यक्रम से अंदाजा लगाया जा सकता है। सेवा का मौका मिला तो बाघमारा का दिशा जरूर बदलने का कार्य करेंगे। इसबार जन शक्ति दल को मौका दे,ये पार्टी नही समाज के उत्थान के दिशा में कार्य करेंगे। कार्यक्रम में अन्य वक्ताओं ने कहा कि झारखंड बनने के बाद 2 बार जलेश्वर महतो 3 बार ढुलू महतो को जीताकर लोगो ने देख लिया, बाघमारा में कुछ विकास नही हुआ,इस बार बाघमारा की जनता सुरज महतो को मौका देना चाहती है। मौके पर जन शक्ति दल के सुप्रीमो सुरज महतो , देव नारायण सिंह, पूर्व मूखिया प्रतिनिधि महादेव दास, समाजसेवी राम नारायण श्रीवास्तव, सेतु पांडेय, सरजू राम, संजय अग्रवाल, मो शाहबुद्दीन, प्रभात मिश्रा, रणधीर महतो,सोनू सिंह,बलराम महतो, अदित्या हजाम, सुरेश महतो, साजन महतो,कुणाल महतो, पप्पू कुमार, राम बाबू,राजबीर सिंह,पंकज महतो, सोनू शर्मा,पूजा देवी,किरण देवी सहित अन्य लोग उपस्थित थे।

सुशील निषाद ने 36 दिन में पूरी की बागेश्वर धाम की यात्रा

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

तेतुलमारी : चंदौर पहाड़ी तेतुलमारी (धनबाद) निवासी युवा सुशील निषाद ने 36 दिन में पैदल यात्रा करके बागेश्वर धाम(बालाजी धाम) पहुच कर एक मिशाल कायम किया है, सुशील निषाद ने तेतुलमारी के सुभाष चौक पर बताया कि वे 18 जून 2024 को पैदल यात्रा शुरू की थी,सुशील आज तेतुलमारी अपने जन्मस्थल पहुंचे जहाँ लोगो ने जोरदार स्वागत किया। इस दौरान सुशील ने बताया कि सनातन धर्म के प्रति लोगो मे जागरूकता उत्पन्न करना ही मेरा मुख्य उद्देश्य है ,मैंने 36 दीन की पैदल कवर यात्रा पूरा करने में सफलता पाई है,जिसमे सभी का सहयोग के कारण मेरा हौसला कम नही होने दिया।साथी गण पल पल का रिपोर्ट रखता था।मन में सच्ची भक्ति रहे कोई भी यात्रा आसानी से पूरी की जा सकती है। मौके पर मुखिया अशोक ठाकुर,जय कुमार, आर सिंह, अजय साहनी , चंचल निषाद, राजू मल्लाह, जलेशर तुरी,संजय निषाद, दिलीप निषाद, मनोज निषाद ,उमेश रवानी, बबलू निषाद राहुल बजरंगी, विकास कुमार राम कुमार सहित अन्य सैकड़ो लोगो ने उत्साह के साथ जोरदार स्वागत किया ।

जदयू के हल्ला बोल, पोल खोल के दौरान किया गया प्रदर्शन

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

धनबाद : जदयू पार्टी एवं यूथ फोर्स संगठन द्वारा आयोजित पूर्व घोषित कार्यक्रम के तहत भ्रष्टाचार और सरकारी योजनाओं में हो रही लुट - खसोट के खिलाफ हल्ला बोल, पोल खोल कार्यक्रम कर प्रखंड कार्यालय में प्रदर्शन किया गया। जिसमें मुख्य अतिथि के रूप में जदयू प्रदेश महासचिव सह यूथ फोर्स के प्रधान संयोजक दीप नारायण सिंह और जदयू धनबाद जिलाध्यक्ष पिंटू कुमार सिंह उपस्थित हुए। इस दौरान हजारों की संख्या में जदयू एवं यूथ फोर्स के नेता, कार्यकर्ता और समर्थक कार्यक्रम में शामिल होकर भ्रष्टाचार के विरुद्ध अपना रोष प्रदर्शन किया। कार्यक्रम से पूर्व कार्यकर्ताओ ने कोल्हर मोड़ से जुलूस के शक्ल में टुंडी प्रखंड कार्यालय के लिए निकलें और भ्रष्टाचार और गरीबों के लिए चलाई जा रही सरकारी योजनाओं में हो रही लुट - खसोट के विरुद्ध नारा लगाते हुए प्रखंड कार्यालय पहुंचकर प्रदर्शन किया। इस दौरान उपस्थित जनसमूह को संबोधित करते हुए दीप नारायण सिंह ने कहा कि जदयू पार्टी द्वारा राज्यव्यापी कार्यक्रम के तहत आज टुंडी प्रखंड कार्यालय में हल्ला-बोल,पोल-खोल कार्यक्रम हो रहा है। टुंडी प्रखंड धनबाद जिला का पिछड़ा प्रखंड होने के बावजूद गांव - गरीब, मजदूर - किसान, छात्र - नौजवान, बहनों - भाईयों को सरकारी योजनाओं का लाभ नहीं मिल पा रहा है । टुंडी प्रखंड और अंचल कार्यालय में लुट मचा हुआ है । गरीबों का कोई काम नहीं हो रहा है, लोग परेशान हैं। अबुआ आवास, दाखिल - खारिज, पेंशन,आय, आवासीय, जाति प्रमाण पत्र, आदि गरीबों के लिए चलाई जा रही योजनाएं जमीन पर नहीं उतर रही है। जनता परेशान है और स्थानीय विधायक मौन है। जदयू पार्टी भ्रष्टाचार और परिवारवाद विरोधी पार्टी है। जनता को अधिकार मिले, इसके लिए जदयू पार्टी और यूथ फोर्स संगठन संघर्ष कर रही है। श्री सिंह ने चेतावनी देते हुए कहा कि भ्रष्ट अधिकारी गरीबों का अधिकार छिनना बंद करें। अधिकारी और कर्मचारी ईमानदारी से गांव - गरीब, शोषित - पीड़ीत, छात्र - नौजवान, मजदूर - किसान भाइयों का काम समय पर नियमानुसार करें,अन्यथा कार्रवाई के लिए तैयार रहें। अगर ऐसा नही हुआ तो गरीबों के अधिकार के लिए जदयू और यूथ फोर्स के कार्यकर्ता भ्रष्टाचारीयों के उपर टूट पड़ेंगे। जदयू जिलाध्यक्ष पिंटू कुमार सिंह ने कहा कि अधिकारी और कर्मचारी अपनी कार्यशैली में सुधार करें। गरीबों का काम ईमानदारी से करें। अन्यथा जदयू पार्टी के कार्यकर्ता गरीबों के अधिकार छिनने वाले भ्रष्ट अधिकारी को बर्दाश्त नहीं करेगी। इस दौरान प्रतिनिधि मंडल ने 38 सूत्री मांगपत्र सौंपते हुए मांगों पर तत्काल अमल करने की बात कही। कार्यक्रम की अध्यक्षता जदयू युवा प्रकोष्ठ टुंडी प्रखंड गोतम कुमार पाण्डेय और संचालन सुरज कुमार सिंह ने किया। कार्यक्रम में मुख्य रूप से जदयू नेता सह पूर्व जिला परिषद सदस्य सहदेव प्रसाद सिंह, उमेश महतो, शनिचर मुर्मू ,राजेश चौधरी, विजय सिंह ,राहुल राय, उत्तम दत्ता, सहदेव सिंह ,प्रदीप पांडा ,गणेश हंसदा, नारायण कुम्हार, जितेंद्र महतो आदि हजारों कार्यकर्ता उपस्थित रहे।

संक्षिप्त खबरें

डीआरएम को अमरदीप महतो ने सौंपा ज्ञापन

धनबाद : रेल मंडल धनबाद डीआरएम को ज्ञापन देते हुए अमरदीप महतो पूर्व निर्धारित कार्यक्रम के अनुसार आज आजसू पार्टी के केंद्रीय सचिव अमरदीप महतो जिला उपाध्यक्ष सतीश महतो, संगठन सचिव अरुण महतो एवं महिला मोर्चा के सदस्य ने संयुक्त रूप से रेल मंडल धनबाद डीआरएम सर को निचितपुर स्टेशन के संबंध ज्ञापन दिए एवं निचितपुर स्टेशन के संबंधी वार्ता हुई हमारा ज्ञापन को रेल बोर्ड भेज दिया गया। केंद्रीय सचिव अमरदीप महतो ने कहा कि निचितपुर स्टेशन में लाखों यात्री सफर करते हैं और यह कतरासवासी का पुराने मांग है लेकिन अभी तक विशेष रूप से डेवलपमेंट नहीं हुआ है प्लेटफार्म ऊंचा नहीं हुआ है जिसके चलते यात्रियों को उतारने चड़ने में कठिनाई होती है ओवरब्रिज नहीं बना है कंप्यूटर टिकट काउंटर नहीं बना है और उनके लेकर हम लोग ज्ञापन दिए हम अपना मांग को रखें डीआरएम सर ने आश्वासन दिया गया कि जल्द से जल्दी मांगों को पूरा किया जाएगा और इससे पहले हम लोग माननीय सांसद चंद्रप्रकाश चौधरी जी को भी मांग पत्र दिए हैं बहुत जल्द इसमें कार्रवाई होंगे और हमारे मांगे पूरी नहीं होता है तो आने वाले समय में निचितपुर स्टेशन के समक्ष धरना प्रदर्शन करेंगे और शांतिपूर्ण आंदोलन करेंगे , उपस्थित अरुण महतो ,सागर महतो, रेणु देवी ,सोनू कुंभकार सुनीता देवी ,चंपा देवी सहित अन्य लोग मौजूद थे।

निषाद समाज में दक्षता लानी होगी : रामेश्वर प्रसाद

कतरास (धनबाद): संकल्प एजुकेशन के द्वारा आयोजित महर्षि वेदव्यास जयंती पखवाड़ा के नौवे दिन बालि डिह ,बोकारो में मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित समाजसेवी रामेश्वर प्रसाद ने महर्षि वेदव्यास जी के चित्र पर माल्यार्पण कर कार्यक्रम का शुभारंभ किया ।उन्होंने कहा कि निषाद समाज प्रारंभ में बहुत उन्नत था समय अंतराल में उनकी दक्षता में गिरावट आई अब हमें इसे निखारने की आवश्यकता है। मौके पर संकल्प एजुकेशन के निदेशक सहदेव महतो रविंद्र कुमार निषाद संतोष केवट लाल देव केवट, पवन केवट आदि उपस्थित थे ।कार्यक्रम को सफल बनाने में समाज सेवी पप्पू निषाद ,अनिल निषाद, बैजनाथ केवट ,नागेश्वर केवट आदि का सराहनीय योगदान रहा।

भाजपा सांसद के बयान से भड़के झामुमो कार्यकर्ताओं ने उपायुक्त कार्यालय के समक्ष किया प्रदर्शन

बोकारो : झारखंड मुक्ति मोर्चा बोकारो जिला समिति की ओर से जिला अध्यक्ष हीरालाल मांझी, जिला सचिव जय नारायण महतो नगर अध्यक्ष मंटु यादव के नेतृत्व मे प्रदर्शन उपायुक्त कार्यालय बोकारो में किया गया एवं भाजपा के सांसद द्वारा बिहार बंगाल एवं झारखंड राज्य के कुछ जिले को मिलाकर केंद्र शासित प्रदेश बनाने का बयान बाजी का झारखंड विरोधी बयान के खिलाफ महामहिम राष्ट्रपति महोदय को उपायुक्त बोकारो के माध्यम से स्मार्पत्र दिया गया तथा झारखंड मुक्ति मोर्चा द्वारा मांग किया गया कि झारखंड के संथाल परगना क्षेत्र में बांग्लादेशी घुसपैठ के नाम पर भाजपा राजनीतिक हेमंत सरकार को बदनाम करने की साजिश कर रहे हैं अगर बांग्लादेशी घुसपैठ कर रहा है तो केंद्र सरकार जिम्मेवार है क्योंकि केंद्र में भाजपा का सरकार है इसलिए जाहिर है कि यह सोची समझी भाजपा का चाल है और हेमंत सरकार जो आदिवासी मूलवासी की सरकार है जो आने को लाभकारी योजनाएं धरातल पर उतार रही हे। जैस गरीबों के लिए नया राशन कार्ड ,अबुआ आवास, झामुमो सम्मान योजना, मुख्यमंत्री रोजगार सृजन योजना मुख्यमंत्री पशुधन योजना , 50 वर्ष के ऊपर सभी महिलाओं को पेंशन योजना,मॉडल बालिका विद्यालय योजना जैसे अनेकों योजनाएं चल रही है। कार्यक्रम में मुख्य रूप से जिला अध्यक्ष हीरालाल मांझी एम जिला सचिव जय नारायण महतो नगर अध्यक्ष मंटू यादव, केंद्रीय समिति सदस्य मो हसन, अशोक मुर्मू,मोहम्मद फैयाज आलम श्रीमटुक लाल किस्कू, सौरव भट्ट मुक्तेश्वर महतो , आलोक सिंह, कन्हैया सिंह, प्रमोद तापड़िया, मोहम्मद अख्तर, राकेश सिन्हा, रामदयालु सिंह, दीपू सिंह, मिथुन मंडल मोहम्मद मस्तान, अजय हेंब्रम,मोआयुब ,गुप्ता, मोहम्मद मकसूद राजू सिंह सोहन मुर्मूत सदानंद गोप सुनील रजवार संजय साह सुनील रजवार सदान माजी इत्यादि उपस्थित रहे ।

पिट्स मॉडर्न स्कूल में राष्ट्रीय अभिभावक दिवस धूमधाम से मनाया गया

बोकारो : पिट्स मॉडर्न स्कूल गोमिया में प्रार्थना सभा में राष्ट्रीय अभिभावक दिवस पर सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम का उद्देश्य माता-पिता द्वारा अपने निभाई जाने वाली महत्वपूर्ण भूमिका का सामना करना और स्कूल और परिवार के बीच बंधन को मजबूत करना है । इस अवसर पर कक्षा पंचम एवं षष्ट के छात्र-छात्राओं के द्वारा राष्ट्रीय अभिभावक दिवस पर लघु नाटिका प्रस्तुति की गई । साथ ही, छात्र-छात्राओं के द्वारा नृत्य प्रस्तुत की गई और पंचम 'अ' के छात्र अभिषेक हांसदा द्वारा अंग्रेजी में भाषण दिया गया । राष्ट्रीय अभिभावक दिवस पर विद्यालय के प्राचार्य मनोज कुमार उपाध्याय ने कहा कि मातृ- पितृ देवो भव' और बच्चे को शुभकामनाएं भी दिए एवं नव नियुक्त प्राचार्य बृजमोहन लाल दास ने कहा कि राष्ट्रीय अभिभावक दिवस परिवारों को एक सूत्र में बांधने में तथा संबंधों को और गहरा करने में मदद करता है। आईपीएल ओरिका गोमिया के महाप्रबंधक अभिषेक विश्वास एवं विद्यालय विद्यालय प्रबंधन समिति के उपाध्यक्ष अरिंदम दासगुप्ता ने हर्ष व्यक्त करते हुए सभी छात्र-छात्राओं को शुभकामनाएं दियें। शिक्षिका शिल्पी श्रीवास्तव,सुजाता दास एवं अन्य शिक्षिकाएं के मार्गदर्शन में कार्यक्रम संचालित की गई। मौके पर विद्यालय के शिक्षकगण एवं विद्यार्थी उपस्थित रहे।

विभिन्न प्रखंडों में ई जन शिकायत का होगा आयोजन

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

गुमला : गुमला उपायुक्त कर्ण सत्यार्थी की अध्यक्षता में प्रत्येक मंगलवार को जन शिकायत निवारण दिवस का आयोजन किया जाता है। जन शिकायत निवारण दिवस में दूर दराज से आए रहे लोगों को देख उपायुक्त के दिशा निर्देश पर कुछ माह पूर्व ई -जन शिकायत का भी आयोजन किया जा रहा था एवं उसके टेस्ट करने के पश्चात अब नियमित रूप से जिले के ई जन शिकायत का भी आयोजन किया जाएगा। जिसमें जिले के दूर दराज में रहने वाले नागरिक अपने नजदीकी ब्लॉक ऑफिस में जाकर ऑनलाइन मध्यम से अपनी शिकायतों को उपायुक्त के समक्ष रख सकते हैं। आज इसी क्रम में उपायुक्त के द्वारा उनके कार्यालय में आम नागरिकों से मिलने से पूर्व उन्होंने ई जन शिकायत का आयोजन किया जिसमें जारी एवं चैनपुर प्रखंड के लगभग 10 आवेदकों ने ऑनलाइन वीडियो कॉल के मध्यम से उपायुक्त से मुलाकात की एवं उनकी शिकायतों को उपायुक्त के समक्ष रखा। जिसमें मुख्य समस्या राशन एवं सड़क की थी।

प्रत्येक सप्ताह मंगलवार को ई जन शिकायत का भी होगा आयोजन, आवेदक पूर्वाह्न 10:30 बजे अपने नजदीकी ब्लॉक ऑफिस में जाकर जुड़ सकते हैं उपायुक्त से ऑनलाइ माध्यम से उपायुक्त के निर्देश के आलोक में प्रत्येक सप्ताह मंगलवार को पूर्वाह्न 10:30 बजे से ई जन शिकायत का आयोजन किया जाएगा। ग्रामीण अपने नजदीकी प्रखंड कार्यालय में जाकर वहां बी.डी.ओ. के सहयोग से ऑनलाइन माध्यम से उपायुक्त से जुड़ कर अपनी समस्या को आसानी से बता सकते हैं।

6 अगस्त 2024 को सिसई, बिशुनपुर, घाघरा स्थित प्रखंड कार्यालय से ई जन शिकायत का आयोजन होगा।

इसी प्रकार 13 अगस्त को भरनो, कामडारा, बसिया से ई जन शिकायत का आयोजन होगा।

20 अगस्त को रायडीह, डुमरी, चैनपुर में ई जन शिकायत का आयोजन होगा । तथा 27 अगस्त को गुमला, पालकोट एवं जारी से ई जन शिकायत का आयोजन होगा। नागरिकों से अपील है कि वे दिए गए तिथि अनुसार अपने नजदीकी प्रखंड कार्यालय में जाएं एवं ई जन शिकायत के माध्यम से उपायुक्त से ऑनलाइन जुड़ कर अपनी समस्याओं को रखें।

आज जन शिकायत निवारण दिवस में लगभग 50 से अधिक आवेदकों ने की उपायुक्त से मुलाकात

जन शिकायत निवारण दिवस के तहत आज जिले के दूर दराज से लगभग 50 से अधिक आवेदकों ने उपायुक्त से मुलाकात की। गुमला निवासी फूल कुमारी का ऑन द स्पॉट किया गया कस्तूरबा गांधी विद्यालय में एडमिशन

आज जन शिकायत निवारण दिवस में आई बसुआ अम्बाटोली निवासी फूल कुमारी ने अपने आवेदन के माध्यम से कहा कि उनका कस्तूरबा गांधी विद्यालय में चयन हो गया था परंतु कुछ कागजी करवाई के कारण उनका एडमिशन नहीं हो पा रहा है एवं उन्होंने उपायुक्त से सहयोग की मांग की। जिसे देखते हुए उपायुक्त ने तुरंत जिला शिक्षा पदाधिकारी को कॉल करते हुए फूल कुमारी की सहायता करने के निर्देश दिया एवं जिला शिक्षा पदाधिकारी सह शिक्षा अधीक्षक के सहयोग से फूल कुमारी का आज ही कस्तूरबा गांधी बालिका विद्यालय बिशुनपुर में नामांकन हो गया। जिसके लिए फूल कुमारी ने उपायुक्त के प्रति आभार प्रकट किया।

आवेदकों की समस्याओं के समाधान को लेकर उपायुक्त ने संबंधित अधिकारियों को दिए आवश्यक निर्देश

गुमला घटगांव की निवासी सावित्री देवी ने अपने आवेदन में कहा कि उनके बड़े पुत्र का अनुकंपा के आधार पर चैनपुर प्रखंड में नियुक्ति हुई थी, परंतु कुछ दिनों से बड़े पुत्र के द्वारा घर के खर्च देने से इंकार किया जा रहा है एवं पैसा मांगने पर उन्पर हाथ उठाना एवं गाली गलौज किया जा रहा है। सावित्री देवी ने उपायुक्त से अपने पुत्र के सैलरी से कमसे कम आधा हिस्सा घर के खर्च के लिए देने हेतु सहयोग की मांग की। उपायुक्त ने कहा कि यदि ऐसी स्थिति है तो विधिवत कार्रवाई अवश्य होगी, उन्होंने स्थापना शाखा को पत्र अग्रसित करते हुए आवश्यक कारवाई हेतु निर्देश दिया।

अपर समाहर्ता ने नए ब्लॉक भवन निर्माण को लेकर किया निरीक्षण

चैनपुर : अपर समाहर्ता गुमला सचिंदर बड़ाइक मंगलवार को चैनपुर प्रखंड सह अंचल कार्यालय का निरीक्षण के लिए पहुंचे। इस दौरान अपर समाहर्ता सचिंदर बड़ाईक ने प्रखंड सह अंचल कार्यालय के नए भवन निर्माण को लेकर भूमि निरीक्षण किया एवं प्रखंड विकास पदाधिकारी एवं अंचल अधिकारी को जमीन उपलब्ध कराने का निर्देश दिया। उन्होंने कहा कि सभी प्रखंडों में नया कार्यालय भवन निर्माण हो रहा है यहां भी नया कार्यालय भवन बनना है जिसके लिए ऐसी जगह चिन्हित की जाए जिससे आम जनता को सुविधा मिल सके और गरिमामय कार्यालय का निर्माण हो। वहीं इस दौरान उन्होंने खाद्यान्न गोदाम के साथ-साथ दस्तावेजों का भी निरीक्षण करते हुए कई निर्देश दिया साथ ही अंचल कार्यालय में भी दस्तावेजों का निरीक्षण करते हुए कई निर्देश दिया मौके पर प्रखंड विकास पदाधिकारी यादव बैठा उपस्थित रहे।

कार्यालय उपायुक्त –सह– जिला दण्डाधिकारी, गुमला
(कैम्प–जवाहर नवोदय विद्यालय, गुमला)

जवाहर नवोदय विद्यालय चयन परीक्षा (कक्षा–06)–2025 से सम्बन्धित प्रेस विज्ञप्ति

दिनांक: .....

जवाहर नवोदय विद्यालय, गुमला की कक्षा–6 (सत्र 2025–26) में नामांकन हेतु जवाहर नवोदय विद्यालय चयन परीक्षा, 2025 का आयोजन जिले के विभिन्न परीक्षा केन्द्रों पर दिनांक 18.01.2025 (शनिवार) को किया जाएगा। गुमला जिले के किसी भी सरकारी/मान्यता प्राप्त प्राथमिक विद्यालय की कक्षा–5 (सत्र 2024–25) में अध्ययनरत विद्यार्थी चयन परीक्षा मे सम्मिलित होने के लिए ऑनलाइन आवेदन कर सकते हैं।

इसके लिए अभ्यर्थी का जन्म दिनांक 01.05.2013 से 30.07.2015 (दोनों तिथि समिलित है) के बीच का होना चाहिए तथा उसे तीसरी एवं चौथी कक्षाओं को किसी सरकारी/मान्यताप्राप्त विद्यालय अथवा सर्वशिक्षा अभियान/एनआईओएस आदि द्वारा संचालित संस्था से उत्तीर्ण किया हुआ होना चाहिए।

प्रवेश परीक्षा की विवरणिका एवं आवेदन पत्र समर्पित करने के लिए नवोदय विद्यालय समिति की वेबसाइट www.navodaya.gov.in एवं जवाहर नवोदय विद्यालय, गुमला (झारखण्ड) की वेबसाइट https://navodaya.gov.in/nvs/nvs-school/GUMLA/en/home/ पर लिंक उपलब्ध हैं।

आवेदन पत्र ऑनलाइन भरने की अंतिम तिथि दिनांक 16.09.2024 निर्धारित है।

अन्य सम्बन्धित जानकारी जवाहर नवोदय विद्यालय, गुमला द्वारा स्थापित हेल्पडेस्क के दूरभाष संख्या 9472761961, 9451048668, 8011186601 से प्राप्त की जा सकती है।

(कर्ण सत्यार्थी)भा०प्र०से०
उपायुक्त –सह–
जिला दण्डाधिकारी,गुमला

PR 331198 (District)24-25*D

कार्यपालक अभियंता का कार्यालय,लघु सिंचाई प्रमंडल,गुमला

ई० निविदा आमंत्रण सूचना

ई० निविदा संख्या–WRD/MID/GUMLA/ F_3-09/2024-25(2nd Call) दिनांक – 30.07.2024

1. ई– निविदा आमंत्रित करने वाले पदाधिकारी के कार्यालय का नाम एवं पता– कार्यपालक अभियंता, लघु सिंचाई प्रमण्डल, गुमला ।
2. ई निविदा आमंत्रित करने वाले पदाधिकारी का मोबाईल नं0 :– 0651–2214784 मो0 8986890345
3. वेबसाईट में ई–निविदा प्रकाशन की तिथि एवं समय :– 06.08.2024 (अपराह्न 02:00 बजे से)
4. वेबसाईट में ई–निविदा प्राप्ति की अंतिम तिथि एवं समय :– 14.08.2024 (अपराह्न 05:00 बजे तक)
5. ई–निविदा खोलने की तिथि एवं समय :– 16.08.2024 (अपराह्न 02:00 बजे)

क्र0	योजना का नाम	प्रखण्ड	प्राक्कलित राशि (रूपये में)	अग्रधन की राशि (रूपये में)	परिमाण विपत्र का मूल्य (रूपये में)	कार्य समाप्ति की अवधी
1	2	3	4	5	6	7
01.	जिरहुल नाला 2 पर एकल चेकडैम निर्माण ।	भरनो	64,41,600.00	1,28,900.00	10,000.00	11 माह

(1) केवल ई० निविदा ही स्वीकार की जायेगी।
(2) निविदा शुल्क एवं अग्रधन की राशि केवल **Online Mode** द्वारा ही स्वीकार्य होगी।
(3) निविदा शुल्क एवं अग्रधन की राशि का ई–भुगतान जिस खाता से किया जायेगा, उसी खाते में अग्रधन की राशि वापस होगी। अगर खाता को बंद कर दिया जाता है तो सारी जवाबदेही संबंधित निविदादाता की होगी ।
(4) प्राक्कलित राशि घट–बढ़ सकती है। अग्रधन की राशि परिमाण विपत्र की राशि के अनुसार होगी ।
(5) राज्य सरकार के द्वारा निर्गत सभी अद्यतन आदेश/परिपत्र लागु होगें ।
(6) विस्तृत जानकारी के लिए वेबसाईट– http://jharkhandtenders.gov.in में देखा जा सकता है।

कार्यपालक अभियन्ता,
लघु सिंचाई प्रमंडल,गुमला

PR 331261 (Minor Irrigation)24-25*D

ई० प्रोक्योरमेन्ट सेल
कार्यपालक अभियंता का कार्यालय
भवन निर्माण विभाग, भवन प्रमण्डल, लातेहार

ई– प्रोक्योरमेन्ट नोटिस

ई–टेन्डर रेफरेन्स नं0–09/2024-25/EE/BCD/LATEHAR दिनांक– 29.07.2024

क्र0 सं0	कार्य का नाम	प्राक्कलित राशि (रू0)	कार्य पूर्ण करने की अवधि
1	लातेहार जिलान्तर्गत प्रखण्ड गारू के पंचायत धांगरटोला में उत्क्रमित +2 उच्च विद्यालय, गारू में कम्प्यूटर लैब कक्ष/लाइब्रेरी ऑडिटोरीयम का निर्माण।	99,49,000.00	09 (Nine) Months
2	Proposed Setting up of Integrated Public Health Laboratory at Sadar Hospital Latehar	86,72,700.00	09 (Nine) Months
3	Proposed Construction of Health Sub Centre at Khamikhas, Dist-Latehar	55,50,000.00	09(Nine) Months
4	Proposed Construction of Health Sub Centre at Goniya , Dist-Latehar	55,50,000.00	09 (Nine) Months
5	Proposed Construction of Health Sub Centre at Mangra , Dist-Latehar	55,50,000.00	09 (Nine) Months
6	Proposed Construction of Health Sub Centre at Kend , Dist-Latehar	55,50,000.00	09 (Nine) Months
7	लातेहार जिलान्तर्गत प्रखण्ड लातेहार में पंडित दीनदयाल उपाध्याय नगर भवन में विद्युत उपकरण, साउण्ड बॉक्स एवं फर्निचर का क्रय एवं अधिष्ठापन।	69,97,800.00	06 (Six) Months
8	लातेहार जिलान्तर्गत प्रखण्ड लातेहार में पंडित दीनदयाल उपाध्याय नगर भवन का जिर्णोद्धार।	64,01,300.00	06 (Six) Months

1. वेबसाईट पर निविदा प्रकाशन की तिथि :– 05/08/2024 को 11:00 बजे
2. बिड प्राप्ति के लिए अन्तिम तिथि/समय :– 20/08/2024 को 11:00 बजे
3. निविदा प्रकाशित करने वाले कार्यालय का नाम एवं पत्ता :– कार्यपालक अभियंता का कार्यालय, भवन निर्माण विभाग, भवन प्रमण्डल, लातेहार।
4. निविदा खोलने की तिथि/समय एवं स्थान :– 21/08/2024 को 11:30 बजे नोडल पदाधिकारी, ई0 प्रोक्योरमेन्ट सेल,अधीक्षण अभियंता का कार्यालय, भवन निर्माण विभाग, भवन अंचल सं0–02, राँची।
5. प्रोक्योरमेन्ट पदाधिकारी का सम्पर्क संख्या :– 9431501121
6. ई–प्रोक्योरमेन्ट सेल का हेल्पलाईन संख्या :– 8434414939
7. परिमाण विपत्र की राशि घट–बढ़ सकती है तद्नुसार अग्रधन की राशि देय होगी।
8. सूचना प्रौधोगिकी एवं ई–गवर्नेंस विभाग, झारखण्ड सरकार के आदेश ज्ञापांक 120 दिनांक 03.10.2023 के द्वारा निर्गत SOP (मानक संचालन प्रक्रिया) एवं भवन निर्माण विभाग, झारखण्ड सरकार के पत्रांक 2229 दिनांक 06.10.2023 के आलोक में निविदा शुल्क एवं अग्रधन की राशि केवल Online Mode द्वारा स्वीकार्य होगी।
9. निविदा शुल्क एवं अग्रधन की राशि का ई–भुगतान जिस खाता से किया जायेगा, SOP के तहत् अग्रधन की राशि उसी खाते में वापस होगी। अगर खाता को बंद कर दिया जाता है तो उसकी सम्पूर्ण जवाबदेही निविदादाता की होगी।
- अन्य किसी भी प्रकार के बदलाव की सूचना http://jharkhandtenders.gov.in पर देखा जा सकता है।

Note :- UCAN Registration in mandatory for the Bidders.

कार्यपालक अभियंता का कार्यालय
भवन निर्माण विभाग, भवन प्रमण्डल, लातेहार

PR 331221 Building(24-25).D

मत्स्यजीवी संघर्ष मोर्चा ने किया सोलर प्लांट योजना के खिलाफ प्रदर्शन

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

अनगड़ा/गेतलसुद : जलाशय मत्स्यजीवी सघर्स मोर्चा अनगडा ओरमांझी के तत्वाधान में प्रखंड मुख्यालय में एक दिवसीय धरना प्रदर्शन किया गया`धरना प्रदर्शन में अंगड़ा प्रखंड के विभिन्न गांवों से ओर ओरमांझी प्रखंड के गांवों से भी धरना प्रदर्शन में शामिल हुए। ओर सभा को सम्बोधित करते हुए डॉ रिझु नायक ने कहा कि धरना प्रदर्शन का मुख्य कारण की गेतलसुद जलाशय में फ्लोटिंग सोलर प्लांट सरकार द्वारा प्रस्तावित है बहुत सारे लोग विस्थापित है उनका जीने का एक मात्र साधन मछली मारकर बेचकर जीविका चलाना शे में ग्रामीणों का कहना है कि प्लांट लगने से अंगड़ा ओरमांझी के मछुआ परिवार बेरोजगार हो जाएंगे जिससे समस्त मत्स्यजीवीयो का जीवन यापन नहीं हो पाएगा यह जलाशय विस्थपित ओर मछुआ परिवारों का एक मात्र आजिविकापर्जन का साधन है हमलोग इस डैम में मछली मारकर बेचकर जीविका चलाते हैं हमारी रोजी रोजगार छीन जाएगी हमलोग मछुआ बेगारी एवम भूखमरी के कगार में आ जाएंगे किसी भी हाल में हमलोगो प्लांट नहीं लगने देंगे भोला महतो ने कहा कि अगर सोलर प्लॉट लगता है तो इस डैम से हजारों घरों के लोग मछली मारकर बेचकर आजीविका चलाते है से में हम लोगो का घर परिवार कैसे चलेगा`मौके पर मुनेशर नायक चामु नायक उप सचिव सावन शिंह बाबू राम महतो रोगन मुंडा प्रवक्ता सुजीत नायक उपकोषाधयक्ष विजय नायक संगठन सचिव छबिया नायक रामू नायक मीडिया प्रभारी शिव प्रशाद नायक सूरज नायक भारी संख्या में ग्रामीण शामिल थे।

जिला कांग्रेस के अध्यक्ष ने ग्रामीण विकास मंत्री से पुल एवं पथ निर्माण की मांग की

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

सिल्ली : रांची जिला कांग्रेस कमिटी के अध्यक्ष डॉ राकेश किरण महतो ने झारखंड सरकार के ग्रामीण विकास मंत्री माननीय इरफान अंसारी जी से झारखंड मंत्रालय में मिलकर सिल्ली विधानसभा क्षेत्र अन्तर्गत सिल्ली, सोनाहातु एवं राहे प्रखण्ड के कुल 12 ग्रामीण पथों एवं पुलों के निर्माण की मांग की। जिलाध्यक्ष डॉ महतो ने विभागीय मंत्री को अवगत कराया कि पिछले दिनों जिला कमिटी द्वारा तीनों प्रखण्डों में जन सहायता शिविर का आयोजन किया गया था, जिसमें इन जर्जर पथों एवं पुलों के निर्माण कराने का लिखित आग्रह स्थानीय ग्रामीणों के द्वारा किया गया था। इनके निर्माण से ग्रामीणों को आवागमन में हो रही परेशानी से निजात मिलेगा।

जिलाध्यक्ष डॉ महतो की मांग को गम्भीरता से लेते हुए माननीय मंत्री ने उन्हें आश्वासन दिया कि उनकी मांगों को सरकार गम्भीरता से लेगी और इन ग्रामीण पथों एवं पुलों के निर्माण को प्राथमिकता के आधार पर करायेगी। माननीय मंत्री ने विभाग के सचिव को निर्देश देते हुए कहा कि इन पथों एवं पुलों के निर्माण हेतु यथाशीघ्र डीपीआर बनाया जाए। जल्द ही, स्थानीय ग्रामीणों की मांग पूरी होगी। जिलाध्यक्ष डॉ महतो ने माननीय मंत्री का इस हेतु आभार जताया।

डीएवी महात्मा आनंद स्वामी पब्लिक स्कूल के छात्रों ने जीता स्वर्ण पदक

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

सिल्ली : डी. ए. वी. पब्लिक स्कूल खूंटी में नेशनल स्पोर्ट्स (क्लस्टर लेवल - 5) फुटबॉल खेल का आयोजन किया गया था। जिसमें डी ए वी सिल्ली के अंडर-19 के छात्रों ने डी.ए. वी खलारी के अंडर 19 के छात्रों को फुटबॉल में हराकर स्वर्ण पदक प्राप्त किया।

सोमवार को स्कूल परिसर में स्कूल प्रबंधन की ओर से सफल छात्रों को सम्मानित किया गया। इस अवसर पर स्कूल प्राचार्या बी. शरण ने कहा की हमारे स्कूल के बच्चे अधिकांशत ग्रामीण क्षेत्र से आते हैं , जहां उन्हें खेलने के लिए इतनी अच्छी सुविधा नहीं मिलती हैं। इसके बावजूद भी फुटबॉल में स्वर्ण पदक लाना हमारे स्कूल के लिए गौरव की बात है।

कनक ज्वेलर्स में दिनदहाड़े हुई लूटपाट अपराधी ने संचालक को मारी गोली

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

गुमला : गुमला जिला मुख्यालय सहित गुमला जिले में अपराधकर्मियों का मनोबल और अपराध का ग्राफ काफी हाई (बढ़) गया हैं , तभी तो गुमला पुलिस प्रशासन को खुली चुनौती देते हुए गुमला मेन रोड स्थित कनक ज्वेलर्स में लुटपाट के इरादे से और पुलिस प्रशासन को खुली चुनौती देते हुए। उक्त अपराधकर्मियों ने दिनदहाड़े गुमला मेन रोड स्थित कनक ज्वेलर्स में लुटपाट के इरादे से धवाबोल दिये । उक्त घटना की सूचना मिलने ही गुमला जिला के पुलिस कप्तान शंभू कुमार सिंह ने त्वरित कार्रवाई करते हुए स्वयं उक्त घटनास्थल पर पहुंचकर गहराई से छानबीन और पुछताछ शुरू कर दी इसी क्रम में कनक ज्वेलर्स के संचालक प्रकाश कुमार ने गुमला जिला पुलिस कप्तान शंभू कुमार सिंह के समक्ष बताया की संभवतः लूटपाट को अंजाम देने के उद्देश्य से कुछ पांच अपराधकर्मी मेरे कनक ज्वेलर्स दुकान, घटनास्थल पर पहुंचे जिसमें दो अपराधकर्मी दुकान के बाहर निगरानी कर रहे थे और तीन अपराधकर्मी कनक ज्वेलर्स के अंदर प्रवेश कर लुटपाट को अंतिम देने का भुमिका बांध ही रहे थे की कनक ज्वेलर्स के संचालक मैं कुमार और अन्य कर्मचारीयों ने उनकी गतिविधियों को भांपते हुए मैं उस वक्त अपने दुकान खोलकर चाय पी रहा था और पिस्टल पकड़े हुए अपराधकर्मी को मैंने अपने हांथ में पकड़े उसी चाय के प्याले को चला कर उक्त अपराधकर्मी को मारा जिसपर उक्त अपराधकर्मी ने अपने पिस्टल से फायरिंग कर दी।

रामगढ़ में निकाला गया विरोध मार्च, सुभाष चौक पर हुआ प्रदर्शन

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

रामगढ़ : सांसद निशिकांत दुबे द्वारा लोकसभा में दिए गए बयान का पूरे झारखंड में विरोध हो रहा है। उन्होंने संथाल परगना, बिहार एवं बंगाल राज्यों को मिलाकर केंद्र शासित राज्य बनाने की मांग कर डाली है। उनके इस बयान पर झारखंड मुक्ति मोर्चा ने पूरे झारखंड में विरोध मार्च और प्रदर्शन करना शुरू कर दिया है। मंगलवार को रामगढ़ शहर के सुभाष चौक पर भी जेएमएम जिला अध्यक्ष विनोद किस्कू के नेतृत्व में विरोध मार्च निकाला गया। इस दौरान उन्होंने कहा कि भाजपा के कुछ सांसद संथाल परगना, बिहार और बंगाल राज्यों को मिलाकर यूनियन टेरिटरी बनाने की कुंठित मानसिकता रखते हैं। लेकिन संथाल परगना को दिशोम गुरु शिबू सोरेन ने अपने संघर्षों से संवारा है। संथाल आदिवासियों का क्षेत्र है और यहां आदिवासी ही अपनी सत्ता चला सकते हैं। इस इलाके में केंद्रीय नेतृत्व अपनी दबंगई चलाने के लिए इस तरह के शगूफे छोड़ रहा है। जिला अध्यक्ष ने कहा कि निशिकांत दुबे का बयान भाजपा की मानसिकता को स्पष्ट कर रहा है। लेकिन झामुमो और झारखंड की जनता उनके इस बयान की निंदा करती है। जिला अध्यक्ष विनोद किस्कू ने कहा कि सांसद अपने इस बयान को वापस ले अन्यथा जिस तरह लोकसभा चुनाव में जनता ने एनडीए को संथाल परगना से खदेड़ा है, उसी प्रकार विधानसभा चुनाव में पूरे झारखंड से खदेड़ देगी।

JAPIT
Jharkhand Agency for Promotion of Information Technology
(An Autonomous body under Department of Information Technology, Govt of Jharkhand)
Ground Floor, Engineers Hostel – I,
Near Golchakkar, Dhurwa, Ranchi, Jharkhand
Phone : 0651-2401040, 2401067, Email : japit_doit@rediffmail.com

Notice Inviting Tender

S. No.	Basic Requirement	Specific Requirement
1.	Tender Ref No.	JAPIT/JH-JDC/server virtualization/2024
2.	Name of the Work	Supply & Installation of Server Virtualization Software license with 01 year warranty for JAP-IT Data Centre
3.	Name & address of the issuer of this tender	The CEO, JAP-IT Ground Floor, Engineers hostel-1, Near Golchakkar, Dhurwa, Ranchi-834004.Tel:0651-2401044 Email: ceo.japit@jharkhandmail.gov.in
4.	Date of download of tender document	27/07/2024 at 10:30 A.M.
5.	Date for sending Query to ceo.japit@jharkhandmail.gov.in	29/07/2024 at 06:00 P.M.
6.	Start Date for Submission of Bids online	31/07/2024by11:30 A.M.
7.	Last Date for Submission of Bids online	13/08/2024 up to 3:00 P.M.
8.	Date of Opening of Pre-Qualification & Technical Bid	14/08/2024 at 3:30 P.M.
9.	Date of Commercial Bid opening	To be announced later
10.	Cost of Tender Document	Rs.5,000/-(Rs. Five Thousand only) online as per Jharkhand e-Procurement portal
11.	Earnest Money Deposit (EMD)	Rs.1,25,000/-(Rupees One lakh twenty-five thousand only) online as per Jharkhand e-Procurement portal
12.	Validity of Proposal	Proposals must remain valid180 days after the submission date

Further details can be seen on website: http://japit.jharkhand.gov.in.

Sd/-
Chief Executive Officer,
JAP-IT

PR 331197 Information Technology(24-25).D

जिला अभियंता का कार्यालय
जिला परिषद्, लातेहार

अति अल्पकालीन निविदा आमंत्रण–सूचना
निविदा आमंत्रण सूचना संख्या– 11 वर्ष 2024–25
D.M.F.T मद

1. विज्ञापन दाता का नाम : जिला अभियंता,जिला परिषद्, लातेहार।
2. परिमाण विपत्र की बिक्री की तिथि : 07.08.2024 (अपराह्न 03:00 बजे तक)
3. परिमाण विपत्र की बिक्री का स्थान : जिला अभियंता,जिला परिषद्, लातेहार।
4. निविदा प्राप्ति की तिथि एवं समय : 08.08.2024 को 03:00 बजे अपराह्न तक
5. निविदा प्राप्ति, का स्थान : जिला नियंत्रण कक्ष, (पुलिस अधीक्षक, लातेहार के कार्यालय के समक्ष)
6. निविदा खोलने की तिथि, समय एवं स्थान : 08.08.2024 को 03:30 बजे अपराह्न, कार्यालय जिला परिषद, लातेहार।
7. कार्य का विस्तृत विवरण :–

ग्रुप संख्या	योजना का नाम	प्राक्कलित राशि	अग्रधन की राशि	परिमाण विपत्र की राशि	कार्य पूर्ण करने की तिथि
1	2	3	4	5	6
1	प्रखण्ड लातेहार पंचायत भुसूर ग्राम ईचाक में जर्जर आंगनबाडी केन्द्र निर्माण।	18,19,800	36,500	5000	06 माह
2	प्रखण्ड लातेहार पंचायत डेमू ग्राम डेमू में जर्जर आंगनबाडी केन्द्र दक्षिणी का निर्माण।	18,19,800	36,500	5000	06 माह
3	प्रखण्ड लातेहार पंचायत डेमू ग्राम हुण्डरू में जर्जर आंगनबाडी केन्द्र का निर्माण।	18,19,800	36,500	5000	06 माह
4	प्रखण्ड लातेहार पंचायत धनकारा ग्राम धनकारा में बक्साढोंढा जर्जर आंगनबाडी केन्द्र निर्माण।	18,19,800	36,500	5000	06 माह
5	प्रखण्ड लातेहार पंचायत भुसूर ग्राम भुसूर के दक्षिण हरिजन टोला में जर्जर आंगनबाडी केन्द्र निर्माण।	18,19,800	36,500	5000	06 माह
6	प्रखण्ड लातेहार पंचायत धनकारा ग्राम धनकारा में जर्जर आंगनबाडी केन्द्र दक्षिण पतराटोली का निर्माण।	18,19,800	36,500	5000	06 माह
7	प्रखण्ड लातेहार पंचायत भुसूर ग्राम केन्दवाही में जर्जर दक्षिण आंगनबाडी केन्द्र निर्माण।	18,19,800	36,500	5000	06 माह
8	प्रखण्ड गारू पंचायत कार्रवाई में उत्क्रमित प्राथमिक विद्यालय धवाईचुवा में चाहरदिवारी निर्माण।	10,58,400	21,500	2500	04 माह

8. परिमाण विपत्र भारतीय स्टेट बैंक से निर्गत ही मान्य होगा जो जिला अभियंता, लातेहार के पदनाम से देय होगा एवं भारतीय स्टेट बैंक, लातेहार में भुगतेय होगा। परिमाण विपत्र का मूल्य लौटाया नहीं जायेगा।
9. अग्रधन की अंकित राशि (NSC) 05 वर्षीय/03 वर्षीय/डाकघर सावधि जमा पत्र/03 वर्षीय/05 वर्षीय/बैंक सावधि जमा पत्र (F.D) 05 वर्षीय/03 वर्षीय, कम्पनी के मामले में झारखण्ड राज्य के राष्ट्रीयकृत बैंक का B.G जो जिला अभियंता, लातेहार के नाम से प्रतिज्ञिप्त (प्लेज) कराते हुए निविदा के साथ संलग्न करना अनिवार्य होगा।
10. उक्त निविदा में जिला परिषद, लातेहार अन्तर्गत समुचित श्रेणी में निबंधित संबंधित प्रखण्ड के संवेदक भाग ले सकेंगे। ग्रुप संख्या–08 में अंकित योजना के लिए प्रखण्ड गारू एवं सरयू के संवेदक भाग लेंगे।
11. Ucan Certificate (Updated New Version) की प्रति संलग्न करना अनिवार्य होगा।
12. वैसे संवेदक जिनके पास पूर्व से D.M.F.T अन्तर्गत ली गयी योजना लंबित है उन्हे B.O.Q निर्गत नहीं किया जाएगा।

जिला अभियंता
जिला परिषद्, लातेहार

PR 331202 Rural Development(24-25).D

मौत बांटते असुरक्षित कोचिंग सैंटर, पीजी और हॉस्टल

डॉ. आशीष वशिष्ठ

बात हम नया भारत एवं विकसित भारत की करते हैं, लेकिन हमारी व्यवस्थाएं अभी वैसी नहीं बनी है और हम अनियंत्रित एवं असुरक्षित विकास करते जा रहे हैं। मुंबई हो, दिल्ली हो, चैन्नई या बेंगलुरु या ऐसे ही अन्य बड़े शहर -हर कहीं अनियोजित विकास और शहरी निर्माण संबंधी नियम-कानूनों के खुले उल्लंघन के चलते आए दिन दुर्घटनाएं होती रहती हैं। स्थिति यह है कि सरकारी भवनों तक में सुरक्षा के उपायों की अनदेखी होती है।

दिल्ली में सिविल सेवा परीक्षा की तैयारी कराने वाले एक कोचिंग सेंटर के बेसमेंट में पानी भरने से तीन छात्रों की मौत-हादसे ने समूचे राष्ट्र को दुःखी एवं आहत किया है, यह हादसा नहीं, बल्कि मानव जनित त्रासदी है, लापरवाही एवं लोभ की पराकाष्ठा है। इस त्रासदी की जड़ में है घोर दोषग्रस्त कोचिंग प्रणाली और व्यवस्था की जड़ों में समा गया बेलगाम भ्रष्टाचार। इससे संतुष्ट नहीं हुआ जा सकता कि कोचिंग संस्थान के दो लोगों को गिरफ्तार कर लिया गया है, क्योंकि दिल्ली नगर निगम के उन कर्मचारियों और अधिकारियों को क्यों नहीं गिरफ्तार किया गया जो सब कुछ जानते-बूझते हुए इस संस्थान को बेसमेंट में लाइब्रेरी चलाने की सुविधा प्रदान किए हुए थे। इस दुःखद एवं पीड़ादायक घटना ने एक बार फिर यही साबित किया है कि निर्माण कार्यों में फैले व्यापक भ्रष्टाचार और शासन तंत्र में बैठे लोगों की मिलीभगत के बीच ईमानदारी, नैतिकता, जिम्मेदारी या संवेदनशीलता जैसी बातों की जगह नहीं है। जिसकी कीमत निदोर्षों को अपनी जान गंवा का चुकानी पड़ रही है। निश्चित ही देशभर में कुकुरमुत्तों की तरह उग आए कोचिंग सैंटर डैथ सैंटर बन चुके हैं। कोचिंग सैंटरों का कारोबार शासन के दिशा-निदेशों की धज्जियां उड़ाकर चल रहे हैं। छात्रों को सुनहरी भविष्य का सपना दिखा कर मौत बांटी जा रही है। आजादी के अमृत-काल में पहुंचने के बाद भी भ्रष्टाचार, रिश्वतखोरी, बेईमानी हमारी व्यवस्था में तीव्रता से व्याप्त है, अनेक हादसों एवं जानमाल की हानि के बावजूद भ्रष्ट हो चुकी मोटी चमड़ी पर कोई असर नहीं होता। प्रश्न है कि सैंटर के मालिक को तो गिरफ्तार कर लिया लेकिन ऐसी घटनाओं के दोषी अधिकारी क्यों नहीं गिरफ्तार होते?

शनिवार की शाम राजधानी दिल्ली के ओल्ड राजेन्द्र नगर के कोचिंग सैंटर में हुए हादसे में तीन छात्रों नेविन डोल्विन, तान्य सोनी और श्रेया यादव की दुखद मौत ने अनेक सवालों को खड़ा किया है। केरल का रहने वाला नेविन आईएएस की तैयारी कर रहा था और वह जेएनयू से पीएचडी भी कर रहा था। उत्तर प्रदेश की श्रेया यादव ने अभी एक महीना पहले ही इस कोचिंग सैंटर में दाखिला लिया था। कोचिंग सैंटर के बेसमेंट में लाइब्रेरी चल रही थी जहां 150 छात्रों के बैठने की व्यवस्था थी। हादसे के वक्त 35 छात्र मौजूद थे। चंद मिनटों में ही बेसमेंट में पानी भर गया। सिर्फ इसी सैंटर में नहीं, बल्कि लगभग सभी शैक्षणिक कोचिंग सैंटर के बेसमेंट में लाइब्रेरी बनाई गई है। जिसके गेट बायोमेट्रिक आईडी से खुलते हैं, जैसे ही बारिश होती है, बिजली चली जाती है, उसके बाद बेसमेंट से निकलना बिना बायोमैट्रिक आईडेंटिफिकेशन के मुश्किल होता है।

ऐसी स्थिति में हादसे और मौत की संभावना बढ़ जाती है। ओल्ड राजेंद्र नगर के न सिर्फ कोचिंग सैंटर बल्कि पीजी और हॉस्टल की असुरक्षित हालत भी मौत लिये किसी भी क्षण बड़े हादसे की संभावना के साथ खड़ी है। जहां इस कदर अवैध निर्माण है कि कभी भी दूसरा या दोबारा हादसा हो सकता है। इसलिये ऐसे हादसों की जांच से काम नहीं चलने वाला।

विडम्बनापूर्ण है ऐसे जलभराव एवं आगजनी के हादसों से सबक नहीं लिया जाता। यह प्रवृत्ति दुर्भाग्यपूर्ण है। विडम्बना देखिये कि ऐसे भ्रष्ट शिखरों को बचाने के लिये सरकार कितने सारे झूठ का सहारा लेती है। राजधानी में रह-रह कर एक के बाद एक हो रहे हादसों के बावजूद दिल्ली-सरकार की नींद नहीं खुल रही है। हाल ही में गुजरात के राजकोट में एक एम्यूजमेंट पार्क के अंदर गेमिंग जोन में लगी आग की लपटें हो या राष्ट्रीय राजधानी दिल्ली में बच्चों के एक प्राइवेट हॉस्पिटल में आग लगना और अब कोचिंग सैंटर में तीन होनहार एवं देश के भविष्य बच्चों का दर्दनाक तरीके से डूबकर मर जाना-निश्चित रूप से ये हादसे प्रशासनिक लापरवाही की उपज हैं, यही कारण है कि सिस्टम में खामियों और ऐसी आपदाओं को रोकने में सरकारी अधिकारियों की लापरवाही की निंदा भी व्यापक स्तर की जा रही है। यह याद रखने योग्य है कि नियमित अंतराल पर मानवीय जिम्मेदारी वाले पहलू की अनदेखी से ऐसी गंभीर घटनाएं होने के बावजूद अधिकारियों की उदासीनता और लापरवाही कम होती नहीं दिख रही है। इन त्रासद हादसों ने कितने ही परिवारों के घर के चिराग बुझा दिए।

परिवार वालों ने और छात्रों ने स्वर्णिम भविष्य के सपने संजो कर और लाखों की फीस देकर कोचिंग शुरू की होगी लेकिन उन्हें नहीं पता था कि उन्हें इस तरह मौत मिलेगी। छात्रों की मौत को महज हादसा नहीं माना जा सकता, यह एक तरह से निर्मम हत्या है और हत्यारा है हमारा सिस्टम। हादसे से आक्रोशित छात्रों का कहना है कि वे 10-12 दिन से दिल्ली नगर निगम से कह रहे हैं कि ड्रेनेज सिस्टम की सफाई कारवाई जाए लेकिन किसी भी जनप्रतिनिधि और जिम्मेदार अधिकारियों ने इस ओर ध्यान नहीं दिया। हादसे तभी होते हैं जब नियमों और कानूनों को ताक पर रखा जाता है। तंत्र की काहिली और आपराधिक लापरवाही के चलते ऐसे हादसे होते हैं जिनमें भ्रष्टाचार पसरा होता है, जब अफसरशाह लापरवाही करते हैं, जब स्वार्थ एवं धनलोलुपता में मूल्य बौने हो जाते हैं और नियमों और कायदे-कानूनों का उल्लंघन होता है। जलभराव क्यों और कैसे हुआ, यह तो जांच का विषय है ही लेकिन इन शैक्षणिक एवं व्यावसायिक इकाइयों को उसके मालिकों ने मौत का कुआं बना रखा था। आखिर क्या वजह है कि जहां दुर्घटनाओं की ज्यादा संभावनाएं होती हैं, वही सारी व्यवस्थाएं फेल दिखाई देती है? सारे कानून कायदों का वहीं पर स्याह हनन होता है। हर दुर्घटना में गलती भ्रष्ट आदमी यानी अधिकारी एवं व्यवसायी की ही होती है, लेकिन दुर्घटना होने के बाद ही उन पर कार्रवाई क्यों होती है? सरकार पहले क्यों नहीं जागती?

वैसे तो बेसमेंट में कोचिंग सैन्टर या लाइब्रेरी चलाना गैर-कानूनी है, इस घटना के सन्दर्भ जब बेसमेंट में स्टोर या पार्किंग की अनुमति दी गई थी तो वहां लाइब्रेरी कैसे चलने लगी? स्पष्ट है कि कोचिंग संचालकों और दिल्ली नगर निगम के अधिकारियों की मिलीभगत से ऐसा हो रहा होगा। जलभराव के कारण पानी जब बेसमेंट में घुसा तब लाइब्रेरी में 30-35 छात्र थे। यह तो गनीमत रही कि तीन अभागे छात्रों को छोड़कर बाकी सब जैसे-तैसे निकल आए। इस इलाके में बरसात में हर समय जलभराव होता है, लेकिन किसी ने उसकी सुध नहीं ली। इसका कोई विशेष औचित्य नहीं कि एमसीडी ने एक जांच समिति गठित करने की बात कही है। जांच के नाम पर लीपापोती होने की ही आशंका अधिक है। दिल्ली की घटना इसकी परिचायक है कि जिन पर भी शहरी ढांचे की देखरेख करने और उसे संवारने की जिम्मेदारी है, वे अपना काम सही से करने के लिए तैयार नहीं। यही कारण है कि देश की राजधानी के साथ-साथ अन्य महानगरों का भी शहरी ढांचा बुरी तरह चरमरा गया है।

बात हम नया भारत एवं विकसित भारत की करते हैं, लेकिन हमारी व्यवस्थाएं अभी वैसी नहीं बनी है और हम अनियंत्रित एवं असुरक्षित विकास करते जा रहे हैं। मुंबई हो, दिल्ली हो, चैन्नई या बेंगलुरु या ऐसे ही अन्य बड़े शहर -हर कहीं अनियोजित विकास और शहरी निर्माण संबंधी नियम-कानूनों के खुले उल्लंघन के चलते आए दिन दुर्घटनाएं होती रहती हैं। स्थिति यह है कि सरकारी भवनों तक में सुरक्षा के उपायों की अनदेखी होती है। दिल्ली के इनकम टैक्स भवन में आग से एक अधिकारी की जान हाल में गयी। कहने को तो अपने देश में हर तरह के नियम-कानून हैं, लेकिन वे कागजों पर ही अधिक हैं या निदोर्षों को परेशानी करने के लिये है। औसत जनप्रतिनिधि और अधिकारी-कर्मचारी पैसे बनाने के फेर में रहते हैं और अनियोजित विकास को रोकने के बजाय उसे बढ़ावा देने का काम करते हैं। सब चलता है वाली प्रवृत्ति इस तरह अपनी जड़ें जमा चुकी है कि व्यवस्था की परवाह करना ही छोड़ दिया गया है। यह बेहद दुर्भाग्यपूर्ण है कि शहरी विकास के बड़े-बड़े दावे करने और उन्हें संवारने की तमाम योजनाएं बनाने के बावजूद देश के शहर दुर्दशाग्रस्त एवं असुरक्षित हैं। हर हादसे पर सियासत होती है लेकिन कोचिंग सैंटर माफिया इतना ताकवर है कि उसके आगे कोई कुछ नहीं बोलता। ऐसा क्यों है यह सब जानते हैं।

संपादकीय

खामियाजा भरना नामुमकिन

दिल्ली के ओल्ड़ राजेन्द्र नगर स्थित नामी कोचिंग सेंटर राव के बेसमेंट में जलभराव से तीन छात्रों की मौत वाकई दुखद है। कोचिंग संस्थान, सिविक एजेंसी और सरकारी मशीनरी की काहिली से यह जानलेवा स्थिति बनी। यहां बरसात का पानी अचानक भर गया, वहां बनी लाइब्रेरी में तकरीबन 35 छात्र पढ़ाई कर रहे थे। बता रहे हैं, शुरूआत में पानी थोड़ा था पर अचानक बरसाती पानी की रफ्तार बहुत तेज हो गई। तेज स्पार्किंग के साथ धमाका हुआ और बिजली गुल हो गई। अफरा-तफरी में वे बाहर की तरफ भागे मगर बायोमैट्रिक लगा होने के कारण दरवाजा नहीं खुला। पांच मिनट में भूतल में 10-12 फीट पानी भर गया था। बचाव दल ने छात्रों को बमुश्किल निकाला। दो छात्रों का पोस्टमार्टम में उनकी मौत डूबने व गंदा पानी फेफड़ों में भरने से होने की रपट है, एक छात्र के परिजन के पहुंच न पाने के कारण शव सुरक्षित रखा गया। मामले में कोचिंग सेंटर के मालिक अभिषेक गुप्ता समेत कुल सात आरोपियों की गिरफ्तारी हो चुकी है। नियमानुसार जिस भूतल को केवल स्टोर के लिए इस्तेमाल करना था, वहां कक्षा है और पुस्तकालय भी। राजधानी में केंद्र सरकार की नाक के नीचे ऐसी दुर्भाग्यपूर्ण घटना की देश भर में काफी निंदा की जा रही है। दमकल विभाग का कहना है, वहां मौजूद तमाम कोचिंग सेंटरों ने मुख्यद्वार स्लाइडिंग बनाए हैं। ताकि बरसात का पानी वहां न आ पाए। ऐसे तेरह सेंटरों को आनन-फानन सील भी कर दिया गया है। नौ माह का शुल्क डेढ लाख से अधिक लेने वाले राव जैसे अन्य सेंटरों के कुछ छात्र इस अव्यवस्था की लिखित शिकायत भी कर चुके थे। यहां संकरी गलियों के छोटे-छोटे घरों में रहने व पढ़ाई करने वाले छात्रों का जमावड़ा रहता है। कुछ ही दिन पहले ऐसे ही सेंटर में आग लगने की घटना हो चुकी है। सरकार ने मुंह छिपाने के लिए आनन-फानन नए नियम लागू कर दिए हैं। मगर इन होनहार छात्रों के जीवन का खामियाजा तो किसी भी तरह नहीं भरा जा सकता। सख्त सजा से जरूरी है, देश भर के छात्रों की सुरक्षा व्यवस्था पर कड़ी नजर रखी जाए और लापरवाही करने वाले संस्थानों को यूं ही मुक्त न छोड़.दिया जाए। मालिकों व प्रबंधकों के अतिरिक्त इस हादसे की सरकार भी कम जिम्मेदार नहीं है। उसे अपनी लापरवाही को सुधारना होगा। कुल मिलाकर खराब जल निकासी और सरकारी तंत्र की घोर लापरवाही के चलते दूरदराज से अधिकारी बनने का ख्वाब लिए बच्चों को अपनी जान से हाथ धोना पड़ा।

चिंतन-मनन

हर जीव में व्याप्त नारायण

वैदिक साहित्य से हम जानते हैं कि परम-पुरुष नारायण प्रत्येक जीव के बाहर तथा भीतर निवास करने वाले है। वे भौतिक तथा आध्यात्मिक दोनों जगतों में विद्यमान हैं। यद्यपि वे बहुत दूर हैं, फिर भी हमारे निकट हैं- आसीनो दूरं व्रजति शयानो याति सर्वतरू हम भौतिक इन्द्रियों से न तो उन्हें देख पाते हैं, न समझ पाते हैं अतएव वैदिक भाषा में कहा गया है कि उन्हें समझने में हमारा भौतिक मन तथा इन्द्रियां असमर्थ हैं। किन्तु जिसने, भक्ति में कृष्णभावनामृत का अभ्यास करते हुए, अपने मन-इन्द्रियों को शुद्ध कर लिया है, वह उन्हें निरन्तर देख सकता है। ब्रह्मसंहिता के अनुसार परमेर के लिए जिस भक्त में प्रेम उपज चुका है, वह निरन्तर उनके दर्शन कर सकता है। और भगवद्गीता में कहा गया है कि उन्हें केवल भक्ति द्वारा देखा-समझा जा सकता है। भगवान सबके हृदय में परमात्मा रूप में स्थित हैं। तो क्या इसका अर्थ यह हुआ कि वे बंटे हुए हैं? नहीं। वास्तव में वे एक हैं। जैसे सूर्य मध्याह्न समय अपने स्थान पर रहता है, लेकिन यदि कोई पांच हजार मील की दूरी पर घूमे और पूछे कि सूर्य कहां है, तो सभी कहेंगे कि वह उसके सिर पर चमक रहा है। इस उदाहरण का अर्थ है कि यद्यपि भगवान अविभाजित हैं, लेकिन इस प्रकार स्थित हैं मानो विभाजित हों।वैदिक साहित्य में यह भी कहा गया है कि अपनी सर्वशक्तिमत्ता द्वारा एक विष्णु सर्वत्र विद्यमान हैं। जिस तरह एक सूर्य की प्रतीति अनेक स्थानों में होती है। यद्यपि परमेर प्रत्येक जीव के पालनकर्ता हैं, किन्तु प्रलय के समय सबका भक्षण भी कर जाते हैं। सृष्टि रची जाती है, तो वे सबको मूल स्थिति से विकसित करते हैं और प्रलय के समय सबको निगल जाते हैं। वैदिक शास्त्र पुष्टि करते हैं कि वे समस्त जीवों के मूल तथा आश्रय-स्थल हैं। सृष्टि के बाद सारी वस्तुएं उनकी सर्वशक्तिमत्ता पर टिकी रहती हैं और प्रलय बाद सारी वस्तुएं पुनः उन्हीं में विश्राम पाने के लिए लौट आती हैं।

538 लोकसभा सीटों पर पड़े वोट और गिने गए वोटों पर अंतर, लोकतांत्रिक व्यवस्था पर प्रश्न चिन्ह

सनत जैन

लोएसोसिएशन फॉर डेमोक्रेटिक रिफॉर्म (एडीआर) ने सोमवार को एक रिपोर्ट पेश की है। इस रिपोर्ट में बताया गया है। 362 लोकसभा की सीटों पर मतदाताओं द्वारा डाले गए और गिने गए वोटो में 5,54,598 वोटो का अंतर है। मतगणना कम वोटों की की गई है। जबकि जीतने वाले प्रत्याशी और दूसरे नंबर के प्रत्याशी के बीच वोटों का अंतर बहुत कम था। इससे जीत-हार प्रभावित हुई है। लोकसभा की 176 लोकसभा सीटों पर वोट कम पड़े और 35093 वोट ज्यादा गिने गए हैं। 538 सीटों पर कुल वोटों का अंतर 5,89,691 पाया गया है। इस संस्था के संस्थापक जगदीप छोकर ने कहा है, कि चुनाव आयोग द्वारा अंतिम मतदान का डाटा जारी करने में भी पारिदर्शिता नहीं बरती गई है। चुनाव आयोग द्वारा अलग-अलग निर्वाचन क्षेत्र के मतदान के आंकड़े काफी विलंब से जारी किए गए। प्रारंभिक मतदान और अंतिम मतदान के परिणामों में 5 करोड़ से अधिक वोटों का अंतर पाया गया है। अभी भी चुनाव आयोग द्वारा मतदान और मतगणना के आंकड़े मतदान केंद्र के हिसाब से जारी नहीं किए गए हैं। इस कारण लोकसभा चुनाव में मतदान और मतगणना को लेकर संदेह बना हुआ है। जबकि यह जानकारी पूर्व में चुनाव आयोग द्वारा दी जा रही थी। एडीआर ने 79 लोकसभा सीटों का एक अलग विश्लेषण जारी किया है। जिसमें मतदान कम होने की जानकारी दी गई थी। जब मतगणना हुई, उसमें करोड़ों वोट ज्यादा गिने गए हैं। केंद्रीय चुनाव आयोग के ऊपर चुनाव प्रचार के दौरान और मतदान के बीच में आदर्श आचार संहिता की जो शिकायतें की गई थीं, उन पर भी चुनाव आयोग द्वारा कोई कार्यवाही नहीं किए जाने तथा शिकायतों का भेदभाव पूर्ण ढंग से निपटारा करने का आरोप लगा है। इसको लेकर भी चुनाव आयोग की कार्यप्रणाली पर लगातार पक्षपात और संदेह व्यक्त किया जा रहा है। एसोसिएशन फॉर डेमोक्रेटिक रिफॉर्म्स एक ऐसी संस्था है, जिसमें भारतीय प्रशासनिक सेवा के अधिकारी, भारतीय पुलिस सेवा के अधिकारी, न्यायिक व्यवस्था से जुड़े हुए न्यायाधीश, वकील और पत्रकार भी शामिल हैं। यह संस्था पिछले कई वर्षों से लोकसभा और विधानसभा के चुनाव का डाटा इकट्ठा करती आ रही है। उसका विश्लेषण करती है, और समय-समय पर वह डाटा सार्वजनिक पोर्टल पर जारी करती है। इस संस्था की बड़ी विश्वसनीयता मतदाताओं, मीडिया और संस्थाओं के बीच में बनी हुई है। यह संस्था बिना किसी भेदभाव के उपलब्ध डाटा के आधार पर जानकारी उपलब्ध कराते हुए गड़बड़ियों को उजागर करती है। समय-समय पर इस संस्था द्वारा हाईकोर्ट और सुप्रीम कोर्ट में भी याचिकाओं के माध्यम से लोकतांत्रिक व्यवस्था सुदृढ़ करने की कोशिश की गई है। मतदाताओं के लोकतांत्रिक अधिकार सुरक्षित रह सकें, इसके लिए समय-समय पर प्रयास करती है। 5 वर्ष पहले भी इस संस्था द्वारा सुप्रीम कोर्ट में एक याचिका दायर की गई थी। जिसकी सुनवाई लोकसभा चुनाव की अधिसूचना जारी होने के कुछ दिन पहले ही सुप्रीम कोर्ट में शुरू हुई। सुप्रीम कोर्ट ने इस याचिका पर चुनाव अधिसूचना जारी होने के कारण डिटेल में जाकर सुनवाई करने से इनकार कर दिया था। याचिका में ईवीएम मशीन, बीवीपेट मशीन, बीवीपेट से निकली हुई मतदान पर्चियों की गिनती, माइक्रोकंट्रोल यूनिट इत्यादि के बारे में प्रश्न उठाए गए थे। सुप्रीम कोर्ट में पिछले चुनाव के दौरान जो गड़बड़ियां थी उसको लेकर याचिका दायर की गई थी। सुप्रीम कोर्ट ने उस समय, सुनवाई के बाद जो आदेश पारित किए थे, उसका पालन भी चुनाव आयोग द्वारा 2024 के लोकसभा चुनाव में यथावत नहीं किया गया। चुनाव आयुक्तों की नियुक्ति को लेकर सुप्रीम कोर्ट ने जो फैसला दिया था। उसको बदलते हुए सरकार ने एक नया कानून बनाया। जिसमें प्रधानमंत्री, गृहमंत्री, और नेता प्रतिपक्ष के तीन सदस्यों की कमेटी ने चुनाव के ठीक पहले तो चुनाव आयुक्तों की नियुक्ति की। यह नियुक्ति भी विवादों में है। नए कानून को चुनौती देने वाली याचिका सुप्रीम कोर्ट में लंबित है। लोकसभा के चुनाव हो चुके हैं। परिणाम भी घोषित हो चुके हैं। लोकसभा के सदस्यों ने शपथ भी ले ली है। सरकार का गठन भी हो गया है। ऐसी स्थिति में एसोसिएशन फॉर डेमोक्रेटिक रिफॉर्म द्वारा जो रिपोर्ट पेश की गई है। संगठन ने चुनाव आयोग से भी जानकारी मांगी, लेकिन चुनाव आयोग द्वारा जानकारी देने के स्थान पर छुपाया जा रहा है। इससे भी संदेह बढ़ रहा है। 2014 और 2019 के लोकसभा चुनाव तथा विभिन्न राज्यों के जो विधानसभा चुनाव हुए थे, उसमें चुनाव आयोग द्वारा मतदान की जानकारी शाम को 7 बजे और दूसरे दिन दोपहर 11 बजे तक प्रत्येक निर्वाचन क्षेत्र में कितना मतदान हुआ है। उसको मतदान केंद्र के हिसाब से जारी कर देती थी। 2024 के लोकसभा चुनाव की चुनाव आयोग द्वारा जो प्रारंभिक मतदान की जानकारी दी गई थी। उसके कई दिनों बाद मतदान के जो आंकड़े जारी किए गए, उनमें करोड़ों वोटो का अंतर है। राज्यवार 12 फीसदी तक का अंतर मतदान में है। निर्वाचन क्षेत्र के हिसाब से अभी तक मतदान केंद्र के मतगणना का आंकड़ा मतदान केंद्रों के हिसाब से चुनाव आयोग द्वारा पोर्टल पर नहीं डाला गया है। एक निश्चित समय पर चुनाव लड़ने वाले उम्मीदवारों को चुनाव याचिका हाईकोर्ट में दायर करनी पड़ती है। इसी तरह से सुप्रीम कोर्ट ने जो आदेश दिए थे, निर्वाचन क्षेत्र का दूसरे नंबर का उम्मीदवार यदि मतगणना से सहमत नहीं है। वह राशि भरकर 45 दिन के अंदर जांच की मांग कर सकता है। इस संबंध में चुनाव आयोग द्वारा अभी तक कोई नियम नहीं बनाए हैं। जिन पराजित उम्मीदवारों ने आवेदन लगाए थे, उस पर भी कोई कार्रवाई अभी तक चुनाव आयोग द्वारा नहीं की गई है। भारतीय लोकतंत्र और संविधान की बुनियाद मतदान पर ही रखी गई है। निर्वाचित प्रतिनिधियों द्वारा बहुमत के आधार पर सरकार का गठन किया जाता है। मतदाताओं से मिले हुए इस अधिकार से केंद्र एवं राज्य सरकार का गठन होता है। केंद्र एवं राज्य सरकारें जनता के लिए कानून बनाती हैं। विधायिका, कार्यपालिका और न्यायपालिका उसी के अनुसार काम करती हैं। चुनाव आयोग एक संवैधानिक संस्था है। उसको निष्पक्ष और पारदर्शिता के साथ चुनाव कराने की जिम्मेदारी संविधान ने सौंपी है। चुनाव आयोग, चुनाव की निष्पक्षता, पारिदर्शिता और सभी लोगों को चुनाव में समान अवसर मिलें। सभी राजनीतिक दलों को समान अवसर मिलें। इसकी जिम्मेदारी चुनाव आयोग की तय की गई है। यदि मतदाताओं को चुनाव आयोग पर ही विश्वास नहीं होगा? चुनाव आयोग सरकार के दबाव में काम करेगा, तो लोकतंत्र और संविधान को सुरक्षित रख पाना संभव नहीं होगा। सुप्रीम कोर्ट के मुख्य न्यायाधीश डीवाई चंद्रचूड़ ने चुनाव आयुक्त की नियुक्ति को लेकर जो फैसला दिया था, उसमें उन्होंने कहा था, कि चुनाव आयुक्त ऐसा होना चाहिए जो प्रधानमंत्री से भी बिना डर और भय के सवाल कर सके। बिना किसी दबाव में आए काम कर सके। सुप्रीम कोर्ट ने अपने फैसले में जो कमेटी बनाई थी, उसमें प्रधानमंत्री, सुप्रीम कोर्ट के मुख्य न्यायाधीश और नेता प्रतिपक्ष को शामिल किया था। सरकार ने सुप्रीम कोर्ट के निर्णय को ना मानते हुए, जो कानून बनाया। उसमें तीन सदस्यों की कमेटी में दो सदस्य सरकार के और एक विपक्ष का रखा गया। जिसके कारण चुनाव आयुक्तों की नियुक्ति से लेकर, मतदान और मतगणना पर लगातार प्रश्न चिन्ह लग रहे हैं। न्यायपालिका की जिम्मेदारी है, जो प्रश्न चिन्ह चुनाव आयोग और चुनाव प्रक्रिया पर खड़े हुए हैं। उनकी जल्द से जल्द सुनवाई करके, दूध का दूध और पानी का पानी किया जाए। मतदाताओं का चुनाव प्रक्रिया पर विश्वास बना रहे। लोकतंत्र तथा संविधान मजबूत हो। पूर्व चुनाव आयुक्त टीएन सेशन आज भी सबसे सशक्त और निष्पक्ष चुनाव कराने के लिए जाने जाते हैं। वर्तमान केंद्रीय चुनाव आयोग से भी अपेक्षा की जाती है।

भुखमरी : खत्म करने की चुनौती

रविशंकर

दुनियाभर के लिए भुखमरी आज एक वैश्विक समस्या बन गई है। जनसंख्या बढ़ने के साथ ही विश्वभर में भुखमरी का आंकड़ा भी दिन-प्रतिदिन बढ़ता जा रहा है। जबकि पृथ्वी पर हर एक इंसान का पेट भरने लायक पर्याप्त भोजन का उत्पादन हो रहा है, लेकिन फिर भी दुनिया के कुछ हिस्सों में भुखमरी बढ़ती जा रही है। हकीकत ये है कि आधुनिक दुनिया में आज हर 11वां इंसान अभी भी खाली पेट सोने को मजबूर है। मतलब की दुनिया में 73.3 करोड़ लोग ऐसे हैं, जिन्हें भरपेट खाना नसीब नहीं हो रहा है। यदि 2019 की तुलना में देखें तो इन लोगों की संख्या में 15.2 करोड़ का इजाफा हुआ है। अफ्रीका में हालात तो और भी कहीं ज्यादा खराब है, जहां हर पांचवां इंसान भुखमरी का सामना करने को मजबूर है। ये जानकारी दुनिया में खाद्य सुरक्षा और पोषण की स्थिति पर जारी एक नई रिपोर्ट में सामने आई है। 'द स्टेट ऑफ फूड सिक्योरिटी एंड न्यूट्रिशन इन द वर्ल्ड 2024' नामक ये रिपोर्ट संयुक्त राष्ट्र खाद्य एवं कृषि संगठन (एफएओ), अंतरराष्ट्रीय कृषि विकास कोष (आईएफएडी), यूनिसेफ, विभ खाद्य कार्यक्रम (डब्ल्यूएफपी) और विश्व स्वास्थ्य संगठन (डब्ल्यूएचओ) ने संयुक्त रूप से प्रकाशित की है।

इस रिपोर्ट में बताया गया है कि आज दुनिया की एक तिहाई आबादी ऐसी है, जो पोषण युक्त आहार खरीदने में सक्षम नहीं है। रिपोर्ट में जो आंकड़े साझा किए गए हैं वो खाद्य सुरक्षा की एक गंभीर तस्वीर पेश कर रहे हैं। रिपोर्ट के मुताबिक दुनिया में 233 करोड़ लोग ऐसे हैं, जिन्हें नियमित तौर पर पर्याप्त भोजन हासिल करने के लिए जूझना पड़ रहा है। इनमें 86.4 करोड़ लोग वो हैं जिन्हें गंभीर खाद्य असुरक्षा का सामना करना पड़ा। यानी उन्हें कुछ समय बिना खाए ही गुजारा करना पड़ा है। वास्तविकता में देखें तो पोषण के मामले में दुनिया 15 साल पीछे चली गई है और कुपोषण का स्तर 2008-2009 के स्तर पर पहुंच चुका है। हालांकि देखा जाए तो ये स्थिति तब है जब सतत विकास के लक्ष्यों के तहत 2030 तक किसी को खाली पेट न सोने देने की बात कही गई थी। मतलब की इन छह वर्षों में दुनिया को एक लंबा सफर तय करना है। रिपोर्ट में ये चेतावनी भी दी गई है कि अगर मौजूदा हालात इसी तरह से जारी रही, तो 2030 तक लगभग 58 करोड़ से ज्यादा लोग गंभीर कुपोषण का शिकार हो जाएंगे। इनमें से आधे अफ्रीका में होंगे। साफ है, दुनियाभर में तमाम प्रोग्राम और संयुक्त राष्ट्र की कोशिशों के बावजूद खाद्य असामनता और कुपोषण जैसे मुद्दे पर अभी तक सफलता नहीं मिल पाई है। यूं तो इंसान पांच दशक पहले ही चांद पर पहुंच गया, लेकिन इसी दुनिया में आज भी करोड़ों लोगों को चांद रोटी में नजर आता है। ताजा रिपोर्ट देखकर अंदाजा लगाया जा सकता है कि दुनिया में भुखमरी की संख्या घटने की बजाए तेजी से बढ़ रही है। साफ है, भूख की समस्या को पूरी तरह समाप्त करने के लिए अभी दुनिया को एक लंबा रास्ता तय किया जाना बाकी है। ये कैसी विडंबना है एक ओर हमारे और आपके घर में रोज सुबह रात का बचा हुआ खाना बासी समझ कर फेंक दिया जाता है तो वहीं दूसरी ओर कुछ लोग ऐसे भी हैं जिन्हें एक वक्त का खानातक नसीब नहीं हो रहा है और वे भूख से जूझ और मर रहे है। दुनिया भर में हर साल जितना भोजन तैयार होता है उसका लगभग एक-तिहाई बर्बाद हो जाता है। बर्बाद किया जाने वाला खाना इतना होता है कि उससे दो अरब लोगों के भोजन की जरूरत पूरी हो सकती है। गौर करने वाली बात ये है कि दुनिया में बढ़ती संपन्नता के साथ ही लोग खाने के प्रति असंवेदनशील हो रहे हैं। खर्च करने की क्षमता के साथ ही लोगों में खाना फेंकने की प्रवृत्ति बढ़ रही है। कमोबेश हर विकसित और विकासशील देश की यही कहानी है। अगर इस बबार्दी को रोका जा सके तो कई लोगों का पेट भरा जा सकता है। वहीं दूसरी तरफ, खाद्यान्न की क्षति और बबार्दी न केवल संसाधनों के कुप्रबंधन का मुद्दा है बल्कि ये बड़े पैमाने पर ग्रीनहाउस गैसों के उत्सर्जन में भी योगदान देती है। खाद्य और कृषि संगठन (एफएओ) का अनुमान है कि वैश्विक ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जन के आठ प्रतिशत के लिए खाद्य अपशिष्ट भी जिम्मेदार होते हैं।

वर्तमान समय में हर देश विकास के पथ पर आगे बढ़ने का दावा करता है। अल्पविकसित देश विकासशील देश बनना चाहते हैं तो वहीं विकासशील देश विकसित देशों की श्रेणी में शामिल होना चाहते हैं। इसके लिए देशों की सरकारें प्रयास भी करती हैं तथा विकास के संदर्भ में अपनी उपलब्धियों को गिनाती हैं। यहां तक कि विकास दर के आंकड़े से ये अनुमान लगाया जाता है कि कोई देश किस तरह विकास कर रहा है कैसे आगे बढ़ रहा है? ऐसे में जब कोई ऐसा आंकड़ा सामने आ जाए जो आपको ये बताए कि अभी तो देश 'भूख' जैसी समस्या को भी हल नहीं कर पाया है, तब विकास के आंकड़े झूठे लगने लगते हैं। ये कैसा विकास है जिसमें बड़ी संख्या में लोगों को भोजन भी उपलब्ध नहीं है।

एक नजर

ऑटो पलटने से बच्चे की हुई मौत

गुमला : गुमला सदर थाना स्थित परसा ग्राम में ऑटो (टेंपो) पलटने से 4 वर्षीय बच्चे की हुई मौत। पिता और 2 वर्षीय पुत्री घायल, बताया जाता हैं की गुमला सदर थाना स्थित तेलगांव कुंबा टोली ग्राम निवासी मनोज लकड़ा, 4 वर्षीय अश्वनी लकड़ा और एक 2 वर्षीय बच्ची को अपने ऑटो (टेंपो) में बैठाकर, तेलगांव ग्राम रोपा रोपने गई अपनी पत्नी को लाने जा रहा था इसी क्रम में तेलगांव ग्राम के समक्ष ही सड़क में एकाएक जानवर आ जाने के कारण उक्त ऑटो (टेंपो) अनियंत्रित होकर पलट गया फलस्वरुप चार वर्षीय अश्वनी लकड़ा की घटनास्थल पर ही दर्दनाक मौत हो गई। जबकि मनोज लाकड़ा और 2 वर्षीय पुत्री घायल हो गई। जिसे बाद में ग्रामीणों के सहयोग से आनन-फानन में इलाज के लिये गुमला सदर अस्पताल लाया गया जहां डॉक्टरों के देखरेख में उसका इलाज चल रहा हैं। उक्त जानकारी मिलते ही गुमला सदर थाना पुलिस सदर अस्पताल पहूंचकर उक्त चार वर्षीय मृत अश्वनी लकड़ा के उक्त शव को अपने कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम हेतु गुमला सदर अस्पताल स्थित पोस्टमार्टम हाउस में भेजवाया गया जहां पोस्टमार्टम के बाद उक्त शव को उसके परिजनों को सौंप दिया गया हैं।

तय समय में पूरा करें जलापूर्ति योजना का काम : लोकेश मिश्रा

खूंटी : पेयजल एवं स्वच्छता प्रमण्डल के तहत जल जीवन मिशन एवं स्वच्छ भारत मिशन की अब तक की प्रगति की समीक्षा उपायुक्त लोकेश मिश्रा ने मंगलवार को की। उपायुक्त ने सिंदरी पुरनानगर, उलिहातू, तपकरा, मनहातू, कोयनारा, गोविंदपुर, जयपुर, बहु ग्रामीण जलापूर्ति योजना की समीक्षा की। समीक्षा के क्रम में उपायुक्त ने स्पष्ट निर्देश दिया है कि तय समय सीमा तक कार्य को पूर्ण करना सूनिश्चित करें। सिंदरी पुरना नगर बहु जलापूर्ति योजना की प्रगति पर असंतोष जताते हुए डीसी निर्देश दिया कि तय समय सीमा में कार्य पूर्ण करना सुनिश्चित करे। कोयनारा बहु ग्रामीण जलापूर्ति योजना की प्रगति पर उपायुक्त द्वारा निर्देश दिया गया कि कार्य में तेजी लाये और तय समय में कार्यों को पूर्ण करें। स्वच्छ भारत मिशन ग्रामीण, खूंटी के प्रगति पर जिला समन्वयक द्वारा बताया गया कि अब तक 21 ग्रामों को फाइव स्टोर मॉडल श्रेणी में लाया जा चुका है। उपायुक्त द्वारा निर्देश दिया गया कि अबुआ आवास में शौचालय की इंट्री संबंधित प्रखण्ड में स्वीकृत सूची के अनुरूप पूर्ण किया जाये।

अरविंद केजरीवाल की गिरफ्तारी के विरोध में आप ने निकाला पैदल मार्च

रांची : आम आदमी पार्टी (आप) की ओर से अरविंद केजरीवाल के गिरफ़्तारी और उनके स्वास्थ्य के साथ हो रहे खिलवाड़ को लेकर मंगलवार को रांची में जयपाल सिंह मुण्डा स्टेडियम से लेकर अल्बर्ट एक्का चौक तक पैदल मार्च निकाला गया। इसके बाद विरोध प्रदर्शन किया गया। विरोध प्रदर्शन का नेतृत्व आप के वरिष्ठ नेता अजय भगत ने की। प्रदर्शन की अध्यक्षता राजेश लिंडा ने किया। पार्टी के वरिष्ठ नेता हरी सिंह ने संवाददाताओं से बातचीत में कहा कि देश में आम आदमी पार्टी का लहर चल रहा है, जिसको देख कर भाजपा की केंद्र सरकार केजरीवाल से डरी हुई है। इसलिए अरविन्द केजरीवाल को जेल में डाल रखा है। मौके पर अजय भगत ने कहा की अरविन्द केजरीवाल को जान बुझ कर बेहतर ईलाज उपलब्ध नहीं कराया जा रहा है। अगर केजरीवाल को जल्द से जल्द जेल से रिहा नहीं किया जाता है तो हमलोग केंद्र सरकार के खिलाफ जोरदार आंदोलन करेंगें। राजेश लिंडा ने कहा कि देश में ताना शाही नहीं चलने दिया जायेगा।

भाजपा सांसद निशिकांत दुबे के बयान का झामुमो ने किया विरोध

भाजपा झारखंड को तोड़ना चाहती है : राजेंद्र सिन्हा

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

मेदिनीनगर (पलामू) : भाजपा सांसद निशिकांत दुबे द्वारा लोकसभा में झारखंड राज्य के अभिन्न अंग संथाल-परगना, बिहार एवं पश्चिम बंगाल के कुछ जिलों को मिलाकर केंद्र शासित प्रदेश बनाने के संबंध में दिए गए बयान के विरोध में झामुमो पलामू ने विरोध प्रदर्शन किया। इस प्रदर्शन का नेतृत्व झामुमो पलामू के अध्यक्ष राजेंद्र प्रसाद सिन्हा ने किया। निशिकांत दुबे के इस बयान को झामुमो ने झारखंड विरोधी बयान बताया है और पूरे झारखंड में झामुमो इसका विरोध उग्र तरीके से कर रही है। पूरे झारखंड में निशिकांत दुबे के बयान की निंदा हो रही है। झामुमो अध्यक्ष राजेंद्र सिन्हा ने कहा निशिकांत दुबे द्वारा झारखंड तोड़ने की बात सांसद में कहना दशार्ता है कि भाजपा की मंशा झारखंड के टुकड़े करने की है। भाजपा और उसके बाहरी सांसद को माफी मांगनी चाहिए। झारखंड हमारे पूर्वजों और आंदोलनकारियों के कुर्बानियों के बाद मिला है, हजारों लोग शहीद हुए तब जा कर झारखंड बना है, अब भाजपा उसके टुकड़े करना चाहती है। झामुमो ने झारखंड को बनाया है तो झामुमोझारखंड को बचाना भी जानती है। भाजपा के इस झारखंड विरोधी चाल को झारखंड की जनता समझ चुकी है, झारखंड में भाजपा कभी सत्ता में नहीं आने वाली है। देश के लोगों में फूट डालने की राजनीति करते करते ये अब झारखंड को तोड़ने में लग गए हैं। मुख्यमंत्री हेमन्त सोरेन जी आंदोलनकारी और लड़ कर झारखंड को अलग करने वाले दिशोम गुरु शिबू सोरेन जी के पुत्र हैं, वो झारखंड को टूटने नहीं देंगे। इस कार्यक्रम में सचिव सन्नूसिद्धिकी, केंद्रीय समिति सदस्य संजीव तिवारी, सुनील तिवारी, मुन्ना सिन्हा कोषाध्यक्ष रमेश सिंह उपाध्यक्ष राकेश सिन्हा, असफर रब्बानी, कमाल खान वरिष्ठ नेता देवेंद्र तिवारी, हाजी ललन, शाहनवाज बबलू, कलाम नेता नगर अध्यक्ष रंजीत जयसवाल, अध्यक्ष सुशीला मिश्रा, महिला मोर्चा सचिव संजू देवी, कोषाध्यक्ष राजिया नियाजी, महिला मोर्चा नगर अध्यक्ष कांति चंद्रवंशी, मंजू देवी संगठन सचिव अनुराग प्रताप सिंह, अल्पसंख्यक मोर्चा अध्यक्ष फजैल भाई व्यावसायिक मोर्चा अध्यक्ष दीपू चोरिसिया युवा मोर्चा उपाध्यक्ष बबलू चौधरी, मुकेश चौधरी, संगठन सचिव कृष्ण कन्हैया दुबे, संजय चंद्रवंशी, कोषाध्यक्ष देवानंद भारद्वाज, सिद्धांत पांडेय, सुमित सोनी, राहुल कुमार, अल्पसंख्य कनगर अध्यक्ष सोनम खान, छात्र मोर्चा अध्यक्ष कौशल किशोर, सचिव सैयद फैजल सहित सैकड़ों झामुमो के कार्यकर्ता उपस्थित थे।

रामगढ़ में चौकीदार बहाली की फिजिकल में सफल हुए 58 अभ्यर्थी

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

रामगढ़ : जिले में चौकीदार बहाली की लिखित परीक्षा के बाद मंगलवार को शारीरिक दक्षता परीक्षा भी संपन्न हो गई। फिजिकल एक्जाम में कल 248 अभ्यर्थियों का चयन हुआ था। जिनमें से 58 अभ्यर्थी ही सफल हुए हैं। मंगलवार की शाम डीसी चंदन कुमार ने खुद सफल अभ्यर्थियों की सूची आधिकारिक वेबसाइट www.ramgarh.nic.in पर जारी कर दी है। सफल सभी अभ्यर्थियों का फोटोग्राफ भी वेबसाइट पर अपलोड कर दिया गया है। चौकीदार बहाली के तहत 28 जुलाई को हुई लिखित परीक्षा के परिणाम के आधार पर कुल 248 अभ्यर्थियों का शारीरिक दक्षता परीक्षा के लिए चयन किया गया था। जिसमें 21 बच्चे शारीरिक जांच के दौरान अयोग्य पाए गए। वहीं 6 अभ्यर्थी दौड़ में अनुपस्थित रहे। इस तरह कुल 221 अभ्यर्थियों ने शारीरिक दक्षता परीक्षा में हिस्सा लिया। जिनमें 58 अभ्यर्थी 42 पुरुष एवं 16 महिलाएं शारीरिक दक्षता परीक्षा में सफल हुए।

डीसी चंदन कुमार ने बताया कि 28 जुलाई 2024 को हुई लिखित परीक्षा के परिणाम के संबंध में अगर किसी भी अभ्यर्थी को दावा आपत्ति हो तो 31 जुलाई 2024 संध्या 5:00 बजे तक जिला समाहरणालय अंतर्गत जिला सामान्य शाखा में आकर दावा आपत्ति दे सकते हैं। इसके लिए पूर्व में निर्धारित 500 रुपए के शुल्क को घटाकर 200 रुपए कर दिया गया है। वही सभी अभ्यर्थियों को यह भी सूचित किया गया है कि अगर किसी भी अभ्यर्थी का दावा आपत्ति से संबंधित आवेदन सही पाया जाता है तो उन्हें घबराने की जरूरत नहीं है, जिला प्रशासन द्वारा उनके लिए शारीरिक दक्षता परीक्षा का आयोजन 1 अगस्त 2024 प्रातः 6:00 बजे से रजरप्पा मुख्य मार्ग पर आयोजित किया जाएगा।

चिलदाग सोशो में आजसू पार्टी की हुई बैठक

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

अनगड़ा : खिजरी विधानसभा क्षेत्र अंतर्गत अनगडा प्रखंड के चिलदाग सोसो में आजसू पार्टी का ग्राम प्रभारी जन्मलाल मुंडा की अध्यक्षता में बैठक रखा गया। बैठक में मुख्य अतिथि केंद्रीय सचिव सह पूर्व प्रत्याशी पारसनाथ उराँव ने कहा खिजरी विधानसभा के हर पंचायत में चूल्हा प्रमुख का गठन हो गया है। अब 10,000 लोगों के साथ चुल्हा प्रमुख का शपथ ग्रहण समारोह की तैयारी पंचायत स्तर पर चल रहा है। इसी बीच पारसनाथ उराँव ने कहा इस बार आदिवासी दिवस में आजसू पार्टी द्वारा मैट्रिक में 80% से ऊपर लाने वाले स्कूल टॉपर छात्र छात्राओं को सम्मानित भी किया जायेगा। इस अवसर पर लूपुंग स्टेडियम पर कई खेल कूद कार्यक्रम भी किये जायेंगे। बैठक पर ग्राम प्रभारी शत्रुघ्न मुंडा, निकी मुंडा, राजेंद्र मुंडा, मतला मुंडा, राजेन मुंडा, जेठुआ मुंडा, शांति देवी, बेने देवी, मीना देवी, रुबीना देवी, बालको देवी, प्रमिला देवी, राजो देवी, बुधनी देवी आदि लोग मौजूद रहे।

प्रेम विवाह के बाद रुकसाना बानो की संदिग्ध मौत, हत्या का आरोप

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

पलामू : जिले के हुसैनाबाद नगर पंचायत के झाझागोदाम (खगड़िया मुहल्ला) निवासी रुकसाना बानो (23) की मंगलवार को संदिग्ध परिस्थितियों में मौत हो गई है। रुकसाना के पति राजा उर्फ मिराज राइन और उनके परिवार का कहना है कि रुकसाना ने फांसी लगाकर आत्महत्या की है। दूसरी ओर, रुकसाना के मायके वालों ने ससुराल पक्ष पर हत्या का आरोप लगाया है। प्राप्त जानकारी के अनुसार रुकसाना बानो का मायका हुसैनाबाद थाना क्षेत्र के ऊपरी कला में है। मृतका का पति जपला बाजार में सब्जी बेचने का व्यवसाय करता है। उन्होंने करीब एक साल पहले ही प्रेम विवाह किया था, जिसके चलते उनके संबंधों में पहले से ही तनाव की स्थिति बताई जा रही है। घटना के बाद रुकसाना के शव का पोस्टमार्टम हुसैनाबाद अनुमंडलीय अस्पताल में कराया गया और शव को परिजनों को सौंप दिया गया। इस दुखद घटना की सच्चाई जांच के बाद ही सामने आ पाएगी कि यह आत्महत्या थी या हत्या, पुलिस द्वारा इस मामले की गहन जांच की जा रही है ताकि सच सामने आ सके और दोषियों को सजा मिल सके। इस मामले ने स्थानीय मुहल्ले में सनसनी फैला दी है। रुकसाना की मौत ने प्रेम विवाह और उससे जुड़ी सामाजिक चुनौतियों पर भी सवाल खड़े कर दिए हैं। अब सभी की निगाहें पुलिस जांच और न्यायिक प्रक्रिया पर टिकी हैं। हालांकि समाचार लिखे जाने तक घटना से संबंधित किसी ने आवेदन नहीं दिया है।

मै कोयल पुल का नाम पूरनचंद सेतु कर धन्य हुई : अरुणा शंकर

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

मेदिनीनगर (पलामू) : मंगलवार को एकीकृत बिहार के गांधी कहे जाने वाले पिछड़ों के मसीहा स्वर्गीय पुरनचंद की पुण्यतिथि पर प्रथम महापौर अरुणा शंकर ने मुख्य बाजार एवं चैनपुर मैं लगे स्वर्गीय पुरनचंद की प्रतिमा पर माल्यार्पण करते हुए। उनकी यादों में कही स्वर्गीय पुरानचंद जिन्हें पांच बार डाल्टनगंज भंडारिया विधानसभा का प्रतिनिधित्व करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। जिन्हें एकीकृत बिहार में कैबिनेट मंत्री भी रहने का अवसर मिला। लेकिन अंतिम समय तक ना वो अपना लिए एक वाहन खरीद सके ना ही एक मकान बना सके। इसलिए उनकी पहचान बन गई थी। घसीटा साव का कोठा, धर्मशाला का लोटा और पिंटू होटल का ओटा शंकर ने कहा उनके काफी नजदीक रहे कयूमरुबाणी चाचाजी ने मुझे बताया था। वह इतने लोकप्रिय थे। उनका चुनाव का गाना था बरगद का प्रचार रस्तेरस्ते, पूरण जी का प्यार रस्तेरस्ते और प्रचार के क्रम वह एक वोट एक नोट मांगा करते थे। जो उन्हें मिलता भी था शंकर ने कहा उनकी सबसे बड़ी उपलब्धि कोयल पुल था। जिसका नामकरण मैंने अपने समय में बोर्ड से पारित कर पुरनचंद सेतु कर अपने आप को धन्य समझती हूं । शहर का मुख्य ओवरब्रिज, पलामू एक्सप्रेस, सोकरा माइंस खुलवाने का भी श्रेय उन्हीं को जाता है उन्होंने उस वक्त भंडारिया जैसे गांव में पलामू का पहला रेफरल अस्पताल खुलवाने का श्रेय उनके खाते में है। इस अवसर पर माल्यार्पण करने पूर्व कैबिनेट मिनिस्टर श्री रामचंद्र केसरी स्वर्गीय पुरणचंद के पोते अभिजीत कुमार, पुरनचंद ट्रस्ट के अध्यक्ष महेश प्रसाद, प्रोफेसर युगल किशोर प्रसाद एवं काफी संख्या में लोग उपस्थित थे।

मुख्यमंत्री मंईयां सम्मान योजना के लाभुकों के चयन को लेकर तीन से पंचायतों में लगेगा शिविर

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

मेदिनीनगर (पलामू) : महिला आत्मसम्मान को बढ़ावा देने के उद्देश्य से झारखंड मुख्यमंत्री मंईयां सम्मान योजना के तहत 21 से 50 वर्ष की महिलाओं को रोजमर्रा की जरूरतों को ध्यान में रखते हुए प्रतिमाह 1000 की आर्थिक सहायता प्रदान की जानी है। प्रत्येक माह की 15 तारीख तक सरकार बहनों के एकल लिंक्ड बैंक खाते में राशि क्रेडिट करेगी। यह सरकार की बेहद ही हत्वाकांक्षी योजना है आप सभी पदाधिकारी यह सुनिश्चित करें कि आपके क्षेत्र अंतर्गत कोई भी लाभुक इस योजना के लाभ से वंचित न रह पाये।यह निर्देश उपायुक्त शशि रंजन ने मंगलवार को समाहरणालय के सभाकक्ष में आयोजित जिला समन्वय समिति की बैठक में सभी पदाधिकारियों को दिया। पायुक्त ने कहा कि योजना से लाभुकों को जोड़ने के लिए आगामी 3 से 10 अगस्त तक पंचायत स्तरीय शिविरों का आयोजन होना है। शिविरों के सफल संचालन के लिए सभी जरूरी कार्य समय पर निष्पादित और योजना का व्यापक प्रचार झ प्रसार सुनिश्चित करने का निर्देश दिया है। उन्होंने कहा कि सरकार की यह महत्वपूर्ण योजना है। योजना का लाभ लेने से एक भी योग्य महिला नहीं छुटे तथा शिविर सुचारू रूप से चले इसलिए कार्यशाला का आयोजन कर सभी को आवश्यक दिशा निर्देश दिए हैं साथ ही सीएससी मैनेजर को डाटा इंट्री का प्रशिक्षण और उसका डेमो देने, शिविरों में पर्याप्त संख्या में वीएलई की प्रतिनियुक्ति करने का निर्देश दिया है। सहायक निदेशक सामाजिक सुरक्षा विक्रम आनंद ने कहा कि योजना के लिए आंगनबाड़ी के माध्यम से निःशुल्क आवेदन पत्र उपलब्ध कराया जाएगा। इसका वितरण,जमा करने एवं स्वीकृति तक की सारी कार्रवाई निःशुल्क होगी। आंगनबाड़ी सहायिका, सेविका अपने - अपने क्षेत्र के घर - घर जाकर 21 से 50 वर्ष की महिलाओं को चिन्हित कर आवेदन उपलब्ध कराएंगे।

पंचायत स्तरीय शिविर लगेगा

लाभुकों को आवेदन जमा करने के लिए पंचायतों में लगने वाले शिविर में आना होगा। आवेदनों को पोर्टल में इंट्री करने के लिए वीएलई रहेंगे। आवेदन के स्वीकृति पदाधिकारी के रूप में अधिकृत बीडीओ/सीओ आवेदनों का सत्यापन तीन दिनों के अंदर करके स्वीकृति प्रदान करेंगे।

क्या है योजना

झारखंड मुख्यमंत्री मंईयां सम्मान योजना महिला आत्म सम्मान को बढ़ावा देने के लिए सरकार का एक कारगर कदम है। इसमें 21 से 50 वर्ष की महिलाओं को रोजमर्रा की जरूरत को ध्यान में रखते हुए 1000 प्रतिमाह की आर्थिक सहायता प्रदान की जाएगी। प्रत्येक माह की 15 तारीख तक सरकार बहनों के एकल लिंक्ड बैंक खाते में राशि क्रेडिट करेगी।

किसे मिलेगा लाभ

लाभुकों के लिए पात्रता को सरल रखा गया है। आवेदिकाझारखण्ड की निवासी हों उनकी आयु 21 वर्ष से अधिक एवं 50 वर्ष से कम हो। आवेदिका का आधार लिंक्डसिंगल (एकल) बैंक खाता हो। जिनका बैंक खाता आधार लिंक्ड नहीं है वे भी योजना का लाभ दिसंबर - 2024 तक उठा सकतीं हैं। मतदाता पहचान पत्र और आधार कार्ड हो। आवेदिका का परिवार झारखण्ड राज्य के अंत्योदय अन्न योजना (पीला राशन कार्ड), पूर्ववित्का प्राप्त गृहस्थ कार्ड (गुलाबी राशन कार्ड)/केरोसिनओइल राशन कार्ड (सफेद राशन कार्ड)/हरा रंग का पृथक राशन कार्ड धारी हो।

संक्षिप्त खबरें

स्वतंत्रता दिवस की तैयारी को लेकर बैठक पुलिस लाइन स्टेडियम में होगा मुख्य समारोह

मेदिनीनगर (पलामू) : मेदिनीनगर नगर आयुक्त जावेद हुसैन व उप विकास आयुक्त शब्बीर अहमद ने मंगलवार को समाहरणालय स्थित सभागार में आगामी 15 अगस्त 2024 को स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर जिला में आयोजित होने वाले मुख्य कार्यक्रम की तैयारियों पर चर्चा की। स्वतंत्रता दिवस का मुख्य कार्यक्रम का आयोजन पुलिस लाइन केंद्र मेदिनीनगर में प्रातः 9:05 बजे होगा। इसके बाद पलामू प्रमंडलीय आयुक्त कार्यालय, जिला समाहरणालय, नगर निगम,सहित जिले के समस्त कार्यालय, सदर अनुमंडल कार्यालय, जिला परिषद कार्यालय एवं रेडक्रॉस सोसाइटी परिसर में झंडोत्तोलन किया जाएगा। परेड में अर्धसैनिक बलों की अलग-अलग टुकड़ियां शामिल होगी। नगर आयुक्त ने स्टेडियम में कार्यक्रम को लेकर बेहतर व्यवस्था करने के निर्देश दिए। वहीं सड़कों पर बैरिकेडिंग व मेडिकल टीम के तैनाती सहित विभिन्न बिंदुओं पर चर्चा की। बेहतर परेड के लिए टुकड़ियों को सम्मानित भी किया जाएगा समारोह को लेकर पुलिस लाइन स्टेडियम सहित शहर के सभी चौक-चौराहों पर स्थापित प्रतिमाओं व मूर्तियों की साफ सफाई करने का निर्णय लिया गया। मौके पर विभिन्न विभागों के पदाधिकारी उपस्थित रहे।

ज्योति आईटीआई में टाटा मोटर्स ने अप्रेंटिसशिप का किया आयोजन

मेदिनीनगर (पलामू) : कांदू मोहल्ला मेदनी नगर स्थित ज्योति आईटीआई में देश के प्रमुख कंपनी टाटा मोटर्स जमशेदपुर द्वारा अप्रेंटिसशिप का आयोजन किया गया। जिसमें आईटीआई उत्तीर्ण पलामू प्रमंडल व निकटवर्ती कई जिलों के लगभग 400 प्रशिक्षणार्थियों ने साक्षात्कार में भाग लिया। जिसमें 120 प्रशिक्षणार्थियों का टाटा मोटर्स जमशेदपुर में अप्रेंटिसशिप के लिए चयन किया गया। कंपनी के साक्षात्कार अधिकारियों ने ज्योति आईटीआई के प्रशिक्षणार्थियों और संस्थान के अनुदेशक गण की सराहना करते हुए कहां की यहां के अनुशासन, कार्य व्यवस्था और पूरे संस्थान का मैनेजमेंट बहुत ही सराहनीय है। यहां के प्रशिक्षणार्थियों की जानकारी और गुणवत्ता इंडस्ट्रियल ट्रेनिंग के लिए अति उत्तम है। मौके पर उपस्थित संस्थान के सचिव ज्योति पांडे ने बताया की अप्रेंटिसशिप बच्चों को जीवन की वास्तविक दुनिया का अनुभव प्राप्त करने का अवसर प्रदान करता है। इससे प्रशिक्षणार्थियों को अपने चुने हुए क्षेत्र में सीधे काम करने का अनुभव प्राप्त होता है। आईटीआई करने के उपरांत प्रैक्टिकल ज्ञान और कौशल को निखारने में अप्रेंटिसशिप महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। साथी ही नौकरी के अवसर भी खुल जाते हैं एक फ्रेशर से अनुभवी व्यक्ति के रूप में जाने जाते हैं। पांडे ने कहा कि हमारा उद्देश्य बच्चों को गुणवत्तापूर्ण ट्रेनिंग देने के साथ-साथ छात्रों को रोजगार और अप्रेंटिसशिप देने वाले कम्पनी से लगातार जोड़ना भी है। कार्यक्रम को संपन्न कराने में संस्थान के प्लेसमेंट सेल अधिकारी मनोरथ चौधरी का महत्वपूर्ण योगदान रहा। प्रियरंजन सिंह, उमेश कु. शर्मा, पंकज कु.ठाकुर, अमीत कुमार, आशीष कुमार आदि संस्थान के सभी अनुदेशकगण का महत्वपूर्ण योगदान रहा।

पांकी विधानसभा में राजद नेता डॉ. अरुण कर रहे धुआंधार प्रचार

पांकी(पलामू) : पांकी विधानसभा में आगामी 2024 विधानसभा चुनाव के मद्देनजर राष्ट्रीय जनता दल के डॉ. अरुण कुमार ने राजद को मजबूत करने के लिए अपना चुनावी अभियान काफी तेज कर दिया है। डॉ. अरुण एक दिन में विभिन्न प्रखंडो, पंचायत और गावों में 5-6 सभा आयोजित कर लोगो को अपने रोजी रोजगार और हक अधिकार के लिए लगातार जागरूक करने का काम कर रहे। डॉ. अरुण 24 घण्टे अपने विधानसभा में लगातार हाजिर रहते है। ये विभिन्न कार्यक्रम का आयोजन कर जनता के बिच अपनी बातें रखने का काम करते हुए कहते है की जनता अगर उनको इस बार जीता कर विधानसभा भेजती है तो बदहाली से विकास तक पहुँचाने का काम करेंगे। डॉ. अरुण विभिन्न कार्यक्रम और सभाओं करने के दौरान गरीब असहाय लोगो के बीमारियों का मुफ्त जाँच और दवाई देने का भी काम करते है। डॉ. अरुण ने लेस्लीगंज और सतबरवाप्रखंड के लोटवा, चांपी, चपरना, घुटवा, पिंडरा, सेरंगदाग का दौरा और सभा किया।

जयराम प्रपरनाचार्य जी महाराज की 17वीं पुण्य तिथि पर भंडारा का हुआ आयोजन

गुमला : ब्रह्मलीन रामरेखा बाबा जयराम प्रपरनाचार्य जी महराज की 17वी पुण्य तिथि विशाल भण्डारा के साथ समिति के अध्यक्ष द्वारिकाधीश बनारस के महन्त अखण्ड दास जी महराज की देखरेख मे सम्पन्न हुआ। इस पुण्य तिथी पर 24 घन्टे का अखण्ड कीर्तन सन्तो के द्वार प्रवचन। हवन किया गया। तत्पश्चात भणडारे का आयोजन हुआ जिसमे आस पास के हजारो भक्त गण सप्रेम प्रसाद ग्रहण किए।

गुमला में युवक को गुप्तांग में मारी गोली आरोपी फरार

गुमला : गुमला जिला अंतर्गत स्थित पालकोट थाना के अंबेराडीह ग्राम निवासी एक युवक विपिन सिंह (पिता - मदन सिंह) ने गुमला सदर अस्पताल में पत्रकारों को बताया की मेरे ही गांव के अभिषेक पांडे (पिता -भवानी पांडे) ने मुझे उस वक्त गुप्तांग में गोली मारी जब मैं गांव के बगीचा में अकेले बैठा हुआ था। उसी वक्त वह पैदल आया और बिना कुछ बोले हुए उसने मेरे गुप्तांग में एकाएक गोली दी और मुझे गोली मरने के बाद मुझे नदी के तरफ ले गया जहां उसकी दादी का अंतिम संस्कार हो रहा था। इसी क्रम में दाह संस्कार में गांव के ग्रामीण लोग जमा हो गए और मुझे इलाज के लिये गुमला सदर अस्पताल लाया गया। सदर अस्पताल के डॉक्टरों ने बताया हैं की स्थिति गंभीर हुई तो विपिन सिंह को बेहतर इलाज के लिये रांची रिम्स रेफर किया जा सकता हैं। ज्ञातव्य हैं की गोली चलाने वाले अभिषेक पांडे की दादी लीलावती देवी का देहांत हो गया है और उसका अंतिम संस्कार चल ही रहा था। इसी क्रम में अभिषेक पांडे ने विपिन सिंह के गुप्तांग में गोली मार कर गंभीर रूप से घायल कर दिया। गोली कांड की जानकारी गुमला सदर थाना पुलिस को दे दी गई हैं ।

एक नजर

कीटनाशक खाने से रामपुर दियारा निवासी युवक हुआ मूर्छित

साहिबगंज : मुफस्सिल थाना क्षेत्र के रामपुर दियारा निवासी सोहन कुमार उम्र 19 वर्ष पिता कैलाश महतो ने कीटनाशक दवाई खा लेने से मूर्छित हो गया। उधर घटना के फौरन बाद परिजनों ने आनन फानन में उसे बेहतर इलाज के लिए सदर अस्पताल साहिबगंज लेकर आए जहां ड्यूटी पर तैनात चिकित्सक डॉ. मुकेश कुमार के देखरेख में इलाज किया गया। इसको लेकर परिजनों ने बताया की अपने खेत में लगे परवल को व्यापारी को बेचकर घर वापस आया जहां व्यापारी ने परवल का पैसा नही दिया एवं घर की माली हालत ठीक नहीं रहने के कारण युवक ने गुस्से में आकर कीटनाशक दवाई खा लिया। उधर खबर लिखे जाने तक सोहन कुमार का सदर अस्पताल में इलाज जारी था जहां वो खतरा से बाहर बताया जा रहा है।

समाज सेवी तुफान महथा ने सदर अस्पताल में उपलब्ध व्यवस्थाओं का किया निरीक्षण

देवघर : समाजसेवी भाजपा नेता तुफान महथा मंगलवार को सदर अस्पताल का औचक निरीक्षण किया। तुफान महथा ने एकाएक सदर अस्पताल पहुंचकर अस्पताल में इमरजेंसी के दौरान मरीजों को मिलने वाली सुविधाओं से अवगत हुए। निरीक्षण के दौरान उन्होंने महिला वार्ड, पुरुष वार्ड,ओपीडी आदि का जायजा लिया। इस दौरान उन्होंने अस्पताल में भर्ती मरीजों से भी पूछताछ किया। मरीजों को मिलने वाली सुविधाओं की जानकारी लिया।साथ ही अ उनका कुशल क्षेम जाना और उन्हें मिल रही सुविधाओं की जानकारी ली।साथ ही व्यवस्था में सुधार हेतु सिविल सर्जन से बात की मौके पर संजीव झा अभय चौधरी परमेश राव आदि मौजूद थे।

जनता दरबार लगाकर उपायुक्त आम जनों की समस्याओं से हुए अवगत

साहिबगंज : आमजन की सुनवाई में कोई पदाधिकारी कोताही न बरतें समाहरणालय स्थित अपने कार्यालय प्रकोष्ठ में उपायुक्त हेमंत सती ने जनता दरबार के माध्यम से आमजनों की समस्याएं सुनी।जनता दरबार में जिले के शहरी तथा ग्रामीण क्षेत्रों के लोगों ने अपनी समस्याओं से उपायुक्त को अवगत कराया। उपायुक्त ने उपस्थित राजेश हेंम्ब्रम, मोङ्ग इमरान खान, मुशेद सेख, मोङ्ग जाकीर अंसारी, एवं अन्य लोगों से एक-एक कर उनकी समस्याएं सुनी। साथ ही उनके सामाधान को लेकर उन्हें आश्वस्त कराया।जनता दरबार में शिकायतकर्ता की समस्याएं को सुनने के पश्चात उपायुक्त ने संबंधित विभाग के पदाधिकारियों को उनका समाधान करने को लेकर निर्देशित किया। सभी आवेदनों की भौतिक जांच करते हुए उसका समाधान जल्द से जल्द सभी संबंधित पदाधिकारियों को निर्देशित किया कि शिकायतों पर त्वरित कार्रवाई करते हुए प्रतिपुष्टि उपायुक्त कार्यालय को समर्पित करें।

झामुमो ने निकाली विशाल रैली, बाबूलाल अमर बाउरी व निशिकांत का फूंका पुतला

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

साहिबगंज : झारखंड के संथाल परगना व बंगाल, बिहार के कुछ जिलों को मिला कर केंद्रीय शासित प्रदेश बनाने के गोड्डा सांसद निशिकांत दूबे के बयान के विरोध में मंगलवार को झामुमो ने शहर के रेलवे जेनरल इंस्टिट्यूट से विशाल रैली निकाल प्रदर्शन किया,इसका नेतृत्व जिला अध्यक्ष शाहजहां अंसारी ने किया। रैली स्टेशन चौक, पटेल चौक, बाटा चौक, गांधी चौक, चौक बाजार, बड़ी धर्मशाला चौक, एलसी रोड, बादशाह चौक, पटेल चौक होते हुए समाहरणालय पहुंचा। यहां झामुमो ने भाजपा नेता अमर बाउरी, बाबूलाल मरांडी व निशिकांत दुबे का पुतला दहन किया। वहीं सभा को संबोधित करते हुए मुख्य अतिथि झामुमो के केंद्रीय प्रवक्ता सह पूर्व मंत्री हेमलाल मुर्मू ने कहा कि भाजपा की डबल इंजन की सरकार जब झारखंड में थी तो उस वक्त बांग्लादेशी घुसपैठियों को क्यों नहीं रोका गया। बांग्लादेशी घुसपैठ न कर सके इसके लिए क्यों नहीं कुछ किया गया। उन्होंने कहा कि बंगला देशी घुसपैठ भाजपा सरकार का सिर्फ चुनावी जुमले बाजी है। जब जब चुनाव का समय झारखंड में आता है तब-तब इन्हें बांग्लादेशी घुसपैठियों का मुद्दा दिखने लगता है। उन्होंने कहा कि भाजपा आदिवासियों की जनसंख्या घटने की बात कह रही है। ऐसे मामलों में संवैधानिक तौर पर यहां मौजूद राज्यपाल राष्ट्रपति को रिपोर्ट कर सकते थे, राष्ट्रपति केंद्र सरकार को संज्ञान लेने कहते हैं,मामला पूरी तरह केंद्र सरकार का है।अगर जनसंख्या घट रहा है तो 11 वर्षों से प्रधानमंत्री मोन क्यों बैठे हैं,लगता है ये सरकार बहरी है,अंधी है। ऐसे मामलों में कभी भी संवेदनशील नहीं रही,अगर यहां रोहंगिया व बांग्लादेशी मुसलमान हैं तो पिछले 5 सालों तक डबल इंजन की सरकार ने क्यों कुछ नहीं किया। जब सरकार में रहते हैं तो चुप हो जाते हैं। सरकार से जब जनता बाहर कर देती है तो आपको रोहिंग्या और बंगला देशी घुसपैठ की याद आती है,भाजपा मुद्दा विहीन हो गई है। वोट लेने के लिए यहां हिन्दू, मुस्लिम, आदिवासी, गैर आदिवासी को लड़ा कर वोट लेने की साजिश कर रही है,छात्रों को उकसाया जा रहा है। पाकूड़ के.के.एम. कॉलेज में जा कर उन्होंने देखा पुलिस ने बर्बरता की है। हेमंत सरकार की गठित जांच कमिटी ने रिपोर्ट समर्पित कर दी है। जिसके आधार पर कार्रवाई भी शुरू हो गई है,इसमें दोषियों को सरकार सजा देगी। हेमन्त सोरेन की सरकार संवेदनशील सरकार है,कहा कि जब हेमंत सोरेन का हाईकोर्ट से बेल होता है तो ईडी सुप्रीम कोर्ट जाती है। जहां सुप्रीम कोर्ट हेमंत सोरेन के बेल को सही ठहराती है। 5 महीनों तक हेमंत को जेल में रखा इसका हजार्ना कौन देगा। बाबूलाल मरांडी व निशिकांत दूबे को कान पकड़ पर उठना-बैठना और माफी मांगना चाहिए। 5 महीना किसी निर्दोष व्यक्ति को जेल में रखना संवैधानिक तौर पर गलत है। भाजपा अब बेनकाब हो गई है उसके पास अब कोई जवाब नहीं। सभा को जिला सचिव सुरेश टुडू, एमटी राजा, केंद्रीय समिति सदस्य प्रो नजरुल इस्लाम व अन्य ने संबोधित किया। वहीं मौके पर सांसद प्रतिनिधि संजीव सामू हेंब्रम, सुरेंद्र यादव, राजू अंसारी, राजाराम मरांडी, दिलावर रहमान, स्टीफन मुर्मू, सहित सैंकड़ों झामुमो कार्यकर्ता मौजूद थे।

संक्षिप्त खबरें

बेलटांड़ में दुर्गा पूजा समिति के शिविर में हुआ 66 यूनिट रक्तदान

पटमदा : पटमदा के बेलटांड़ चौक स्थित हालदार भवन में मंगलवार को श्री श्री सार्वजनिक दुर्गा पूजा समिति लावा (बेलटांड़) के तत्वावधान में आयोजित शिविर में 6 एसडीपी सहित 66 यूनिट रक्त संग्रह किया गया। इसमें प्रतीक संघर्ष फाउंडेशन एवं जमशेदपुर ब्लड सेंटर का सहयोग रहा। मौके पर रक्तदाताओं का हौसला अफजाई करने पहुंचे पूर्व जिप उपाध्यक्ष राजकुमार सिंह, समाजसेवी आस्तिक महतो, मुचीराम बाउरी, जुगल किशोर मुखी, स्वपन कुमार महतो ने आयोजक कमेटी के सदस्यों की प्रशंसा की। मौके पर मुख्य रूप से अध्यक्ष ईशान चंद्र गोप, महासचिव विजय कुमार मंडल, कोषाध्यक्ष जगदीश प्रसाद मंडल, मिहिर कुमार प्रमाणिक, डॉ. केपी दास, रांगा सिंह सरदार, शिशुपाल सिंह सरदार, संजय कुमार दास, राजू मंडल, माणिक हालदार, आदित्य हालदार, प्रदीप कुमार पैड़ा, कल्याण कुमार गोराई, उज्वल कांति दास, तापस हालदार, सुनील कुमार सहित कई लोग उपस्थित रहे।

भाजपा नेत्री नीलू मछुआ ने सर्प दंश से पीड़ित परिवार को दी सांत्वना

पटमदा : बोड़ाम प्रखंड के बेलडीह गांव निवासी विनोद सिंह की पत्नी रेवती सिंह की विगत सोमवार को सर्पदंश से हुई मौत के बाद उनके तीनों बच्चे असहाय महसूस कर रहे हैं। इसकी सूचना मिलते ही मंगलवार को भाजपा जमशेदपुर महानगर जिला मंत्री नीलू मछुआ ने उनके घर पंहुचकर पीड़ित परिवार को सांत्वना दी। वही पीड़ित परिवार के घर से मृतिका के पोस्टमार्टम रिपोर्ट के विषय में बोड़ाम थाना प्रभारी उपेंद्र सिंह से फोन पर वार्ता कर कागजी कार्यवाही में तेजी लाने का आग्रह किया। साथ ही तत्काल श्राद्ध कर्म के लिए पीड़ित परिवार को आर्थिक सहयोग किया।बिनोद सिंह को पत्नी की असामयिक निधन पर शोक व्यक्त करते हुए सरकार द्वारा सर्प दंश में मिलने वाले मुआवजा की राशि दिलाने में सहयोग करने का आश्वासन दिया।इस दौरान भाजपा नेता सनातन दास सहित कई ग्रामीण उपस्थित थे।

उपायुक्त ने किया कार्यालय का निरीक्षण

साहिबगंज : उपायुक्त हेमंत सती द्वारा आज प्रखण्ड सह-अंचल कार्यालय साहिबगंज का औचक निरीक्षण किया। निरीक्षण के दौरान संपूर्ण परिसर का जायजा लिया एवं आवश्यक दिशा निर्देश दिए। निरीक्षण के क्रम में उपस्थित सभी कार्यालय एवं कार्यों की जानकारी ली एवं पाया गया कि कार्यालय में कार्यरत कर्मी की उपस्थिति नहीं हो रही है। जिस पर उपायुक्त ने निराशा जताई निर्देशित करते हुए कहा स्वतंत्रता दिवस पूर्व पुरे परिसर की साफ सफाई को लेकर विशेष ध्यान दिया जाए। वही प्रखण्ड विकास पदाधिकारी एवं अन्य कर्मी के लिए बनाए जा रहे आवास का निरीक्षण किया गया। निरीक्षण के क्रम में उन्होंने ईट, बालू, सीमेंट, छड़, गिट्टी का जायजा लिया। जो निम्न गुणवत्ता का पाया गया, उपायुक्त ने तत्काल कार्य को रोकने एवं भवन निर्माण में लगाई जा रही सामग्री की गुणवत्ता परिक्षण के लिए निर्देशित किया गया। वहीं मौके पर प्रखण्ड विकास पदाधिकारी सुबोध कुमार एवं अन्य कर्मी उपस्थित रहे।

घर-घर नल जल योजना अधर में ग्रामीणों में पेयजल के लिए हाहाकार

पतना : प्रखंड में सरकार द्वारा संचालित तमाम योजनाओं का लाभ आम जनमानस एवं विशेष कर गरीब लोगों के हित में रखकर किया जाता है, लेकिन यदि ऐसे में इन तमाम योजनाओं का अधिकार गरीब तबके के लोगों को ना मिले तो कहीं ना कहीं कई सवाल खड़े होते हैं। बताते चलें कि पतना प्रखंड अंतर्गत शहरी ग्राम में पेयजल विभाग द्वारा हर घर नल जल योजना को अधर में छोड़ दिया गया है, जिससे स्थानीय ग्रामीणों के बीच पेयजल की भारी किल्लत उपस्थित हो गई है। गांव की एक स्थानीय महिला ने बताया कि गांव के तालाब में भी पानी सूख रहा है तथा भू जल स्रोत भी काफी नीचे जा चुका है जिसके कारण पेयजल की भारी किल्लत हो रही है ऐसे में यदि सरकार द्वारा संचालित नल जल योजना का भी लाभ यदि ग्रामीणों को ना मिले तो ऐसे में ग्रामीण जाएं तो जाएं कहां। पिछले 1 वर्षों से गांव में पेय जल विभाग द्वारा कार्य अधर में लटका हुआ है, कई बार मामले को अखबार द्वारा भी प्रकाशित कराया गया है लेकिन वरीय अधिकारियों के कान में जू तक नहीं रेंगती है। ऐसे में स्थानीय ग्रामीण पेय जल के लिए हाहाकार तथा त्राहिमाम कर रहे हैं।

डीडीसी ने पंचायत में लंबित आवासों एवं अबुआ आवास का किया औचक निरीक्षण

तालझारी : प्रखंड अंतर्गत उप विकास आयुक्त (डीडीसी) सतीश चंद्रा ने मंगलवार को तालझारी प्रखंड के भतभंगा पंचायत के विभिन्न गांव में 2021-2022 में दिए गए प्रधानमंत्री आवास योजना ग्रामीण(पीएमएवाई-आर) के तहत लंबित आवासों एवं अबुआ आवास का निरीक्षण किया। उन्होंने लाभुक भतभंगा पंचायत के लाभुक मंथुरीया उरांव जिसकी मृत्यु हो गई उसके पति लाभुक मुन्ना उरांव से बात कर अधूरा पड़े आवास पूरा नहीं होने का कारण पूछा। वहीं मुन्ना उरांव ने बताया कि चार माह पूर्व ही पत्नी का मृत्यु प्रमाण पत्र दे देने के बाद भी राशि नहीं मिला जिसके कारण आवाज पूर्ण नहीं कर पाया। इस बात पर डिडीसी ने आवास कोऑर्डिनेटर मो. इम्तियाज को फटकार लगाते हुए कहा की अभिलंब इसको राशि देकर आवास पूर्ण कराकर इसकी सूचना दें। वहीं लाभुक फुलसारी उरांव, पति स्वर्गीय पुसा एक्का एवं मोतिया उरांव को आवास निर्माण कार्य अविलंब पूरा करने को कहा। कहा कि किस्त का भुगतान कर दिया गया है,इसके बावजूद भवन निर्माण कार्य अधूरा है। सभी लाभुकों से कहा गया की आवास पूर्ण करें नहीं तो कार्रवाई करते हुए राशि रिकवरी की जाएगी। डीडीसी ने लाभुकों से बात कर आवास निर्माण कार्य नहीं करने के कारणों की भी पड़ताल की। उन्होंने आवास निर्माण शुरू कर अविलंब पूरा करने को कहा और कहा कि इसकी नियमित निगरानी की जाएगी। उन्होंने बीडीओ सालखु हेम्ब्रम, पीएमएवाई के जिला समन्वय आदि को नियमित निगरानी करने का निर्देश दिया।

सविता महतो ने विधानसभा में उठाया हाथियों के उपद्रव का मामला

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

ईचागढ़ : झारखंड विधानसभा के मानसून सत्र के शून्यकाल में ईचागढ़ के विधायक सविता महतो ने ईचागढ़ विधानसभा क्षेत्र के जंगली हांथी का मामला को रखा। इस दौरान विधायक ने सदन पर ईचागढ़ विधानसभा क्षेत्र के चांडिल, नीमडीह, कुकडू व ईचागढ़ प्रखंड जंगली हाथियों के आतंक से प्रभावित है एवं बेगुनाहों की जान माल, फसल अनाज तथा मकानों के क्षतिग्रस्त होने का सिलसिला जारी है। जिसपर रोकथाम पाने में विभाग द्वारा कोई ठोस पहल नहीं की जा रही है। यहां तक की वन विभाग के पास हाथियों को भगाने हेतु प्रशिक्षित दस्ता एवं पटाखा टोर्च की भी भारी कमी है। उन्होंने सदन के माध्यम से ईचागढ़ विधानसभा क्षेत्र के सभी प्रखंडों में पड़ोसी राज्य के तर्ज पर हाथियों की रोकथाम हेतु उनके प्रवेश सीमा पर वॉच टावर, सोलर तार फैसिंग लगाने तथा हाथियों से जान माल की रक्षा की मांग किया।

फाइलेरिया उन्मूलन को लेकर प्रखंड टास्क फोर्स की हुई बैठक

फाइलेरिया रोधी दवा का सेवन कर फाइलेरिया से बचा जा सकता है : बीडीओ

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

कुकडू : मंगलवार को कुकडू प्रखंड कार्यालय सभागार में प्रभारी प्रखंड विकास पदाधिकारी कीकू महतो की अध्यक्षता में राष्ट्रीय वेक्टर जनित रोग (फाइलेरिया) नियंत्रण कार्यक्रम के सफलता पूर्वक क्रियान्वयन को लेकर प्रखंड स्तरीय टास्क फोर्स की बैठक की गई। इस बैठक में कुकडू प्रखंड प्रमुख प्रतिमा वाला पातर, सीएचसी नीमडीह के प्रखंड कार्यक्रम प्रबंधक रामेश्वर तिर्की, एमपीडब्ल्यू दीपक कुमार महतो, शिक्षा विभाग के बीपीएम सुचित्रा महतो, आकांक्षी प्रखंड के फिलो सागर कुमार एवं कई मुखिया, पंचायत सचिव मौजूद रहे। बैठक में बताया गया कि फाइलेरिया विलोपन लक्ष्य की प्राप्ति के लिए जिला अंतर्गत सभी प्रखंडों के (01 वर्ष से कम उम्र के बच्चों गर्भवती महिला गंभीर रूप से बीमार व्यक्तियों) को छोड़कर डीईसी एल्बेंडाजॉल और आईमरमेक्टिन की एक खुराक 10 से 25 अगस्त तक खिलाई जायेगी। इस दौरान बीडीओ कीकू महतो ने कहा कि फाइलेरिया उन्मूलन अभियान में जन सहभागिता जरूरी है। साथ ही कहा कि जनप्रतिनिधि फाइलेरिया उन्मूलन कार्यक्रम के लिए जागरुकता अभियान चलाए। उन्होंने कुकडू प्रखंड वासियों से इस कार्यक्रम के दौरान फाइलेरिया विलोपन की दवा का सेवन करके स्वयं को फाइलेरिया से सुरक्षित एवं प्रखंड को फाइलेरिया मुक्त बनाने की अपील की।

मुख्यमंत्री मंईयां सम्मान योजना की जागरूकता को लेकर हुई बैठक

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

कुकडू : सरायकेला खरसावां जिला के कुकडु प्रखंड व ईचागढ़ प्रखंड कार्यालय के सभागार में मंगलवार को मुख्यमंत्री मईया सम्मान योजना का कार्यान्वयन हेतु बैठक कर जानकारी दिया गया। बीडीओ किकु महतो की अध्यक्षता में बैठक का आयोजन किया गया। मुख्यमंत्री मईया सम्मान योजना को लेकर प्रखंड क्षेत्र के पंचायत प्रतिनिधि,सचिव , आंगनबाड़ी सेविका, प्रज्ञा केंद्र के आपरेटरों को योजना का कार्यान्वयन के संबंध में जानकारी दिया गया। बीडीओ किकु महतो ने 21 से 50 वर्ष के महिलाओं को इस कल्याणकारी योजना शत प्रतिशत जोड़ने के संबंध में उपस्थित पंचायत प्रतिनिधियों आदि को जानकारी उपलब्ध कराया। उन्होंने इस योजना के लिए आनलाइन आवेदन हेतु 3 अगस्त से 10 अगस्त तक सभी पंचायत सचिवालयों में होने वाले कैम्प के संबंध में नियम व शर्तें भी साझा किया। बीडीओ श्री महतो ने बताया कि मुख्यमंत्री मईया सम्मान योजना का लाभ सभी योग्य लाभुको को मिले । जिसके लिए ईचागढ़ व कुकडु प्रखंड सभागार में बैठक कर इसका क्रियान्वयन से संबंधित जानकारी दिया गया। उन्होंने कहा कि एक दो दिनों के अंदर आवेदन प्रपत्र प्रखंड कार्यालय को प्राप्त हो जाएगा। उन्होंने कहा कि सभी लाभुको को आवेदन प्रपत्र ससमय उपलब्ध कराया जाएगा। उन्होंने कहा कि 21 से 50 वर्ष के महिला इसका लाभ ले सकते हैं।

बिना प्राक्कलन बोर्ड बनाए हो रहा करोड़ों की योजनाओं का निर्माण

मंडरो : साहिबगंज अनुमंडल के मंडरो प्रखंड अंतर्गत भगैया मुख्य पथ से कौड़ी खुटाना, कोहबारा गांव के रास्ते आरईओ विभाग से हो रहे सड़क मरम्मती कार्य योजना में बगैर प्राक्कलन का बोर्ड लगाए संवेदक के द्वारा नियम के विरुद्ध कार्य किया जा रहा है। कार्य स्थल पर प्राक्कलन से संबंधित बोर्ड नहीं लगाये जाने की वजह से लोगों को संबंधित योजना की जानकारी नहीं हो पा रही है। ऐसे में संवेदक मनमाना ढंग से कार्यों को अंजाम दे रहे हैं। जबकि बीते शनिवार को सड़क में घटिया किस्म का मटेरियल उपयोग करने के कारण कोहबारा गांव के दर्जनों से अधिक आदिवासी ग्रामीणों ने सड़क निर्माण कार्य को पूरी तरह रोक दिया था। इसकी सूचना संबंधित एक्सक्यूटिव और जेई को दिया था। कई लोगों ने बताया कि कार्य से पूर्व योजना से संबंधित बोर्ड लग जाने की स्थिति में लोग वहां हो रहे कार्यों की गुणवत्ता सहित अन्य चीजों को देखने लगते हैं।

लगातार हाथियों का कहर जारी जंगली हाथियों ने तोड़े कई घर

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

ईचागढ़ : सरायकेला खरसवाँ जिला के कुकडु प्रखंड क्षेत्र में हाथियों का उत्पात थमने का नाम नहीं ले रहा है। आए दिन जंगली हाथियों ने उपद्रव मचाते हुए घर,अनाज व खेतों में लगे फसलों को क्षतिग्रस्त कर रहे हैं। जान माल की सुरक्षा को लेकर ग्रामीण काफी परेशान हैं। क्षेत्र के विभिन्न जंगलों में हाथियों का झुंड डेरा जमाए हुए हैं। वहीं मंगलवार की अहले सुबह करीब ढाई बजे तिरुलडीह व सापारूम में जंगली हाथियों ने जमकर उत्पात मचाया। हाथी ने तिरूलडीह के कमल कोईरी व बानु कोईरी का घरों को तोड़कर क्षतिग्रस्त कर दिया वहीं घर में रखे चावल व धानों को अपना निवाला बनाया। वहीं सापारूम में शोभा महतो व संतोष महतो का घरों को भी काफी क्षतिग्रस्त कर अनाजों को चट कर गया। ग्रामीण मोहन कोईरी ने जानकारी देते हुए बताया कि करीब रात के 2 ढाई बजे तिरूलडीह उत्तर केविन के समीप में जंगली हाथियों का झुंड खुलेआम विवहारण कर रहे है इसी क्रम में एक जंगली हाथी गांव घुस कर कई घरों को तोड़फोड़ करते हुई क्षतिग्रस्त कर दिया एवं घर के अनाजो को खा गया। एक महीने के अंदर कुमारी, झापागोड़ा, दयापुर, तिरूलडीह आदि गांवों में करीब डेढ़ दर्जन घरों को हाथीयों ने तोड़फोड़ कर क्षतिग्रस्त कर दिया है।लगातार क्षेत्र में हाथियों के आतंक से डर का माहौल बना हुआ है।कब तक हथियो के आतंग से डर कर छिप कर रहेंगे, यहाँ के ग्रामीण हथियो के आतंक से परेशान हो चुके हैं । ग्रामीणों का सरकार से मांग है कि हाथियों का स्थाई समाधान किया जाय, ताकि हाथी से सुरक्षित रह सके।

साहिबगंज से खासमहाल की समस्या जल्द समाप्त हो : विष्णु जयसवाल

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

साहिबगंज : प्रखण्ड सह अंचल कार्यालय साहिबगंज के समक्ष झारखण्ड मजदूर संघ (प्र०) के नगर अध्यक्ष विष्णु कुमार जयसवाल के नेतृत्व में मजदूरों की समस्या एवं स्थानीय जनमुद्दे सहित 14 सूत्री मांगों को लेकर एक दिवसीय धरना दिया। धरना में मुख्य अतिथि के रूप में संगठन के केंद्रीय महामंत्री राजकुमार यादव मौजूद थे। धरना को सम्बोधित करते हुए नगर अध्यक्ष विष्णु कुमार जयसवाल ने कहा कि साहिबगंज प्रखण्ड क्षेत्र में गंगा कटाव, खास महल की समस्या, दियारा क्षेत्र में असर्वेक्षित जमीन की समस्या विकराल है। बेरोजगारी, पलायन, पत्थर क्षेत्र के मजदूरों को न्यूनतम मजदूरी से कम भुगतान होना मनमानी ढंग से छंटनी कर देना, जेसीबी मशीन उपयोग में लाना श्रम कानून का घोर उल्लघन होता हैं, जो जिला प्रशासन के लिए चिंतनीय एवं गंभीर विषय हैं। जयसवाल ने जिला प्रशासन से सभी समस्या को जल्द पूरा करने की मांग की है। धरना के बाद उपायुक्त के नाम प्रखण्ड कार्यालय कर्मी को मांग पत्र सौपा। वहीं मौके पर नगर अध्यक्ष विष्णु कुमार जयसवाल, केंद्रीय महामंत्री राज कुमार यादव, चंचल यादव, शंकर यादव, वर्णवास मरांडी, आयुष कुमार, सुमित ठाकुर, गोलू कुमार, सुभम कुमार, प्रशांत यादव, धर्मपाल किस्कू, अर्चना पांडेय,फूलकुमारी देवी सहित कई लोग मौजूद थे

मुख्य मांगे

साहेबगंज शहर को खास महल की समस्या से निजात दिलाई जाए। न्यूनतम मजदूरी अधिनियम 1948 को पूर्ण रूप से जिले के सभी प्रतिष्ठान में लागू किया जाए। प्रधानमंत्री रोजगार सृजन योजना लाभुकों को युद्ध स्तर पर पंचायतो में शिविर लगाकर बेरोजगारों को ऋण उपलब्ध कराया जाए। निजी प्रतिष्ठान में 75% स्थानीय बेरोजगारों को रोजगार दिया जाए। सकरीगली गंगा पम्प नहर योजना को किसान हित में काम को पुनः अविलम्ब चालू कराया जाए। मल्टी टर्मिनल जलमार्ग साहेबगंज(सकरीगली) अविलम्ब चालू कराया जाए। साहेबगंज मनिहारी फेरी सेवा को अविलम्ब चालू कराओ। अबुआ आवास योजना निर्माण में जाति के नाम पर परेशान करना बंद किया जाए। प्रखण्ड दियारा क्षेत्र के जमीन का सर्वे एवं सीमांकन अविलम्ब हो। गृह विहीन को भूमि बंदोबस्ती देकर प्रधानमंत्री आवास योजना का लाभ दिया जाय। किसानों के जमीन पर सिंचाई की समुचित व्यवस्था,डीप बोरिंग कराई जाए। मुख्यमंत्री पशुधन विकास योजना में धांधली बंद किया जाए। मनरेगा योजना के तहत युद्ध स्तर पर मजदूरों को जॉब कार्ड देकर रोजगार उपलब्ध कराई जाए। पत्थर उद्योग क्षेत्र में काम करने वाले मजदूरों का भुगतान बैंक खाता से किया जाए।

लापता 3 छात्राएं मिलीं, 2 की लोकेशन बंगाल पुलिस बोली-डांट के कारण भाग गई थीं

नालंदा। में एक स्कूल से लापता 5 छात्राओं में से 2 लड़कियां सोमवार की देर शाम घर वापस लौट आई थीं। 1 छात्रा को पुलिस मंगलवार की सुबह पटना से नालंदा लाई है। अब 2 लड़कियों की तलाश पुलिस कर रही है। बता दें कि नालंदा वापस आई तीनों लड़कियां पटना गई थीं। लेकिन फिलहाल, अभी ये क्लियर नहीं है कि तीनों लड़कियां एक साथ थीं या अलग-अलग। वहीं, जो 2 लड़कियां गायब है उनका लोकेशन मालदा बताया जा रहा है। सोमवार को घर वापस लौटने वाली छात्राओं की पहचान मनडाछ निवासी सुरेंद्र रविदास की बेटी चांदनी कुमारी और लाल बाग निवासी उपेंद्र कुमार की बेटी काजल कुमारी के रूप में हुई है। वहीं, मंगलवार की सुबह पटना से बरामद की गई लड़की की पहचान लालबाग निवासी सुरभी है। मंडाछ गांव निवासी राजनंदिनी और डौली का लोकेशन मालदा बताया जा रहा है। शुरूआत में इस मामले में लड़कियों के प्रेम-प्रसंग में घर से भागने की बात सामने आ रही थी। SHO नारद मुनि ने प्रारंभिक जांच में बताया कि कि मां-पिता की डांट फटकार के कारण तीनों लड़कियां घर से भाग गई थीं। फिलहाल पुलिस सभी एंगल से जांच कर रही है। मंदिर जाने के बहाने घर से भागी राजनंदनी रविवार को पूजा करने के लिए घर से निकली राजनंदनी के पिता मिथलेश कुमार ने बताया कि वह अपनी दोस्त डौली के साथ गांव के ही मंदिर में पूजा करने के लिए गई थी, जो वापस नहीं लौटी। काफी खोजबीन की गई बावजूद उसका कहीं अता-पता नहीं चल सका है।

संक्षिप्त डायरी

मानसून में सता रही गर्मी गोपालगंज का तापमान पहुंचा 40 डिग्री

पटना। जुलाई से ही बिहार की सीमा से मानसून का टर्फ लाइन बाहर है। इसकी वजह से प्रदेश में बारिश नहीं हो रही है। इससे लोग उमस भरी गर्मी से परेशान हैं। मौसम विभाग के अनुसार अगले दो दिन तक मौसम में ज्यादा बदलाव की संभावना नहीं है। वहीं, किसानों के लिए सबसे बड़ी मुश्किल पटवन को लेकर सामने आ रही है, क्योंकि कई जिलों में जलस्तर नीचे चला गया है। इसके कारण बोरिंग के पानी में प्रेशर नहीं है। हालांकि, मौसम विज्ञान केंद्र ने आज भी प्रदेश के 26 जिलों में हल्की बारिश का अलर्ट जारी किया है। मौसम वैज्ञानिक ने कहा कि प्रदेश में अब तक 35% कम बारिश हुई है। कई इलाकों में सुखाड़ की स्थिति बन रही है। अभी धान रोपाई का समय है। ऐसे में कम बारिश होना काफी चिंता का विषय है। बिहार के मौसम में अगले 48 घंटे के दौरान कोई खास परिवर्तन होने की संभावना नहीं है। कई जिलों में हल्की बारिश हो सकती है, लेकिन उमस भरी गर्मी से अभी राहत मिलने की उम्मीद नहीं है।

देश की पहली विधायक जो पेरिस ओलिंपिक में लगाएंगी निशाना

जमुई। से बीजेपी विधायक श्रेयसी सिंह का आज राजेश्वरी कुमारी के साथ क्वालीफाइंग मैच है। वह ओलिंपिक में भारत का प्रतिनिधित्व करने वाली देश की पहली विधायक हैं। श्रेयसी का चयन पेरिस ओलिंपिक के लिए भारतीय निशानेबाजी टीम में हुआ है। वह बिहार की पहली एथलीट हैं, जिन्होंने समर ओलिंपिक के लिए क्वालिफाई किया। उनका चयन शॉटगन ट्रैप शूटिंग के लिए हुआ है। इंटरनेशनल शूटिंग स्पोर्ट फेडरेशन (ISSF) से मंजूरी मिलने के बाद ट्रैप शूटर श्रेयसी सिंह को पेरिस ओलिंपिक के लिए अंतिम 21 सदस्यीय भारतीय शूटिंग टीम के हिस्से के रूप में आधिकारिक तौर पर शामिल किया गया। भारतीय संघ ने निशानेबाजी की विश्व संस्था से कोटा बदलने का आग्रह किया था। मनु भाकर एयर पिस्टल और स्पोर्ट्स पिस्टल दोनों में टॉप पर रही थीं। इसलिए उनका एक कोटा स्थान महिला ट्रैप निशानेबाजी में बदल दिया गया। जिससे श्रेयसी को टीम में जगह मिली। श्रेयसी अब राजेश्वरी कुमारी के साथ महिलाओं की ट्रैप स्पर्धा में भाग ले रही हैं। श्रेयसी के दादा कुमार सेरेंदर सिंह और पिता दिग्विजय सिंह दोनों नेशनल राइफल एसोसिएशन ऑफ इंडिया के अध्यक्ष थे। श्रेयसी बिहार के जमुई जिले के गिद्धौर की रहने वाली हैं। उनके पिता भी पूर्व केंद्रीय मंत्री थे। उनकी मां पुतुल कुमारी भी बिहार के बांका से पूर्व सांसद हैं। श्रेयसी दिल्ली के हंसराज कॉलेज में आर्ट्स की छात्रा थीं और मानव रचना इंटरनेशनल यूनिवर्सिटी, फरीदाबाद से एमबीए कर चुकी हैं।

पूरब बाजार में उलझे तार बांस बल्ले से हो रही बिजली आपूर्ति

बिहार। सहरसा नगर निगम के वार्ड-31 में उलझे तार एवं बांस-बल्ले के सहारे उपभोक्ताओं की विद्युत आपूर्ति उपलब्ध कराई जा रही है। यह इलाका पुरानी राइस मिल पूरब बाजार के नाम से जाना जाता है। यहां कभी भी बड़ी दुर्घटना होने की आशंका बनी रहती है। इलाके के लोगों ने कई बार विद्युत विभाग को झुके पोल पर उलझे तार और बांस बल्ले के सहारे विधुत आपूर्ति पर ध्यान दिलाने का प्रयास किया गया है। लेकिन अभी तक विभाग द्वारा संज्ञान नहीं लिया गया है। इसके कारण वार्ड में रहने वाले निवासियों को 3 वर्षों से परेशानी झेलनी पड़ रही है। नगर निगम क्षेत्र का पुरानी राइस मिल पूरब बाजार एक सघन आबादी वाला क्षेत्र है। इस इलाके में अधिकांश चिकित्सकों का क्लीनिक एवं कई शो रूम है, जहां दिन एवं रात में भी मरीज एवं उसके परिजनों सहित आम लोगों का जमावड़ा लगा रहता है। इस इलाके के एक चिकित्सक के क्लीनिक के पास एक झुका हुआ पोल से बांस बल्ले के सहारे लगभग दर्जन भर विधुत उपभोक्ताओं के यहां विद्युत की सप्लाई की जा रही है। आए दिन खासकर बरसात और आंधी तूफान में तार, पोल, बांस बल्ले पर अव्यवस्थित रूप से लटके तार के कारण विधुत चिंगारी, शॉर्ट सर्किट या तार टूटने की समस्या आती रहती है।
जिसके कारण सघन आबादी वाले क्षेत्रों में दुर्घटना की स्थिति बनी रहती है।

7.5 क्विंटल चावल से बाबा गरीबनाथ का महा श्रृंगार

बिहार। के देवघर कहे जाने वाले बाबा गरीबनाथ धाम में सावन महीने की दूसरी सोमवारी पर बड़ी संख्या में भक्तों की भीड़ जुटी। रात तक भोलेनाथ पर जल चढ़ाया गया। वहीं, सोमवार की रात बाबा गरीबनाथ का विशेष फल-फूल और 7.5 क्विंटल चावल से महा श्रृंगार किया गया। इसके बाद बाबा की महाआरती की गई। कोलकाता से बाबा का चांदी का मुकुट मंगाया गया है। ये प्रत्येक सोमवार को महा श्रृंगार में लगेगा। महा आरती में शामिल होने के लिए डीडीसी और अन्य हजारों की संख्या में शिव भक्त माजूद थे। बाबा के महा श्रृंगार को देखकर भक्त मंत्रमुग्ध हो गए। जय भोलेनाथ, बोल बम, बम बम भोले के नारे के साथ महा आरती की गई। इसके बाद बाबा को विशेष भोग लगाया गया। मंदिर के महंत अभिषेक पाठक ने बताया कि सावन कि दूसरी सोमवारी के उपलक्ष्य में फूल, फल और 7.5 क्विंटल चावल से बाबा गरीबनाथ का महा-श्रृंगार हुआ है। सबसे पहले दूध, दही, शक्कर और घी से स्नान करा कर इसके बाद चंदन का लेप लगाया गया। बाबा गरीबनाथ का श्रृंगार हर सोमवारी को अलग-अलग ढंग से होता है। एक प्रचलन बाबा गरीबनाथ के मंदिर से होता है, जो पूरे बिहार में फैलता है। पूर्णिमा के दिन बर्फ से बनते हैं शिवलिंग पहले बाबा बैद्यनाथ से होता था। अब बाबा गरीबनाथ से होता है। पहले सोमवारी को फूल, दूसरे सोमवारी को चावल, तीसरे सोमवारी को फल, चौथे सोमवारी को पान के पत्ता से श्रृंगार होता है।

मुजफ्फरपुर में पेड़ से लटका मिला यूट्यूबर का शव

मुजफ्फरपुर। में मंगलवार को एक युवक का शव पेड़ से बने फंदे से लटकता मिला है। घटना तुर्की थाना क्षेत्र की है। युवक यूट्यूबर था और वो न्यूज कवरेज करता था। मृतक की मां ने कुछ ग्रामीणों पर ही हत्या का आरोप लगाया है। इधर, घटना की सूचना के बाद पुलिस ने शव को पोस्टमॉर्टम के लिए भेजवा दिया है। युवक की पहचान छाजन निवासी स्वर्गीय उमेश लाल भगत का बेटा गौरव(21) के रूप में की गई है। युवक के पिता का देहांत हो चुका है। घर में वो अपनी मां इंदल देवी के साथ रहता था। इंदल देवी ने बताया कि गौरव के मोबाइल पर रात करीब 11 बजे किसी अज्ञात नंबर से कॉल आया। वो बोला-मैं थोड़ी देर में आता हूं। लेकिन इसके बाद काफी देर तक भी गौरव घर नहीं लौटा। घटना के बाद गौरव की खोजबीन शुरू की गई। लेकिन गौरव का कुछ पता नहीं चला। मंगलवार सुबह ग्रामीणों ने गाछी में गौरव के शव को पेड़ से लटका देखा। ग्रामीणों ने मामले की जानकारी गौरव की मां और तुर्की थाना की पुलिस को दी। पुलिस मौके पर पहुंची। जांच पड़ताल के बाद शव को पेड़ से नीचे उतारा गया। गौरव की मां इंदल देवी ने बताया कि गांव के ही कुछ लोगों ने गौरव को धमकी दी थी कि उसकी हत्या कर देंगे। किसी जमीन को लेकर विवाद हुआ था।
इसे लेकर कोर्ट में शिकायत भी की गई थी। पुलिस को भी मामले की जानकारी दी थी। लेकिन पुलिस ने कोई कार्रवाई नहीं की। पूरे मामले पर तुर्की थाना प्रभारी कुमार प्रमोद सिंह ने बताया कि एक युवक का शव मिला है। प्रथम हत्या का मामला प्रतीत हो रहा है। FSL की टीम को बुलाया गया है। जांच की जा रही है। शव को पोस्टमार्टम के लिए भेजा गया है। जल्द ही अपराधियों को गिरफ्तार कर लिया जाएगा।

ज्वेलरी शॉप में 2 बदमाशों ने की फायरिंग

सीवान। शहर के कसेरा टोली में बदमाशों ने दहशत फैलाने के उद्देश्य से एक ज्वेलरी शॉप में फायरिंग की है। बताया जा रहा है कि नगर थाना क्षेत्र के कसेरा टोली में आज दोपहर के समय एक बाइक पर सवार दो की संख्या में हथियार के साथ बदमाश पहुंचे। इनकी दुकान के मालिक दिलीप सोनी से कुछ कहा सुनी हुई। उसके बाद बदमाशों ने हाथापाई करने के बाद दो राउंड फायरिंग कर दी। सूचना पाकर तुरंत मौके पर नगर थाना इंस्पेक्टर सुदर्शन राम अपने दल बल के साथ मौके पर पहुंचे और घटना की जानकारी लेने में जुट गए है। इंस्पेक्टर सुदर्शन राम ने बताया कि अपराधियों के फायरिंग करने की सूचना पर पुलिस पहुंच कर पूरे मामले की जांच कर रही है। दुकान के मालिक का फर्द बयान लिया जा रहा है। सीसीटीवी फुटेज और अन्य सबूत के आधार पर पुलिस कार्रवाई में जुटी हुई है। बदमाशों ने दुकान के मालिक के साथ की हाथापाई दुकान के मालिक और उनके यहां काम करने वाले कर्मी भी फिलहाल कुछ नहीं बोल रहे हैं। दुकान मालिन ने सिर्फ इतना कहा है कि दुकान पर पहुंचते ही बदमाशों ने हाथापाई करना शुरू कर दिया और देखते ही देखते फायरिंग करना करने लगे।

बाबा भोले के भक्ति में गुलाटी देते देवघर जाते भक्त

मुंगेर। विश्व प्रसिद्ध श्रावणी मेले की शुरूआत हो चुकी है। एक माह तक चलने वाले इस मेले में कच्ची कांवरिया पथ पर बाबा भोले नाथ के भक्त अलग-अलग रूप में देखने को मिल जायेंगे। ऐसे ही कुमरसार नदी पर दंड देकर बाबा वैधनाथ धाम जा रहे एक कांवरिया को देखा गया। समस्तीपुर जिला के रहने वाले कांवरिया सुरेश प्रसाद सिंह कहते हैं कि 21 जुलाई को सुल्तानगंज से गंगाजल भरकर दंड देते हुए बाबा बैजनाथ धाम देवघर जा रहे हैं। सन 1990 से हम बाबा वैधनाथ जा रहे है और खुशी से जाते हैं। बाबा से आज तक हम कुछ नहीं मांगे, बाबा ने सब कुछ पूरा कर दिया है। उन्होंने बताया की पिछले साल सावन में दो बार दंड देकर बाबा बैजनाथ धाम गया था। इस बार भी अगर बाबा बुलाएंगे तो जरूर जाएंगे पहले अभी का यात्रा पूरा कर लेते हैं उसके बाद बाबा की जैसी मर्जी होगी वैसा होगा।बता दें कि विश्व प्रसिद्ध श्रावणी मेला को लेकर कच्ची कांवरिया पथ पर रोजाना एक और जहां अलग-अलग तरह के आकर्षण कमर लेकर कांवरिया सुल्तानगंज से जल भरकर देवघर के लिए जा रहे हैं तो वहीं दूसरी ओर भोलेनाथ की भक्ति मिली कमरिया भक्ति में प्रसन्न होकर कोई दंडवत देकर तो कोई गुलाटी मार कर देवघर जा रहे हैं। देवघर जा रहे कमरिया समस्तीपुर के रहने वाले सुरेश प्रसाद सिंह ने बताया कि बोले बाबा की असीम कृपा है कि वह लगातार प्रत्येक सावन में गुलाटी मारकर देवघर जा रहे हैं। उन्होंने कहा कि हम भोले बाबा से कोई वरदान नहीं मांगते हैं। भोले बाबा ने बिना मांगे ही हमारा सब कुछ पूरा कर दिया है और भोले बाबा हमें खुद बुलाते हैं जिस कारण मैं उनके दरबार में जाकर हाजिरी लगाता हूं।

गड्ढे में दफन मिला युवती का शव

सहरसा। में मंगलवार को गड्ढे में दफन अज्ञात युवती का शव बरामद किया गया है। शव को देखने के लिए स्थानीय लोगों की मौके पर भीड़ जुट गई। घटना सौरबाजार थाना क्षेत्र के महेशपुर मुढ़ी मिल के पास की है। ग्रामीण खेत की ओर गए तो गड्ढा खोदा देखा और मानव अंगुली दिखाई दी। इसकी सूचना डायल-112 की टीम को दी गई। फिर पुलिस मशीनरी पर पनडुब्बी और 4 फीट जमीन खोदकर शव को बाहर निकाला गया। मौसम पर सदर एसडीपीओ आलोक कुमार, सीओ चरण और एफएसएल की टीम सहित भारी संख्या में पुलिस ने छापेमारी की। हालांकि, अब तक शव की पहचान नहीं हो पाई है। मिली जानकारी के अनुसार प्रशासन की मौजूदगी में गड्ढा खोदकर नहर के पास से युवती का शव बाहर निकाला गया। थानाध्यक्ष अविनाश कुमार ने बताया कि आज सुबह 9 बजे डायल 112 की टीम को सूचना मिली।

श्रावणी मेला में अश्वारोही दस्ता का पहली बार गठन

पटना। विश्व प्रसिद्ध श्रावणी मेले में पहली बार भागलपुर पुलिस प्रशासन की ओर से श्रद्धालुओं की सुरक्षा के लिए अश्वारोही दस्ता का गठन किया गया है। कच्ची पथ पर कांवड़ियों को किसी तरह की कोई परेशानी नहीं हो, इसको लेकर पुलिस के जवान घोड़े पर सवार होकर कांवरिया पथ की निगरानी कर रहे हैं। वरीय पुलिस अधीक्षक के निर्देश पर घुड़सवार पुलिस 24 घंटे शिव भक्तों की सुरक्षा में लगी है। 5 अश्वारोही दस्ता घोड़े पर सवार होकर दो टुकड़ियों में भ्रमणशील है।
भागलपुर जिला अंतर्गत पड़ने वाला क्षेत्र सुल्तानगंज से कमराय तक अश्वारोही पुलिस का दस्ता संदिग्ध लोगों पर पैनी नजर बनाए हुए है। वहीं, भागलपुर में एसपी आनंद कुमार के निर्देश पर गठित आश्वारोही टीम की जानकारी मिलने के बाद कांवरिया पथ में कांवरियों के भेष में छिपे चोर और अपराधी किस्म के लोगों के बीच हड़कंप मच गया है।

सरकार की फर्जी वेबसाइट बनाई 1185 पदों पर निकाली वैकेंसी

पटना। NEET यूजी पेपर लीक केस के बाद बिहार में नौकरी के नाम पर एक बड़े फर्जीवाड़े का मामला सामने आया है। शातिरों ने जल संसाधन मंत्रालय की फर्जी वेबसाइट बनाई। जहां अपर डिवीजनल क्लर्क (यूडीसी), स्टोनो और मल्टी टास्किंग ऑफिसर (एमटीएस) के 1185 पदों पर बहाली के लिए विज्ञापन अपलोड किया। जुलाई को परीक्षा आयोजित की गई। अभ्यर्थी पटना स्थित बनाए एग्जाम सेंटर पर परीक्षा देने पहुंचे तो पूरे फर्जीवाड़े का खुलासा हुआ। इसके बाद अभ्यर्थियों ने सड़क पर उतरकर विरोध प्रदर्शन किया। मौके पर पहुंची पुलिस ने किसी तरह अभ्यर्थियों को शांत कराया। हालांकि, अभी तक कोई भी छात्र शिकायत करने नहीं पहुंचा है। पुलिस का कहना है कि शिकायत मिलने के बाद आगे की कार्रवाई की जाएगी। परीक्षा के लिए अभ्यर्थियों को एडमिट कार्ड जारी किए गए थे। एडमिट कार्ड और वैकेंसी के विज्ञापन में जल संसाधन मंत्रालय और जलाशय संसाधन परिषद लिखा हुआ था। जबकि, जल संसाधन मंत्रालय का नाम बदलकर जल शक्ति मंत्रालय, पेयजल और स्वच्छता विभाग कर दिया गया है। 40 शहरों में होनी थी परीक्षा जल संसाधन मंत्रालय के नाम से बनाए गए फर्जी वेबसाइट में विज्ञापन दिया गया था कि देश के 40 शहरों में यह ऑनलाइन परीक्षा आयोजित की जाएगी। हर सेंटर पर 300 छात्रों की परीक्षा होनी थी। पटना में भी एक सेंटर बनाया गया था। राजधानी के बाइपास थाना क्षेत्र के धवलपुरा के सनराइज इनोवेशनस ऑनलाइन एग्जामिनेशन सेंटर पर दो पालियों में परीक्षा आयोजित की गई थी। इस सेंटर पर करीब 260 छात्र परीक्षा देने पहुंचे थे। परीक्षा शुरू होते ही 10 मिनट में सिस्टम का सर्वर डाउन हो गया। कुछ अभ्यर्थी परीक्षा दे रहे थे। कुछ का सिस्टम काम नहीं कर रहा था। कई अभ्यर्थियों ने परीक्षा देते समय जब लिंक पर क्लिक किया तो संबंधित विभाग का वेबसाइट खुला ही नहीं।

पढ़ाई को साथ-साथ काम करना चाहते है तो यह देश है बेस्ट

बहुत सारे लोगों का सपना होता है कि वह विदेश जाकर पढ़ाई करें। लेकिन कई बार आर्थिक स्थिति को देखते हुए बहुत सारे लोग अपने इस सपने को पूरा नहीं कर पाते। लेकिन आज कल के बढ़ते पार्ट टाइम वर्क कल्चर को देखते हुए अब विदेश जाकर पढ़ना आसान हो गया है। कई स्टूडेंट्स क्लास के बाद पार्ट टाइम जॉब करना पसंद करते है। जिससे उनकी छोटी-मोटी जरूरतों का खर्च निकाला जा सके। भारत में भी यह ट्रेंड तेजी से बढ़ रहा है। लेकिन विदेशों में कई ऐसे यूनिवर्सिटी और संस्थान है जहां आप पढ़ते है वहीं संस्थान आपको पार्ट टाइम नौकरी की ऑफर देने लगे है। यूएस या दूसरें विकसित देशों में अर्न व्हाइल यू लर्न का केवल चलन ही नहीं हा बल्कि वहां के लोग इसे अहमियत भी देते हैं। अर्न व्हाइल यू लर्न का फायदा सिर्फ स्टूडेंट्स को ही नहीं हो रहा, इससे सीमित अवधि के लिए रोजगार देने वाले भी दोहरा लाभ कमा रहे हैं। यह ट्रेंड उन छात्रों के लिए बेहद फायदेमंद साबित हो रहा है, जो पढने के लिए विदेश का रुख करते हैं। इन देशों में अर्न व्हाइल यू लर्न का कॉन्सेप्ट

फांस

यहां अंतरराष्ट्रीय स्टूडेंट्स को काम करने की इजाजत है, मगर शर्त यह है कि उनका संस्थान नेशनल स्टूडेंट हेल्थकेयर प्लान में शिरकत करता हो। फ्रेंच कानून के तहत स्टूडेंट्स को साल में 964 घंटे काम करने की छूट है।

जर्मनी

अंतरराष्ट्रीय स्टूडेंट्स, जो ईयू या ईईए देशों के बाहर के छात्र हैं, उन्हें साल में 120 फुल या 240 हाफ डे काम करने का मौका मिल जाता है। अगर कोई स्टूडेंट्स यहां निर्धारित काम के घंटों से अधिक काम करना चाहता है तो उसके लिए उसे संबंधित डिपार्टमेंट से इजाजत लेनी होती है। साथ ही यदि छात्र का कोर्स व कार्य की प्रकृति एक ही है तो उसे काम के असीमित घंटे मिलते हैं।

न्यूजीलैंड

यहां वैरिएशन ऑफ कंडीशन के तहत पढ़ाई करते हुए 20 घंटे प्रति सप्ताह तक काम करने की आजादी होती है, मगर उसके लिए उनकी कुछ शर्तों को मानना पड़ता है।

कनाडा

यहां अंतरराष्ट्रीय छात्रों को कैम्पस में काम करने की पूरी छूट है, मगर ऑफ कैम्पस के लिए वर्क परमिट प्रोग्राम के अनुसार ही चलना पड़ता है। नियमित सैशन के दौरान जहां 20 घंटे प्रति सप्ताह काम किया जा सकता है, वहीं विंटर और समर ब्रेक के दौरान फुल टाइम काम करने की इजाजत होती है।

सिंगापुर

यहां अंतरराष्ट्रीय छात्रों को पढ़ाई के साथ या छुट्टियों में काम की इजाजत नहीं होती, लेकिन इसके लिए एम्प्लॉयमेंट ऑफ फॉरेन मैनपावर विभाग से वर्क पास की अनुमति ली जा सकती है। हालांकि कुछ स्कूल्स में 14 वर्ष से बड़े छात्रों को काम करने की छूट है।

यूनाइटेड किंगडम

बैचलर डिग्री और उससे ऊपर के छात्रों को प्रति सप्ताह 20 घंटे काम करने की इजाजत है। इसके अलावा छुट्टियों के दौरान फुलटाइम वर्क किया जा सकता है। वहीं बैचलर डिग्री से नीचे के छात्रों को सिर्फ 10 घंटे प्रति सप्ताह काम करने की इजाजत मिलती है।

आयरलैंड

ऐसे अंतरराष्ट्रीय छात्र, जो ईईए देशों से बाहर के हैं और जो यहां किसी मान्यताप्राप्त संस्थान से कम से कम एक साल का पूर्णकालिक कोर्स कर रहे हैं, वे 20 घंटे प्रति सप्ताह तक का पार्ट टाइम रोजगार पा सकते हैं।

इटली

अगर किसी अंतरराष्ट्रीय छात्र के पास स्टडी वीजा है और इटली में रहते हुए उसे 90 दिन से अधिक हो चुके हैं तो ऐसी स्थिति में वह रेजिडेंस परमिट के लिए आवेदन कर सकता है। रेजिडेंस परमिट के बाद वह 20 घंटे प्रति सप्ताह की पार्ट टाइम जॉब कर सकता है।

स्विटजरलैंड

यहां ईयू/ईएफटीए देशों से बाहर के अतरंराष्ट्रीय छात्रों के लिए 15 घंटे प्रति सप्ताह का रोजगार पाने की इजाजत है। पर यह जरूरी है कि उन्हें यहां रहते हुए कम से कम छह माह का न्यूनतम समय हो चुका हो। हालांकि पोस्ट ग्रेजुएट छात्रों के लिए ऐसी कोई शर्त नहीं है।

यूनाइटेड स्टेट्स

अंतरराष्ट्रीय छात्र, जिन के पास एफ - 1 वीजा है, उन्हें ऑफ कैम्पस जॉब करने की इजाजत नहीं है। किसी खास केस में ही यह इजाजत मिलती है। एक साल के बाद यूएससीआईएस से काम करने की इजाजत मिल सकती है। यहां सिर्फ कैम्पस में 20 घंटे प्रति सप्ताह सैशन के समय और 40 घंटे प्रति सप्ताह छुट्टियों के दौरान काम करने के लिए इजाजत नहीं लेनी होती।

आस्ट्रेलिया

छात्रों को यहां अधिकतम 40 घंटे प्रति पखवाड़े तक काम करने से नहीं रोका जाता। वहीं छुट्टियों में काम करने के घंटों पर कोई प्रतिबंध नहीं है।

आज कल के बढ़ते पार्ट टाइम वर्क कल्चर को देखते हुए अब विदेश जाकर पढ़ना आसान हो गया है। कई स्टूडेंट्स क्लास के बाद पार्ट टाइम जॉब करना पसंद करते है। जिससे उनकी छोटी-मोटी जरूरतों का खर्च निकाला जा सके। भारत में भी यह ट्रेंड तेजी से बढ़ रहा है। लेकिन विदेशों में कई ऐसे यूनिवर्सिटी और संस्थान है जहां आप पढ़ते है वहीं संस्थान आपको पार्ट टाइम नौकरी की ऑफर देने लगे है।

कुछ यूं बनाएं अपनी वेबसाइट

तेजी से पंख फैलाते इंटरनेट का सहारा लेकर आज हर व्यक्ति अपनी पहुंच इंटरनेट की दुनिया में दर्ज कराने को बेताब नजर आता है। हर व्यक्ति की यही चाहत है कि उसका दायरा किसी सीमा के बंधन में कैद न रहे। सच ही तो है, आज नेट ने हमें भौगोलिक सीमाओं को लांघने का एक बेहतर जरिया उपलब्ध कराया है और साथ ही दी है वर्चुअल वर्ल्ड में उन्मुक्त विचरने की आजादी।

आजकल पर्सनल वेबसाइट बनाने का प्रचलन भी जोरों पर है। वेबसाइट आपको अवसर देती है अपने बारे में तमाम तरह की सूचनाओं को दूसरों तक पहुंचाने की। घर बैठे आपके बारे में तमाम सूचनाओं को एक्सेस करने की आजादी का इससे बेहतर जरिया और भला क्या हो सकता है। हालांकि इस काम के लिए ब्लॉग, सोशल नेटवर्किंग साइट्स आदि का भी खूब इस्तेमाल किया जाता है, फिर भी आज के इस तकनीकी युग में पर्सनल वेबसाइट होना आपको दूसरों से अलग बनाता है। सबसे बड़ी बात तो यह है कि वेबसाइट बनाना अब कोई मुश्किल काम नहीं रहा। इंटरनेट पर कई ऐसे टूल्स हैं, जिनकी सहायता से चुटकियों में आप अपना वेब पेज डेवलप कर सकते हैं। क्या हुआ यदि आपको कंप्यूटर में महारथ हासिल नहीं है, प्रोग्रामिंग के आप पंडित नहीं हैं या फिर कोडिंग के नाम से ही आप डरने लगते हैं। प्रोफेशनल्स, रिसचर्स, स्टूडेंट्स आदि अपनी पर्सनल वेबसाइट बनाने में काफी रुचि दिखा रहे हैं। इसके माध्यम से आप न केवल वर्चुअल दुनिया में अपनी उपस्थिति दर्ज कराते रहते हैं, बल्कि अब तो एडवरटाइडिंग के जरिए पैसा कमाने का भी यह एक सोर्स बन गया है।

वेबसाइट आमतौर पर दो तरह की होती है- स्टैटिक और डायनॉमिक। स्टैटिक वेबसाइट का मतलब वैसी साइट से है, जो वन-वे होती है। यहां आप वेब पेजों को केवल पढ़ कर जानकारी ले सकते हैं। ये साइट्स नॉन-इंटरेक्टिव होती हैं और ये केवल स्टैटिक इंफॉर्मेशन ही प्रोवाइड कराती हैं, जो प्री-डिफाइन होती है। वैसे वेब पेज को एचटीएमएल (हाइपर टैक्स्ट मार्कअप लैंग्वेज) की सहायता से तैयार किया जाता है। इसके विपरीत डायनॉमिक वेबसाइट इंटरेक्टिव होती है और विभिन्न क्राइटेरिया के अनुसार परिवर्तित होती रहती है। यहां आपको डाटाबेस से डायनामिक कंटेंट्स मिलता है और आप ताजा-तरीन (लेटेस्ट) इंफॉर्मेशन ले सकते हैं। वेबसाइट बनाने की प्रक्रिया में आपको डोमेन नेम/सब-डोमेन नेम और वेबसाइट होस्टिंग साइट की जरूरत पड़ती है। डोमेन नेम सिस्टम के आधार पर डोमेन नेम बनाया जाता है। इंटरनेट पर कई ऐसी वेबसाइट्स हैं, जो निःशुल्क सब-डोमेन प्रोवाइड करती हैं। आप गूगल सर्च की सहायता ले सकते हैं। www.hosting.com एक ऐसी ही वेबसाइट है, जहां आप अपनी वेबसाइट को होस्ट कर सकते हैं। इसके लिए आपको रजिस्ट्रेशन करवाना होगा और इस दौरान आपको अपना यूजरनेम, पासवर्ड, ई-मेल एड्रेस आदि एंटर करना पड़ेगा। किसी भी वेबसाइट होस्टिंग साइट का उपयोग करने से पहले उसके फीचर्स, क्राइटेरिया आदि को सही से समझ लें। डोमेन और यूआरएल के बारे में निर्णय कर लेने के बाद जो मुख्य काम है, वह है वेबसाइट का निर्माण। यहां आप विभिन्न वेब पेज डेवलप करते हैं, जो वेबसाइट का रूप लेते हैं। नेट पर विभिन्न वेब एडिटर्स हैं, जहां आप बिना कोडिंग किए ही आकर्षक और प्रोफेशनल वेब पेज बना सकते हैं। इन एडिटर्स में आपको संबंधित इंफॉर्मेशन एंटर करनी होती है। ड्रैग एंड ड्रॉप फीचर का भी आप उपयोग कर सकते हैं। इन एडिटर्स की सहायता से वेबसाइट डेवलप करते समय आप कलर, फॉंट, स्टाइल, बैकग्राउंड, इमेज आदि पर विशेष ध्यान रखें, ताकि आपकी वेबसाइट आकर्षक दिखे। फंट पेज यानी होम पेज को डिजाइन करते समय खास ध्यान दें। नेविगेशन पर भी विशेष ध्यान देना चाहिए। साथ ही, आप याद रखें किसी भी साइट का कंटेंट उस साइट की सफलता और लोकप्रियता में मुख्य भूमिका निभाता है। ऐसे में कंटेंट को दूसरों के लिए रोचक और उपयोगी बनाएं, ताकि लोग आपकी साइट के प्रति आकर्षित हों। वेबसाइट तैयार हो जाने पर अगला कदम होता है पब्लिशिंग यानी इंटरनेट पर इसे अपलोड करना। चुनी गई होस्टिंग साइट पर आप पर्सनल वेबसाइट को अपलोड कर सकते हैं और इस तरह आप अपनी वेबसाइट को पूरी दुनिया के सामने प्रस्तुत कर सकते हैं। आप सर्च इंजन ऑप्टिमाइजेशन (एसईओ) द्वारा अपनी वेबसाइट को प्रमोट भी कर सकते हैं, ताकि जब भी सर्च इंजन में संबंधित सर्च किया जाए तो आपकी वेबसाइट भी सर्च लिस्ट में प्रदर्शित हो।

अपनाएं यह 5 तरीके जल्द मिलेगी नौकरी

जॉब मार्केट में बढ़ती प्रतिस्पर्धा के कारण जॉब मिलना सबसे ज्यादा मुश्किल काम हो गया है लेकिन अभी भी उन उम्मीदवारों को कहीं न कहीं बेहतर जॉब जरूर मिल जाती है जो योग्य होते हैं। लेकिन इतना जरुर है कि समय के साथ- साथ जॉब सर्च करने, टेस्ट और इंटरव्यू देने के तरीके भी बदल गए है। इसलिए इन बातों को जानना बहुत जरुरी है।

ऑनलाइन नेटवर्किंग

जॉब सर्च करने के लिए आप फेसबुक, लिंकडिन का इस्तेमाल कर सकते हैं। लेकिन यहां आपको थोड़ी होशियारी बरतनी होगी। अगर आप हमेशा दूसरों से खुद के बारे में बात करेंगे तो धीरे-धीरे लोग आपके प्रोफाइल पर ध्यान देना बंद करेंगे। ऑनलाइन नेटवर्किंग एक कॉकटेल की तरह है इसलिए इसका अपने फायदे में ध्यान से इस्तेमाल करें।

पर्सनल नेटवर्किंग

बहुत सारे लोग नेटवर्किंग को गलत मानते हैं मगर ऐसा नहीं है। लोगों से खुल कर बातें करें, अपने लक्ष्य तय करें। दूसरों से मिलने-जुलने के कारण आपके स्किल्स में सुधार भी आएंगे और समय आने पर मदद भी मिलेगी। नौकरी तलाशने में नेटवर्किंग का काफी अहम रोल होता है।

खुद को थोड़ा अलग रखें

जब आप जॉब के लिए अपना रिज्यूमे बना रहे हैं तो यह ध्यान रखें कि पुरानी घिसी-पिटी बातें जो सभी के रिज्यूमे में होती है, उसको फॉलो न करें। आप अपने रिज्यूमे में कुछ ऐसी बातें डालने की कोशिश करें जो आपको दूसरों से अलग बनाएं।

इंटरव्यू इंफॉर्मेशन

जब आप इंटरव्यू देने जाएं तो सिर्फ सवालों के जवाब न दें बल्कि अपनी आवश्यकतानुसार कुछ सवाल आप भी पूछ लें। जैसे कि इंटरव्यू लेने वाले का नाम क्या है? वे क्या करते हैं? इंटरव्यू देकर निकलें तो धन्यवाद कहना न भूलें।

इंटरव्यू में सीधी बात करें

इंटरव्यू में घुमावदार जवाब देने से बचें। सवालों का सीधा जवाब दें। अगर आपसे आपकी कमजोरी के बारे में पूछा जाए तो अपनी कमजोरी ही बताएं। कुछ लोग अपने को स्मार्ट दिखाने के चक्कर में कुछ ज्यादा ही बोल जाते हैं। उदाहरण के तौर पर वे ज्यादा काम करने को अपनी कमजोरी बताने लगते हैं इसलिए ऐसे सवालों की तैयारी पहले से करें।

पेरिस ओलंपिक :मनु भाकर ने रचा इतिहास, एक ओलंपिक में दो मेडल जीतने वाली पहली भारतीय महिला बनी

पेरिस (एजेंसी) । भारतीय शूटर मनु भाकर ने पेरिस ओलंपिक 2024 में इतिहास रच दिया है। वह एक ओलंपिक में दो पदक जीतने वाली पहली भारतीय महिला बन गई हैं। उन्होंने मंगलवार सरबजोत सिंह के साथ मिलकर 10 मीटर एयर पिस्टल मिश्रित टीम स्पर्धा में कांस्य पदक जीता। भाकर और सरबजोत ने ली वोनहो और ओह ये जिन के खिलाफ 16-10 के स्कोर से पदक अपने नाम किया। इससे पहले उन्होंने 10 मीटर एयर पिस्टल स्पर्धा में कांस्य पदक अपने नाम किया था। इससे पहले ब्रिटिश-भारतीय एथलीट नॉर्मन प्रिचर्ड ने 1900 ओलंपिक में 200 मीटर स्प्रिंट और 200 मीटर बाधा दौड़ में दो रजत पदक जीते थे।

10 मीटर एयर पिस्टल मिश्रित टीम स्पर्धा मुकाबला

पहले प्रयास में सरबजोत के पहले शॉट 8.6 और मनु भाकर के 10.5 ने मिलकर 18.8 अंक बनाए, जबकि कोरिया के संयुक्त अंक 20.5 रहे।

सरबजोत और मनु ने दूसरे राउंड में कोरिया के 19.9 अंकों की तुलना में 21.2 अंकों के साथ खुद को साबित किया।

भारत का संयुक्त स्कोर 20.7 रहा जबकि कोरिया का 20.5 रहा। भारत लगातार तीसरी श्रृंखला में भी हावी रहा।

मनु भाकर ने यहां शानदार प्रदर्शन किया और 10.5 शॉट के साथ भारत के कुल अंक 20.1 हो गए। दूसरी ओर कोरिया के 19.5 अंक रहे।

कोरिया ने 20.6 अंक के साथ वापसी की है जबकि भारत के 20.2 अंक हैं।

भारत ने 18.5 अंकों के साथ आठवीं सीरीज समाप्त की, जबकि कोरिया ने 20.7 अंकों के साथ वापसी की।

मनु भाकर के 10.2 शॉट की बदौलत भारत ने कोरिया पर 12-6 की बढ़त के साथ अपनी आठवीं सीरीज समाप्त की। सबसे पहले 16 अंक हासिल करने वाली टीम को कांस्य पदक मिलेगा।

भारत 11वीं श्रृंखला हार गया, लेकिन अगली श्रृंखला जीतने पर जीत की ओर अग्रसर होगा।

कोरिया ने लगातार दो श्रृंखलाएं जीतकर भारत के 20.8 के मुकाबले 21 अंक प्राप्त कर लिए हैं।

भारत को कांस्य पदक, सरबजोत सिंह और मनु भाकर ने 10 मीटर एयर पिस्टल कांस्य पदक राउंड जीता।

10 मीटर एयर पिस्टल एकल स्पर्धा मुकाबला

मनु भाकर ने पेरिस ओलंपिक में 28 जुलाई को भारत को पहला पदक दिलाते हुए महिला 10 मीटर एयर पिस्टल इवेंट में कांस्य पदक अपने नाम किया। उन्होंने 221.7 के कुल स्कोर के साथ कांस्य पदक अपने नाम किया। हालांकि एक समय वह सिल्वर की

दावेदार लग रही थी लेकिन अंतिम समय में कोरियाई शूटर किम येजी ने उन पर बढ़त हासिल कर ली। किम येजी ने 241.3 के स्कोर के साथ सिल्वर जीता। वहीं पहले स्थान पर एक अन्य कोरियाई शूटर ओ ये जिन रही, जिन्होंने 243.2 के साथ रिकॉर्ड तोड़ प्रदर्शन करते हुए गोल्ड अपने नाम किया।

पेरिस ओलंपिक: तीरंदाज भजन कौर अंतिम 16 में पहुंची, अंकिता का सफर खत्म

पेरिस (एजेंसी)। भारतीय तीरंदाज भजन कौर ओलंपिक के महिला एकल वर्ग में मंगलवार को यहां पोलैंड की वियोलेटा मैसजोर पर 6-0 की शानदार जीत के साथ अंतिम 16 चरण में पहुंचने में सफल रही। भजन ने अंतिम 32 दौर में मैसजोर को हराने के साथ अंकित भकत की हार का बदला चुकता किया। पोलैंड की इस तीरंदाज ने इससे पहले अंतिम 64 चरण के मैच में अंकित को 6-4 से हराया था।

भजन ने दिन के अपने शुरुआती मैच में इंडोनेशिया की साइफा नूरफीफा कमाल को 7-3 से शिकस्त देने के बाद वियोलेटा के खिलाफ अपनी लय जारी रखते हुए एकतरफा जीत दर्ज की। भजन ने वियोलेट के खिलाफ पहले सेट और तीसरे सेट में 10 अंक वाले एक-एक और दूसरे सेट में दो निशाने लगाकर अपना दबदबा बनाया। उन्होंने 28-23, 29-26, 28-22 से आसान जीत दर्ज की।

इससे पहले अंतिम 64 चरण में भजन ने शुरुआती सेट में साइफा के साथ अंक साझा किये जबकि इंडोनेशिया की तीरंदाज ने दूसरे सेट को जीतकर भारतीय खिलाड़ी पर दबाव बना दिया। क्वालीफिकेशन में 22वें स्थान पर रहने वाली भजन ने इसके बाद दबाव में शानदार खेल दिखाया। उन्होंने तीसरे सेट में अच्छी वापसी करते हुए 10-10 के दो निशाने के साथ 29 का स्कोर किया। भजन ने चौथे सेट में साइफा के 25 के मुकाबले 27 अंक जुटाकर 5-3 की बढ़त बनायी और फिर आखिरी सेट में 25 के मुकाबले 28 अंक बनाकर जीत पक्की कर ली।

पेरिस ओलंपिक: मनिका टेटे से अंतिम 16 में पहुंचने वाली पहली भारतीय बनी

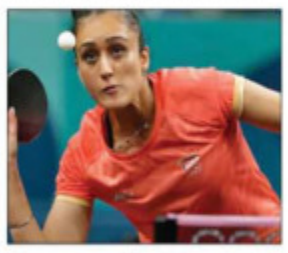

पेरिस (एजेंसी)। पेरिस (ईएमएस)। भारत की मनिका बत्रा पेरिस ओलंपिक खेलों की टेबल टेनिस स्पर्धा के प्री-क्वार्टर फाइनल में पहुंच गयी हैं। इसी के साथ ही मनिका ने एक अहम उपलब्धि हासिल की है। वह टेबल टेनिस के प्री क्वार्टर फाइनल में पहुंचने वाली पहली भारतीय महिला एकल खिलाड़ी बन गयी हैं। मनिका ने अंतिम 32 मुकाबले में फ्रांस की 12वीं वरीयता प्राप्त प्रीथिका पवाडे को सीधे गेमों में हराया।

18वीं वरीयता प्राप्त मनिका ने आधे घंटे से अधिक समय तक चले मुकाबले में आसानी से 11-9, 11-6, 11-9, 11-7 से जीत हासिल की। इसी के साथ ही वह ओलंपिक टेबल टेनिस के अंतिम-16 में पहुंचने वाली पहली भारतीय खिलाड़ी बन गयी हैं। मनिका का पहले गेम में मुकाबला करीबी रहा। मनिका ने अंतिम तीन अंक अपने नाम कर इसे 11-9 से जीता। वहीं दूसरे गेम की शुरुआत में भी मुकाबला काफी करीबी रहा पर 6-6 की बराबरी के बाद मनिका ने प्रीथिका को कोई अवसर नहीं दिया और 11-6 से वह जीत गई। मनिका ने तीसरे गेम में भी लय जारी रखते हुए पांच अंक की बढ़त बनाई पर प्रीथिका ने लगातार चार अंक हासिल कर स्कोर को 9-10 कर दिया। प्रीथिका दबाव में गेंद को नेट पर खेल गयी और मनिका ने 11-9 से इस गेम को जीत लिया। मनिका ने चौके गेम में 6-2 की बढ़त के साथ अच्छी शुरुआत को 10-4 में बदल कर छह मैच अंक हासिल कर मुकाबला अपने नाम कर लिया।

पेरिस ओलंपिक : भारतीय हॉकी टीम ने ऑयरलैंड को हराया, पूल बी में हासिल किया शीर्ष स्थान

पेरिस (एजेंसी)। कप्तान हरमनप्रीत सिंह के दो गोल और गोलकीपर पी आर श्रीजेश के शानदार प्रदर्शन की मदद से भारतीय पुरूष हॉकी टीम ने पेरिस ओलंपिक में अपना अपराजेय अभियान जारी रखते हुए आयरलैंड को 2-0 से हराया। भारत अब दो अगस्त को आस्ट्रेलिया से भिड़ेगा। भारत ने इस जीत के साथ ही 6 टीमों के पूल बी में शीर्ष स्थान हासिल कर लिया है। इससे पहले भारत ने अर्जेंटीना के खिलाफ ड्रॉ और न्यूजीलैंड को 3-2 से हराया था। शीर्ष 4 टीमें क्वार्टर फाइनल के लिए क्वालिफाई करती हैं।

पिछले मैच में औसत प्रदर्शन करने वाले अनुभवी मिडफील्डर मनप्रीत सिंह और हार्दिक सिंह ने आज बेहतरीन खेल दिखाया और कई अच्छे मूव बनाए। भारत ने पहली बार पहले क्वार्टर में गोल करके बढ़त बनाई जबकि पिछले दो मैचों में पहला गोल विरोधी टीम ने किया था। इस जीत के बावजूद पेनल्टी कॉर्नर गंवाने की भारत की कमजोरी तीसरे क्वार्टर में फिर उजागर हुई। पहले दो मैचों में 13 पेनल्टी कॉर्नर गंवाने वाली भारतीय टीम ने हाफटाइम तक एक भी पेनल्टी कॉर्नर नहीं गंवाया लेकिन तीसरे क्वार्टर में आठ पेनल्टी कॉर्नर गंवाए जिसने गोलकीपर श्रीजेश को व्यस्त रखा।

आयरलैंड को इस मैच में 10 और भारत को नौ पेनल्टी कॉर्नर और एक स्ट्रोक मिला। अगले दोनों मैच भारत को मौजूदा चैम्पियन बेल्जियम और ऑस्ट्रेलिया जैसी दिग्गज टीमों से खेलने हैं और उससे पहले कोच फुल्टोन को इस कमजोर कड़ी को कसना होगा। पिछले साल भारतीय टीम से जुड़े फुल्टोन आयरलैंड टीम के पूर्व कोच रहे हैं। इसके अलावा 19वें मिनट के बाद भारतीय टीम भी कोई गोल नहीं कर सकी। पेनल्टी कॉर्नर और फील्ड गोल नहीं कर पाने का खामियाजा आगे कठिन मैचों में भुगतना पड़ सकता है। भारतीय टीम ने आक्रामक शुरूआत की और दूसरे ही मिनट में उसे पेनल्टी कॉर्नर मिला हालांकि हरमनप्रीत इसे गोल में नहीं बदल सके। पहले क्वार्टर में ही 11वें मिनट में भारत को पेनल्टी स्ट्रोक मिला जिसे गोल में बदलने में हरमनप्रीत ने चूक नहीं की। पहले क्वार्टर में आयरलैंड की टीम भारतीय गोल पर हमले बोलने में नाकाम रही।

2036 ओलंपिक भारत में ही होंगे : नीता अंबानी

मुम्बई । रिलायंस फाउंडेशन की अध्यक्ष व अंतर्राष्ट्रीय ओलिम्पिक समिति (आईओसी.) में एकमात्र भारतीय प्रतिनिधि नीता अंबानी ने कहा है कि भारत 2036 ओलंपिक खेलों की मेजबानी करेगा। नीता ने ओलंपिक में भारत के पहले कंट्री हाउस (इंडिया हाउस) का उद्घाटन भी किया था। उन्होंने कहा कि 2036 के ओलंपिक खेलों की मेजबानी भारत ही करेगा। नीता ने कहा कि ऐसा वहीं नहीं बल्कि 1.4 अरब भारतीय भी चाहते हैं। नीता के नेतृत्व में ही पेरिस ओलंपिक इतिहास में पहली बार भारत का कंट्री हाउस बना है। इंडिया हाउस, पेरिस ओलम्पिक में पहुंचे भारतीय खिलाड़ियों, समर्थकों व दर्शकों के लिए एक घर की तरह है। नीता का लक्ष्य भारत सहित दुनिया भर में ओलंपिक अभियान को आगे बढ़ाना है। आईओसी के सदस्य के तौर पर नीता युवा पीढ़ी और खेल जगत से जुड़े लोगों को प्रोत्साहित करते नजर आ रही हैं। नीता का खेल जगत में प्रोत्साहन, वैश्विक खेल क्षेत्र में भारत के बढ़ते प्रभाव को भी दिखाता है। नीता, भारती संस्कृति और छवि को पूरी दुनिया में आगे बढ़ाना चाहता है। उनकी ये पहल भारत को खेल जगत में एक नई दिशा में ले जा रही है। कॉर्पोरेट जगत से जुड़ी नामी हस्तियों के खेल जगत से जुड़ने से युवा खिलाड़ियों को लाभ हो रहा है।

बोपन्ना ने ओलंपिक में हार के साथ ही खेल से संन्यास लिया

पेरिस । भारत के सबसे अनुभवी टेनिस खिलाड़ी रोहन बोपन्ना ने ओलंपिक पुरुष युगल के पहले दौर में हार के बाद खेल से संन्यास की घोषणा कर दी। 43 साल के बोपन्ना और उनके जोड़ीदार श्रीराम बालाजी की जोड़ी को फ्रांसीसी जोड़ी के हाथों हार का सामना करना पड़ा था। बोपन्ना ने कहा कि मैंने देश के लिए अपने करियर का अंतिम मैच खेल लिया है हालांकि मैं जीत के साथ अलविदा कहना चाहता था पर वैसा नहीं हो पाया। बोपन्ना और बालाजी को एडवर्ड रोजर वासेलिन और गेल मोनफिल्स की फ्रांसीसी जोड़ी ने 5-7, 2-6 से हराया था। इससे भारत के ओलंपिक पदक जीतने की उम्मीदें फिर टूट गयी। भारत की ओर से अंतिम बार पेस ने अटलांटा ओलंपिक के पुरुष एकल में कांस्य पदक जीता था। उसके बाद से ही भारत अब तक कोई पदक नहीं जीत पाया है। बोपन्ना साल 2016 में सानिया मिर्जा के साथ मिश्रित युगल में पदक के करीब पहुंचे थे पर यहां उन्हें हार का सामना करना पड़ा था।बोपन्ना ने कहा कि वह 2026 एशियाई खेलों में शामिल नहीं होंगे और कहा कि ओलंपिक के साथ ही मैंने रिटायरमेंट ले लिया है। ये मेरा आखिरी टूर्नामेंट था। मैं पूरी तरह से समझता हूं कि मैं किस स्थिति में हूं। मैं अब जब खेल सकूंगा तब टेनिस का आनंद उठाउंगा। उन्होंने पहले ही डेविस कप से संन्यास की घोषणा कर दी थी। साथ ही कहा कि मैंने कभी सोचा भी नहीं था कि मैं दो दशकों तक भारत की ओर से खेलूंगा। मैंने 2002 में करियर की शुरुआत की थी और 22 साल बाद भी भारत का प्रतिनिधित्व करने का मौका मिला ये मेरे लिए गर्व की बात है।

ओलंपिक में क्रिकेट को शामिल करना एक युग की शुरुआत होगा: द्रविड़

-किसी भी भूमिका में शामिल रहना चाहूंगा

पेरिस (एजेंसी)। भारतीय क्रिकेट टीम के पूर्व कप्तान और कोच रहे राहुल द्रविड़ साल 2028 लॉस एंजिल्स ओलंपिक में क्रिकेट को शामिल किए जाने को लेकर उत्साहित हैं। द्रविड़ ने कहा कि ओलंपिक में क्रिकेट को शामिल करना अभूतपूर्व उपलब्धि है। एक कार्यक्रम में उन्होंने इसे एक युग की शुरुआत बताया है। द्रविड़ ने ये भी कहा कि वह भी 2028 में लॉस एंजिल्स ओलंपिक में क्रिकेट के साथ किसी भी भूमिका में शामिल होना चाहेंगे।

द्रविड़ ने ओलंपिक में क्रिकेट के शामिल होने पर कहा, मुझे हमेशा से लगता था कि क्रिकेट को इसका हिस्सा होना चाहिए। यह वास्तव में एक महान खेल है। दुनिया भर में बहुत से लोग इसे पसंद करते हैं। यह मेरे जैसे किसी व्यक्ति के लिए शानदार है जो अब केवल एक प्रशंसक है। यह वास्तव में अभूतपूर्व है। द्रविड़ ने पूर्व अमेरिकी ट्रैक एवं फील्ड एथलीट कार्ल लुईस को टेलीविजन पर पदक जीतते हुए देखने की अपनी यादें ताजा की, जिनके नाम 9 ओलंपिक स्वर्ण पदक हैं। द्रविड़ ने अमेरिका में क्रिकेट के प्रति जुनून के बारे में भी बताया और कहा कि उन्हें ये देखकर खुशी हुई। द्रविड़ के साथ इस कार्यक्रम में आईसीसी के मुख्य कार्यकारी ज्योफ एलार्डिस, ड्रीम स्पोर्ट्स के सीईओ और को-फाउंडर हर्ष जैन भी उपस्थित थे। यह कार्यक्रम इंडिया हाउस पार्क ऑफ नेशंस में पार्क डे ला विलेट में हुआ। पेरिस ओलंपिक 2024 के दौरान ये पहली बार है जब इंडिया हाउस की शुरुआत हुई है। पेरिस खेलों में इंडिया हाउस दुनिया भर के प्रशंसकों, वैश्विक खेल जगत के प्रमुख हितधारकों, भारतीय यात्रियों, मीडिया और एथलीटों के लिए भारत का प्रतिनिधित्व करता है।

पेरिस ओलंपिक : मिस्र की तलवारबाज का खुलासा, सात महीने की हैं गर्भवती

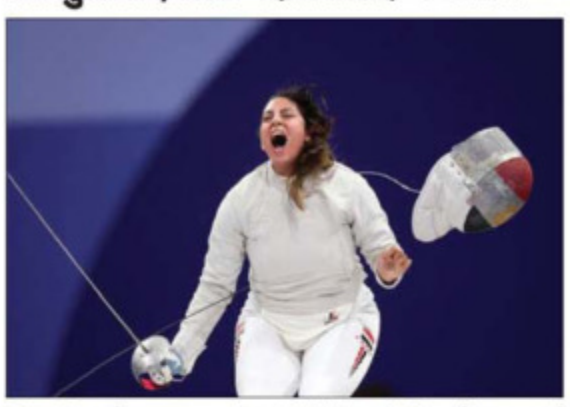

पेरिस । मिस्र की तलवारबाज नदा हाफेज ने पेरिस ओलंपिक की तलवारबाजी स्पर्धा में हिस्सा लेने के बाद खुलासा किया कि वह सात महीने गर्भवती हैं। सोमवार को महिलाओं की सेबर स्पर्धा में राउंड 16 में पहुंचने के कुछ घंटो बाद हाफेज ने अपने 'इंस्टाग्राम' पर पोस्ट किया कि 'उनके गर्भ में एक लिटिल ओलंपियन' पल रहा है। कैरो की 26 साल की तलवारबाज ने अमेरिका की एलिजाबेथ टार्टाकोवस्की को हराकर उलटफेर किया लेकिन इसके बाद कोरिया की जियोन हेयंग से हार गई। हाफेज ने लिखा, 'मेरे बच्चे और मैंने अपनी चुनौतियों का सामना किया, भले ही ये शारीरिक और भावनात्मक हों।' उन्होंने कहा, 'गर्भावस्था खुद में इतनी कठिन यात्रा है, लेकिन जिंदगी और खेल के बीच संतुलन बनाए रखने के लिए संघर्ष करना बहुत मुश्किल था। मैं यह पोस्ट यह बताने के लिए लिख रही हूं कि राउंड 16 में अपनी जगह पक्की करने के बाद मुझे गर्व महसूस हो रहा है।' मेडिसिन में डिग्री हासिल कर चुकी हाफेज एक पूर्व जिमनास्ट है और तीन बार की ओलंपियन हैं जिन्होंने 2019 अफ्रीकी खेलों में व्यक्तिगत और टीम सेबर स्पर्धाओं में स्वर्ण पदक जीते थे।

अर्जुन बबूता के पदक नहीं जीत पाने से निराश हैं कोच दीपाली

-2025 से उसका दौर शुरु होगा

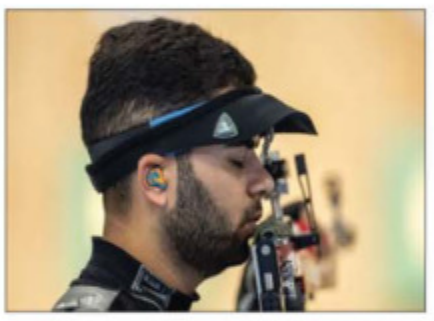

नई दिल्ली (एजेंसी)। भारतीय निशानेबाज अर्जुन बबूता की कोच दीपाली देशपांडे भी उसके पदक हासिल नहीं कर पाने से निराश है। बबूता पेरिस ओलंपिक खेलों की 10 मीटर एयर राइफल स्पर्धा में चौथे स्थान पर रहने के साथ ही मामूली अंतर से पदक हासिल नहीं कर पाये थे। दीपाली के अनुसार अर्जुन बेहद मेहनती है और आने वाले साल 2025 में उसका युग शुरु होगा। दीपाली के अनुसार पदक के बेहद करीब पहुंचकर भी भारी दबाव हावी होने से अर्जुन के हाथ से मुकाबला फिसल गया। दीपाली के अनुसार वह अर्जुन को तब से ट्रेनिंग दे रही हैं जब वह 16 साल का था। साल2015 में जसपाल राणा के साथ जूनियर कोचिंग टीम का हिस्सा रही दीपाली को भरोसा है कि अर्जुन शीघ्र ही इस झटके से उबर जाएगा और 2028 लॉस एंजिल्स ओलंपिक को लक्ष्य बनाएगा। साथ ही कहा कि वह पेरिस के पास शेटराउ निशानेबाजी रेंज में होने वाले घटनाक्रमों से प्रेरित होगा। अर्जुन एक समय रजत पदक जीतने की स्थिति में था पर घबराहट में उससे गलती हो गयी। दीपाली के अनुसार उसने पिछले नौ साल में अर्जुन को बेहतर होते देखा है।

दीपाली ने कहा कि वह काफी कठिन दौर से भी गुजरा है। पीठ में चोट के कारण ही वह टोक्यो ओलंपिक के लिए जगह नहीं बना पाया था। निशानेबाजी के दौरान वह 2 बार रेंज में गिर गया था क्योंकि उसके पैर सुन्न हो जाते थे। उस समय उसे पूरी तरह से आराम करने की सलाह दी गई थी तब भी उन्हें उसकी क्षमताओं पर भरोसा था। उन्होंने कहा कि कोविड महामारी ने उसे आराम करने और ठीक होने का समय दिया।

दीपाली ने कहा कि आज का दिन मेरे लिए भी मुश्किल था और मैंने उसे फाइनल में दूसरे से चौथे स्थान पर आते देख अपना फोन फेंक दिया। मुझे पता है कि मैंने उसके जूनियर दिनों के दौरान उसके साथ कितनी मेहनत की है और चोट के दौर से गुजरने में उसकी कितनी मदद की है। उन्होंने कहा कि वह उन लोगों में से एक है जो फाइनल में लगातार 10.8 अंक बना सकता है और मुझे भरोसा है कि उसका युग 2025 में शुरू होगा। अर्जुन ओलंपिक स्वर्ण पदक विजेता अभिनव बिंद्रा से प्रभावित था।

मोर्ने मोर्कल बन सकते हैं टीम इंडिया के गेंदबाजी कोच, इस सीरीज से संभाल सकते हैं कमान

नई दिल्ली (एजेंसी)। गौतम गंभीर ने टीम इंडिया के हेड कोच का पद श्रीलंका दौरे से पहले ही ग्रहण कर लिया था। लेकिन टीम के गेंदबाजी कोच कौन होंगे इस पर अभी भी फैसला आना है। हालांकि, क्रिकबज की रिपोर्ट के अनुसार साउथ अफ्रीका के पूर्व तेज गेंदबाज मोर्ने मोर्कल को भारतीय टीम का गेंदबाजी कोच बनाया जा सकता है। मोर्कल बांग्लादेश के खिलाफ आगामी टेस्ट सीरीज के साथ भारतीय क्रिकेट टीम के गेंदबाजी कोच के रूप में जुड़ सकते हैं।

मौजूदा समय में भारतीय टीम के साथ साईराज बहुतुले श्रीलंका दौरे पर हैं और अंतरिम गेंदबाजी कोच के रूप में काम कर रहे हैं। वहीं रिपोर्ट के मुताबिक उनका मुख्य गेंदबाजी कोच बनना निश्चित नहीं लग रहा है। बहुतुले स्पिन गेंदबाज रहे हैं और उन्हें लेकर कुछ भी साफ नहीं है तो वहीं मोर्कल तेज गेंदबाज रहे हैं और अगर वो भारतीय टीम के बॉलिंग कोच बनते हैं तो फिर टीम इंडिया को एक स्पिन कोच की भी जरूरत पड़ सकती है। वैसे श्रीलंका में चल रही क्रिकेट सीरीज के दौरान भारतीय टीम मैनेजमेंट और चयनकर्ता टीम के मौजूदा कोचिंग टीम का मूल्यांकन करेंगे और फिर उन्हें लेकर फैसला किया जाएगा ऐसे में बहुतुले की भूमिका को लेकर बी निश्चितता दिख रही है।

वैसे साईराज बहुतुले अगर अपने पद पर बने रहते हैं तो गौतम गंभीर की अगुवाई वाले भारतीय कोचिंग स्टाफ में 6 सदस्य होंगे। टीम के हेड कोच गंभीर होंगे जबकि सहायक कोच के रूप में अभिषेक नायर और रयान टेन डोशेट, तेज गेंदबाजी कोच के रूप में मोर्केल, फील्डिंग कोच के रूप में टी दिलीप और स्पिन गेंदबाजी कोच के रूप में बहुतुले होंगे। 39 साल के मोर्कल तेज गेंदबाज रहे हैं और उन्हें स्पिन को लेकर ज्यादा जानकारी नहीं है। ऐसे में भारत को एक स्पिन कोच की जरूरत होगी।

ओलंपिक उद्घाटन समारोह में खिलाड़ियों को खराब गुणवत्ता वाली ड्रेस दी गयी : ज्वाला गुट्टा

पेरिस । पूर्व बैडमिंटन खिलाड़ी ज्वाला गुट्टा ने कहा है कि पेरिस ओलंपिक के उद्घाटन समारोह में शामिल खिलाड़ियों को जो कपड़े दिया गये थे वह खराब स्तर के थे। गुट्टा ने कहा कि ये निराशाजनक है कि ओलंपिक जैसे इवेंट में इस प्रकार की लापरवाही हई है। गुट्टा के अनुसार इससे खिलाड़ी भी निराश हैं। गुट्टा ने कहा कि जो लोग इसके लिए जिम्मेदार हैं। उनकी आलोचना होनी चाहिये। साथ ही कहा कि

बिना विचार के ये सारा काम हुआ है। ये भी नहीं देखा गया कि खिलाड़ियों को जो कपड़े दिये जा रहे हैं वह इस स्तर के हैं कि नहीं। साथ ही कहा कि जब डिजाइनर की घोषणा की गई थी, तो मुझे उनसे बहुत उम्मीदें थीं पर अब निराशा हुई है। सबसे पहले, सभी लड़कियों को साड़ी पहनना नहीं आता। ऐसे में डिजाइनर को प्री ड्रेड साड़ी उपलब्ध करानी थी। इससे खिलाड़ियों को परेशानी हुई। कपड़ों की फिटिंग भी ठीक नहीं थी। उन्होंने साथ ही कहा कि कपड़ों का रंग और प्रिंट भी हमारे अनुकुल नहीं था। डिजाइनर के पास कढ़ाई या हाथ से पेंट के माध्यम से हमारी संस्कृति की कला को प्रदर्शित करने का अवसर था पर ऐसा नहीं हुआ। मुझे उम्मीद है कि खेल परिवार हमारे खिलाड़ियों की कोर्ट और ऑफ कोर्ट पर गुणवत्ता से समझौता करना बंद कर देगा। ज्वाला के अलावा खेल प्रशंसकों ने भी खिलाड़ियों को उपलब्ध ड्रेस पर नाराजगी जतायी है।

नेपाल से आता था गैंग.... घटना को अंजाम दे हो जाता था फरार

फरीदाबाद। हरियाणा के फरीदाबाद में ग्रीन फील्ड में हुई लूट की घटना में पांच आरोपियों को अरेस्ट किया है। इनमें एक नौकरानी भी शामिल है। जब इन आरोपियों को पकड़ा तब वे दिल्ली में दूसरी लूट की घटना को अंजाम देने की योजना कर रहे थे। पुलिस की शुरुआती पूछताछ में सामने आया है कि यह गैंग दिल्ली, गुड़गांव, जयपुर, लुधियाना सहित फरीदाबाद 9 वारदातों को अंजाम दे चुका था। पुलिस के पकड़े गए आरोपी अभी तक छह करोड़ से अधिक की लूट और चोरी कर चुके हैं। गिरोह का मुखिया पहले भी फरीदाबाद में साल 2022 में वारदात को अंजाम दे चुका है। पुलिस के अनुसार वह उस कैस में फरार था। पुलिस के अनुसार पकड़े गए आरोपियों से खुलासा हुआ है कि ये नेपाल में पहले व्हाट्सऐप पर प्लानिंग करते थे। इस दौरान जरूरत होने पर नए साथियों को जोड़ते थे। इसके इंडिया और फिर जिस जिले में वारदात को अंजाम देना होता था उसके आस पड़ोस के जिलों में किराए पर मकान लेते थे। नेपाल के कैलाली जिले के सारे युवा इसी अपराध से जुड़े हैं। ये इंडिया में आकर घटना को अंजाम देकर नेपाल भाग जाते हैं। ये आरोपी इतने शातिर है कि पकड़े न जाए इसलिए एक जिले में एक साल में एक ही घटना को अंजाम देते थे।

सिंधुदुर्ग जिले के जंगल में लोहे की जंजीर से जकडी मिली अमेरिकन महिला

मुंबई। महाराष्ट्र के सिंधु दुर्ग जिले के जंगल में 50 वर्ष की अमेरिकन महिला पेड़ में बंधी हुई मिली है। लोहे की जंजीरों से बांधकर इसे रखा गया था। इस महिला के पास अमेरिका के पासपोर्ट की फोटो कॉपी और तमिलनाडु के पते वाला आधार कार्ड मिला है। महिला की मानसिक हालत खराब है, महिला जख्मी भी है। उसे इलाज के लिए गोवा मेडिकल कॉलेज में भेजा गया है। महिला की पहचान उसके पास से मिले आधार कार्ड से हुई है। उसका नाम ललिता कायी है। उसका निवास स्थान तमिलनाडु का है, जो दस्तावेजों में लिखा हुआ है। उसके कागजों में एक डॉक्टर का परचा भी पुलिस को मिला है। स्थानीय पुलिस के अनुसार शुरुआती जांच में पता चला है। यह अमेरिकी महिला 10 साल से भारत में रह रही है। उसके वीजा की वैधता खत्म हो चुकी है। महिला जिस हालत में मिली है। वह बयान देने की स्थिति में नहीं है। इसको कई दिनों से कुछ खाने-पीने के लिए नहीं मिला है। जिसके कारण यह बहुत कमजोर है। बोलने लायक स्थिति में नहीं है। पुलिस ने मामला दर्ज कर जांच शुरू कर दी है।

उत्तरकाशी में फटे बादल, दर्जनों नहरें बहने से कई खेत बर्बाद, घरों में घुसा पानी

देहरादून। उत्तरकाशी में बादल फटने से नाकुरी गाड़ के बरसाली क्षेत्र में भारी नुकसान हुआ है। सिंगोट में लोगों के खेत बर्बाद हो गए। घरों में पानी भर गया है। सुरक्षा दीवार बह जाने से गांव के लिए खतरा पैदा हो गया है। सोमवार रात को भारी बारिश और बादल फटने की घटना से नाकुरी गाड़ में बाढ़ आने से ग्रामसभा सिंगोट, ग्रामसभा मांगली सेरा, ग्रामसभा बरसाली के नाकुरी में काश्तकारों को भारी नुकसान हुआ है। लोगों के शौचालय, छानिया और घर क्षतिग्रस्त हो गए। दर्जनों नहरें बाढ़ में बह जाने से सिंचाई की समस्या उत्पन्न हो गई है। मौसम विभाग की ओर से देहरादून, टिहरी, पौड़ी, हरिद्वार, अल्मोड़ा, बागेश्वर, पिथौरागढ़, चम्पावत, नैनीताल और ऊधमसिंह नगर जिले में भारी से भारी बारिश का येलो अलर्ट जारी किया गया है अन्य जिलों में भी तेज गजर के साथ तेज बारिश होने की संभावना है। राज्य में 131 मार्ग बंद हैं। इसमें सबसे ज्यादा पिथौरागढ़ और चमोली जिला प्रभावित हैं। पिथौरागढ़ जिले में दो बार्डर रोड और 21 ग्रामीण मार्ग बंद हैं। चमोली में 23 ग्रामीण मार्ग प्रभावित हैं। बागेश्वर में एक जिला मार्ग, दो मुख्य जिला मार्ग और 13 ग्रामीण मार्ग, उत्तरकाशी में एक राज्य मार्ग, एक मुख्य जिला मार्ग और सात ग्रामीण मोटर मार्ग और देहरादून में दो राज्य मार्ग, एक अन्य मार्ग और 15 ग्रामीण मार्ग बंद हैं।

आज से तीन दिन दिल्ली में हो सकती है झमाझम, येलो अलर्ट जारी

नई दिल्ली। देश की राजधानी दिल्ली में उमस भरी गर्मी के बीच तीन दिन यानी मंगलवार, बुधवार और गुरुवार को अच्छी बारिश हो सकती है। तीनों दिन आसमान में बादल छाए रहेंगे। गरज के साथ हल्की से मध्यम बारिश होने के आसार हैं। मौसम विभाग ने येलो अलर्ट जारी कर दिया है। इस मानसून में मौसम विभाग के अधिकांश पूर्वानुमान गलत साबित हुए हैं। ऐसे में इन तीनों दिनों में बारिश कैसी होगी यह कितना सही निकलेगा, समय आने पर ही पता चलेगा। दिल्ली में आज भी सुबह से ही तेज धूप खिली है। उमस से लोगों का बुरा हाल है। फिलहाल बारिश होने की कोई संभावना नजर नहीं आ रही है। न्यूनतम तापमान सामान्य से तीन डिग्री ज्यादा 30.1 डिग्री सेल्सियस दर्ज किया गया है जबकि अधिकतम तापमान 38 डिग्री रह सकता है। मौसम विभाग के मुताबिक दो तीन दिन अच्छी बरसात के बाद फिर दो दिन हल्की बारिश होने का अनुमान है जबकि उसके बाद सप्ताहांत में फिर से अच्छी बरसात और येलो अलर्ट का पूर्वानुमान है। केंद्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड के आंकड़ों के अनुसार, दिल्ली का वायु गुणवत्ता सूचकांक (एक्यूआई) 92 है, जो संतोषजनक है।

एआई के उपयोग से नौकरियों पर बढ़ेगा खतरा? सरकार ने कहा गलत

नई दिल्ली। आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस यानी एआई को लेकर कई तरह की शंकाएं हैं। माना जा रहा है कि एआई के इस्तेमाल से नौकरियों का संकट खड़ा हो जाएगा और बेरोजगारों की संख्या बेलगाम हो जाएगी। इस पर केंद्रीय श्रम मंत्री मनसुख मांडविया ने सोमवार को संसद को बताया है कि आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (एआई) के प्रयोग से भारत में नौकरियां नहीं जाएंगी और कहा कि इसके विपरीत यह नई तकनीक नई नौकरियों के अवसर खोलेगी। एआई के कारण नौकरियों के नुकसान की चिंताओं पर लोकसभा में तृणमूल कांग्रेस के सांसद कल्याण बनर्जी ने उनसे प्रश्न पूछे थे। इस सवाल का जवाब देते हुए मांडविया ने कहा, जब इंटरनेट आया तो इसी तरह की अटकलें लगाई गई थीं कि इससे नौकरियां जाएंगी। जब कंप्यूटर आए, तब भी ऐसी ही बातें हुई थीं। लेकिन आज हम जानते हैं कि इस तरह की तकनीकी उन्नति से और ज्यादा अवसर ही मिले हैं। इसलिए एआई का प्रयोग नौकरियों के नए अवसर ही प्रदान करेंगे। इस दौरान मनसुख मांडविय श्रम मंत्री ने यह भी कहा कि मोदी सरकार द्वारा उठाए गए कदमों से देश में बेरोजगारी दर में काफी कमी आई है। उन्होंने कहा कि श्रम बल भागीदारी दर 2017-18 में 38 प्रतिशत से बढ़कर 44 प्रतिशत हो गई है। पश्चिम बंगाल में पर्याप्त नौकरियों की कमी के बारे में बनर्जी के सवाल उठाए जाने पर मंत्री ने निशाना साधते हुए कहा कि जो लोग राज्य में इंडस्ट्रीज के सामने आंदोलन चलाते रहते हैं, उन्हें यह पता होना चाहोगे कि इसका असर नौकरियों पर भी पड़ेगा। उन्होंने कहा कि राज्य की आबादी को देखते हुए, राज्य सरकार को ज्यादा निवेश और उद्योगों को अपनी ओर आकर्षित करना चाहिए था।

बिहार में भाजपा वैश्य समाज को क्यों दे रही तवज्जो

पटना। 2025 में होने वाले बिहार विधानसभा चुनाव से पहले बीजेपी का केंद्रीय नेतृत्व अपनी तैयारी पूरी करने में जुटा है। वैश्य भाजपा का कोर वोटर है। वैश्य लोकसभा चुनाव में भाजपा से नाराज दिखे।अब वैश्य जाति के लोगों ने लोकसभा चुनाव में थोड़ी बेरुखी क्या दिखाई इन पर पदों की वर्षा होने लगी। भाजपा के केंद्रीय नेतृत्व ने वैश्य की नाराजगी को दूर करने को डॉ. दिलीप जायसवाल को प्रदेश अध्यक्ष बनाकर राज्य की बागडोर थमा दी। डॉ.जायसवाल लगातार तीसरी बार एमएलसी बने हैं। पार्टी के कोषाध्यक्ष भी रहे हैं। हालांकि ये दूसरे दल से भाजपा में आए। वैसे दूसरे दल से आने वाले तीसरे विधान पार्षद हैं जो प्रदेश अध्यक्ष हैं। इसके पहले संजय जायसवाल और सम्राट चौधरी भी दूसरे दल से आकर प्रदेश अध्यक्ष बने हैं। भाजपा के केंद्रीय नेतृत्व ने डॉ. संजय जायसवाल को लोकसभा का मुख्य सचेतक बनाया गया। इसके पहले डॉ. जायसवाल भाजपा के प्रदेश अध्यक्ष रहे हैं। ये पश्चिम चंपारण (बेतिया) से लगातार चार बार सांसद रहे हैं। ये लगातार वर्ष 2024, वर्ष 2019, वर्ष 2014 और वर्ष 2009 लोकसभा चुनाव में जीत का परचम लहराया है। दरभंगा विधायक संजय सरावगी को बिहार विधान सभा का सचेतक बनाया। संजय दरभंगा से पहली बार अक्टूबर 2005 में विधायक बने। फिर उसके बाद 2010, 2015 और 2020 का विधान सभा का चुनाव भी जीते। पार्टी ने इन्हें विधान सभा के सचेतक की जिम्मेदारी दी है। 2022 में कुढ़नी विधान सभा उप चुनाव में जदयू के प्रत्याशी मनोज कुशवाहा को तीन हजार से भी ज्यादा मतों के अंतर से हराया था।

'राष्ट्रहित का राजनीतिकरण न करें', राज्यसभा में बोले जेपी नड्डा, बजट में सभी का रखा गया ध्यान

नई दिल्ली (एजेंसी)। भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष जेपी नड्डा ने हाल ही में एक संबोधन के दौरान प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना (पीएमजीएसवाई) की प्रभावशीलता पर जोर दिया। उन्होंने कहा कि यह पहली बार था जब भारत में ग्रामीण सड़क विकास के लिए एक व्यापक और अचूक योजना शुरू की गई थी। राज्यसभा में केंद्रीय बजट पर बोलते हुए नड्डा ने कहा कि 60 साल पहले, जब नेहरू लगातार 3 बार चुनाव जीते, तो देश में आजादी का उत्साह था और उनका मुकाबला बेहद कमजोर और बिखरे हुए विपक्ष से था। हालाँकि, 2024 में, मोदी जी ने एक मजबूत विपक्ष के खिलाफ अपना तीसरा कार्यकाल जीता। यह जनादेश स्थिरता, निरंतरता, सुशासन और विकसित भारत के विकास के लिए है।

नड्डा ने आगे कहा कि इस बार का बजट सर्वसमावेशी है। ये सतत विकास और आर्थिक लचीलापन का बजट है। आज दुनिया के विकसित देशों की आर्थिक स्थितियां डगमगा रही हैं, लेकिन हम economic resilience के साथ कोविड महामारी के बाद मजबूती के साथ खड़े हैं। उन्होंने साफ तौर पर कहा कि इस बजट के लिए प्राथमिकता वाले क्षेत्र बुनियादी ढांचे का विकास, तकनीकी नवाचार, सामाजिक कल्याण और सभी के लिए समान अवसर हैं। यह दूरदर्शी बजट है जो विकास को गति देने वाली नीतियों को गति देगा। यह बजट सभी का ख्याल रखता है।

उन्होंने कहा कि यह बजट व्यापक और आर्थिक सामाजिक विकास को समर्पित है। इस बजट की प्राथमिकता है- बुनियादी ढांचे का विकास, तकनीकी नवाचार, समाज कल्याण। ये बजट पासपोर्ट समान अवसर पद वाला है। भाजपा अध्यक्ष ने कहा कि इसके बाद आप बजट की कितनी ही बातें कर लो, वो देश के लिए कितने हित का था, वो समझ आ जाता है। आंकड़ों से देश नहीं चलता है, लीक प्रूफ व्यवस्था के साथ last mile delivery assurance जरूरी है। इसलिए मोदी जी ने डीबीटी को डिजिटल इंडिया बनाया और डीबीटी के माध्यम से 37 लाख करोड़ रुपये देश के आम नागरिकों के बैंक खाते में सीधे भेजे गए।

जेपी नड्डा ने कहा कि रिसाव प्रमाण और अंतिम मील वितरण आश्वासन जरूरी है, लेकिन लंबे समय तक जो लोग देश पर राज कर रहे हैं, वे इस ओर ठोस कदम नहीं उठा पाते हैं। इस कारण से बातचीत और लाइक का गहरा रिश्ता बना हुआ है। एक समय तो ऐसा था, जब प्रधानमंत्री ने कहा था कि मैं एक रुपया भेजता हूं, 85 पैसे के बीच में ही खत्म हो जाता है, 15 पैसे ही उनमें से एक है। उन्होंने कहा कि कई बार लोग कहते हैं कि मिडिल क्लास का क्या हुआ? उजाला योजना के तहत वितरित एलईडी बल्ब के कारण 20 हजार करोड़ रुपये का बिजली बिल कम हुआ और 47.7 मिलियन किलो वाट ऊर्जा बचाई गई।

नड्डा ने कहा कि उसी तरह सौभाग्य योजना के तहत 2 करोड़ 60 लाख घरों को बिजली का कनेक्शन दिया गया। आवास योजना के तहत 4 करोड़ घर हम बना चुके और मोदी 3.0 की पहली कैबिनेट में फैसला किया गया कि हम 3 करोड़ अतिरिक्त नए घर बनाएंगे। जल जीवन मिशन के तहत 11 करोड़ से अधिक जल कनेक्शन दिए गए और IIM Bangalore का कहना है कि करीब 2 करोड़ रोजगार सिर्फ जल जीवन मिशन से सृजित होंगे।

गुजरात में आप और कांग्रेस साथ... केजरीवाल के समर्थन में किया प्रदर्शन

अहमदाबाद । लोकसभा चुनावों में बाद कांग्रेस और आम आदमी पार्टी की दोस्ती दिल्ली और हरियाणा में भले ही खत्म हुई है, लेकिन गुजरात में इंडिया गठबंधन के तहत दोनों पार्टियां एक साथ हैं। मंगलवार को आम आप ने मुख्यमंत्री और पार्टी संयोजक अरविंद केजरीवाल की रिहाई की मांग को लेकर अहमदाबाद में प्रदर्शन किया। लंबे समय बाद सड़क पर उतरी आप के प्रदर्शन में कांग्रेस के नेताओं ने भी शिरकत की। गुजरात में कांग्रेस और आप ने मिलकर चुनाव लड़ा था। राज्य की 26 लोकसभा सीटों पर दो सीटें आप और बाकी पर कांग्रेस लड़ी थी। इसमें पार्टी के दूसरे विधायक भी मौजूद रहे। आप के प्रदेश अध्यक्ष इसुदान गढ़वी की अगुवाई में हुए प्रदर्शन में कांग्रेस की ओर विधायक इमरान खेड़ावाला और अहमदाबाद शहर अध्यक्ष हिम्मतभाई पटेल ने इसमें शिरकत की। इस मौके पर गढ़वी ने कहा कि जेल में बीजेपी के अत्याचार झेल रहे केजरीवाल का स्वास्थ्य बिगड़ता जा रहा है। विरोध प्रदर्शन के कार्यक्रम को आप गुजरात विधायक दल के नेता चैतर वसावा ने भी संबोधित किया है। वसावा ने कहा कि आप को खत्म करने की साजिश में आप के राष्ट्रीय संयोजक केजरीवाल, पूर्व उपमुख्यमंत्री मनीष सिसोदिया, पूर्व स्वास्थ्य मंत्री सत्येन्द्र जैन को झूठे मामलों में जेल में डाल दिया गया है। आप ने अहमदाबाद स्थित प्रदेश कार्यालय से इनकम टैक्स ऑफिस पदयात्रा निकाली। लोकसभा चुनावों के बाद यह पहला मौका है जब कांग्रेस पार्टी ने आम आदमी पार्टी की तरफ से आयोजित कार्यक्रम में शिरकत की। इससे पहले राहुल गांधी के दौरे में आप नेता नहीं पहुंचे थे। दोनों दलों के बीच समन्वय देखने को नहीं मिला था, लेकिन दो राज्यों में भले ही कांग्रेस और आप की राहें अलग हो गई हैं लेकिन गुजरात में दोनों दलों के एक साथ रहने की संभावना है।

जम्मू-कश्मीर को आतंकवाद से मुक्त कराने के लिए क्या कर रही सरकार? गृह मंत्रालय ने लोकसभा में दी बड़ी जानकारी

नई दिल्ली (एजेंसी)। जम्मू-कश्मीर में एक महीने से अधिक समय में आतंकी हमलों में बढ़ोतरी के बीच, केंद्र सरकार ने मंगलवार को लोकसभा को क्षेत्र में 'आतंकवादी इको-सिस्टम को खत्म करने' के लिए उठाए जा रहे कदमों के बारे में जानकारी दी। संसद के चल रहे मानसून सत्र में भाजपा सांसद प्रदीप कुमार सिंह के 'अतारांकित प्रश्न' के लिखित उत्तर में गृह राज्य मंत्री नित्यानंद राय ने केंद्र शासित प्रदेश में निरंतर शांति और स्थिरता लाने के लिए केंद्र द्वारा अपनाए गए तरीकों को सूचीबद्ध किया।

प्रदीप कुमार सिंह ने 'अतारांकित प्रश्न' में पूछा, 'क्या सरकार ने केंद्र शासित प्रदेश जम्मू-कश्मीर को आतंकवाद से मुक्त बनाने के लिए कोई ठोस कदम उठाया है?' सवाल का जवाब देते हुए, MoS ने कहा कि सरकार ने 'आतंकवादियों और समर्थक संरचनाओं के खिलाफ निरंतर कार्रवाई', आतंक के वित्तपोषण पर कार्रवाई और राष्ट्र-विरोधी संगठनों पर प्रतिबंध लगाने पर जोर दिया है। उन्होंने बताया कि सरकार की आतंकवाद के खिलाफ जीरो टॉलरेंस की नीति है। सरकार का दृष्टिकोण आतंकी इको-सिस्टम को नष्ट करना है। जम्मू-कश्मीर में शांति और स्थिरता बनाए रखने के लिए सुरक्षा उपायों को मजबूत किया जा रहा है।

राय ने आगे बताया कि जम्मू-कश्मीर में आतंकी घटनाओं को रोकने के लिए अपनाई गई रणनीतियों और की गई कार्रवाई में आतंकवादियों और सहायक संरचनाओं के खिलाफ प्रभावी, निरंतर और निरंतर कार्रवाई शामिल है। संपूर्ण सरकारी दृष्टिकोण का उपयोग करके आतंकी पारिस्थितिकी तंत्र को नष्ट करना। कानून की प्रासंगिक धारा के तहत आतंकवादियों और उनके सहयोगियों से संबंधित संपत्तियों की जब्ती/कुर्की और राष्ट्र-विरोधी संगठनों पर प्रतिबंध जैसे आतंकी वित्त पर कार्रवाई शामिल है।

21 जुलाई, 2024 तक के आंकड़ों को सूचीबद्ध करने वाले सरकार के जवाब के अनुसार, इस वर्ष इस क्षेत्र में 11 'आतंकवादी-प्रेरित घटनाएं' हुई हैं। जम्मू-कश्मीर में मुठभेड़ों और आतंकवाद विरोधी अभियानों की संख्या 24 दर्ज की गई, जिसमें अब तक कार्रवाई में 14 सुरक्षा बल के जवान मारे गए हैं, और 14 नागरिकों की जान चली गई है। इस वर्ष 'संगठित पथराव और संगठित हड़ताल' की कोई घटना सामने नहीं आई है।

जिसकी वजह से हारे हैं, फिर उसी राह पर चल रहे, लव जिहाद कानून को लेकर अखिलेश ने साधा निशाना

नई दिल्ली (एजेंसी)। समाजवादी पार्टी प्रमुख अखिलेश यादव ने कहा कि ये लव जिहाद जो कानून आ रहा है, उससे भाजपा से आप क्या उम्मीद करते हैं? ये नौकरी थोड़ी देंगे, इन्होंने महंगाई बढ़ाई, नौकरी नहीं दी और अभी भी वे उसी रास्ते पर हैं जिसकी वजह से वे हारे हैं। ये इस तरह का कानून इसलिए ला रहे हैं क्योंकि इनका साम्प्रदायिकता का दीया बुझने जा रहा है,य चाचा को गच्चा किसी ने नहीं दिया, ये दिल्ली वालों को गच्चा दे रहे हैं। ये 'सह-योगी' है, जिन्होंने सहयोग दिया है।

बता दें कि भारतीय जनता पार्टी के नेतृत्व वाली योगी आदित्यनाथ सरकार ने उत्तर प्रदेश गैरकानूनी धर्म परिवर्तन निषेध (संशोधन) विधेयक, 2024 विधानसभा में पेश किया, जिसमें लव जिहाद मामलों में आजीवन कारावास की कठोर सजा का प्रस्ताव किया गया है। जहां भाजपा ने इस कदम का स्वागत किया, वहीं विपक्ष नाखुश नजर आया और इसे भाजपा द्वारा नकारात्मक राजनीति करने के लिए विभाजनकारी कदम बताया। यह कहते हुए कि उत्तर प्रदेश गैरकानूनी धर्म परिवर्तन निषेध अधिनियम, 2021 के तहत मौजूदा प्रावधान अपर्याप्त हैं, योगी सरकार ने मौजूदा विधेयक में संशोधन का प्रस्ताव दिया, जिसमें सजा को अधिकतम दस साल से बढ़ाकर आजीवन कारावास, जमानत देना शामिल है।

यूपी सरकार द्वारा प्रस्तावित संशोधनों का भाजपा ने स्वागत करते हुए कहा है कि यह कदम सही दिशा में उठाया गया कदम है। समाचार एजेंसी आईएएनएस की रिपोर्ट के अनुसार, हालांकि, समाजवादी पार्टी ने इस कदम को 'विभाजनकारी' करार दिया, जिसका उद्देश्य समाज में शत्रुता पैदा करना है। यूपी के उपमुख्यमंत्री केशव

प्रसाद मौर्य ने मंगलवार सुबह विधानसभा पहुंचते ही संवाददाताओं से कहा कि प्रस्तावित संशोधनों का स्वागत किया जाना चाहिए क्योंकि यह ऐसी प्रथाओं के खिलाफ निवारक के रूप में कार्य करेगा। भाजपा नेता मोहसिन रजा ने कहा कि कानून में संशोधन से अवैध धार्मिक रूपांतरण से निपटने में मदद मिलेगी क्योंकि 'लव जिहाद' के मामलों में वृद्धि हुई है, जहां बहरूपिये किसी लड़की से शादी करने के लिए अपनी पहचान छिपाते हैं और फिर उसे धर्म परिवर्तन के लिए मजबूर करते हैं।

370 हटने का दर्द : पाकिस्तान से आया मैसेज, जम्मू कश्मीर में होंगे कई बड़े आतंकी हमले

नई दिल्ली। जम्मू कश्मीर से आर्टिकल 370 को उखाड़ फेंकने की तारीख 5 अगस्त है। मतलब अगले माह 370 के हटने की पांचवीं वर्षगांठ है। ये पाकिस्तान को हजम नहीं हो रही है। खुफिया एजेंसियों की मानें तो ये आतंकी घाटी में अगस्त महीने में आतंकवादी हमला कर सकते हैं। केंद्रीय खुफिया एजेंसियों ने सीमा पार से आतंकवादियों के मैसेज को डिकोड किया है। मैसेज डिकोड करने से जो जानकारी मिली है, उसके मुताबिक, पाकिस्तानी आतंकवादी संगठन आर्टिकल 370 हटने की पांचवीं वर्षगांठ पर जम्मू-कश्मीर में बड़े आतंक घटना को अंजाम दे सकते हैं। दरअसल, साल 2019 में केंद्र सरकार ने जम्मू-कश्मीर से आर्टिकल 370 को हटा दिया था। इसके बाद से जम्मू-कश्मीर में लगातार विकास योजनाएं प्रगतिशील हैं। साथ ही केंद्र सरकार आने वाले दिनों में जम्मू-कश्मीर में चुनाव भी कराने जा रही है। पाकिस्तान की खुफिया एजेंसी और सेना इसी वजह से बेहद नाराज है। इसलिए पाकिस्तान घाटी का माहौल बिगाड़ने के लिए आतंकवाद का सहारा ले रहा है। वे चाहते हैं कि कश्मीर में किसी तरह चुनाव न हो। ध्यान रहे कि अगस्त के पहले सप्ताह में ही चुनाव आयोग जम्मू-कश्मीर में चुनाव को लेकर समीक्षा बैठक करने जा रहा है और इसी महीने जम्मू कश्मीर में चुनाव को लेकर तिथि भी घोषित की जा सकती है। खुफिया एजेंसी के एक अधिकारी के मुताबिक, इस साल केंद्र में नई सरकार के शपथ ग्रहण के दिन यानी 9 जून को ही आतंकवादियों ने जम्मू-कश्मीर में आतंकी हमले शुरू कर दिए थे। इसके बाद आतकियों ने आतंकवादी बुरहान वानी की बरसी (8 जुलाई) को भी जम्मू-कश्मीर में आतंकी वारदात की थी। इन घटनाओं के बाद से खुफिया एजेंसियों ने पाकिस्तानी आतंकवादी संगठन और पाकिस्तानी खुफिया एजेंसियों की ओर से भारत आने वाले संदेशों पर लगातार निगाह रखना शुरू कर दिया था। इसके मुताबिक, अब पाकिस्तानी आतंकवादी संगठन अगस्त महीने में जम्मू-कश्मीर में बड़ी आतंकवादी कार्रवाई करने की फिराक में हैं। खुफिया सूत्रों के मुताबिक, आतंकवादियों से स्पष्ट तौर पर कहा गया है कि वह अगस्त महीने में हर संभव बड़ी वारदात करने की कोशिश करें। पाकिस्तानी आकाओं ने साफ कहा है कि चाहे सुरक्षा बलों पर ग्रेनेड फेंकना हो, सैनिक ठिकानों पर आत्मघाती हमला करना हो या फिर निर्दोष आम नागरिकों की हत्या करना हो, इस महीने में जम्मू कश्मीर में किसी भी कीमत पर कोहराम मचाना है।

लालू का आरोप, 13 दिनों में 7 रेल दुर्घटनाएं... ताबूत बन गए डिब्बे

पटना (एजेंसी)। झारखंड के चक्रधरपुर में हुए ट्रेन हादसे में दो की मौत और कई घायल हैं। हाल के दिनों में हुए रेल हादसों पर पूर्व रेलमंत्री और आजरेडी सुप्रीमो लालू प्रसाद यादव ने चिंता जाहिर की है। लालू यादव ने ट्वीट कर कहा, 13 दिनों में 7 रेल दुर्घटनाएं! मोदी सरकार ट्रेनों में सुरक्षा व्यवस्था के मूलभूत कदम भी नहीं उठा रही है। रेलवे इतनी असुरक्षित हो चुकी है कि ट्रेनों पर चढ़ने से पहले यात्री प्रार्थना करते हैं कि यह यात्रा उनकी अंतिम यात्रा ना हो। रेल के डिब्बे आज चलते फिरते ताबूत बनकर रह गए हैं।

उधर, दक्षिण पूर्व रेलवे के सीपीआरओ ओम प्रकाश ने बताया कि 80 प्रतिशत यात्रियों को बस से चक्रधरपुर स्टेशन ले जाया जा चुका है। वहीं बाकी, 20 प्रतिशत यात्रियों को स्पेशल ट्रेन से चक्रधरपुर भेजा गया है।

इस दुखद ट्रेन दुर्घटना पर झारखंड के मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन ने अधिकारियों को निर्देश दिया कि घायलों के इलाज के लिए समुचित व्यवस्था करे।

इस पर डीसी के द्वारा जवाब में कहा कगा कि खरसांवा प्रखंड अंतर्गत पोटो बेड़ा गांव के समीप ट्रेन दुर्घटनाग्रस्त हुई है। जिला प्रशासन सरायकेला खरसांवा द्वारा राहत बचाव कार्य एवं हेल्पलाइन नंबर जारी किया गया है। जिला प्रशासन पूर्वी सिंहभूम सभी आवश्यक सहयोग प्रदान के संबंध में सरायकेला खरसांवा जिला प्रशासन के लगातार संपर्क में है।

संसद में भयंकर भिड़ गए अनुराग-राहुल! कहा- मुझे गाली दी, बीजेपी सांसद ने बोले- मैंने किसी का नाम नहीं लिया

नई दिल्ली (एजेंसी)। लोकसभा में उस समय हंगामा हुआ जब भाजपा सांसद अनुराग ठाकुर ने जाति जनगणना के मुद्दे पर कांग्रेस और राहुल गांधी पर परोक्ष कटाक्ष किया। विपक्ष के नेता राहुल गांधी ने मंगलवार को भाजपा सांसद अनुराग ठाकुर पर केंद्रीय बजट पर चर्चा के दौरान लोकसभा के अंदर उनका अपमान करने और दुर्व्यवहार करने का आरोप लगाया। ठाकुर के इस तंज पर कि जिनकी जाति का पता नहीं है, वे जाति जनगणना के बारे में बात करते हैं, गांधी ने कहा कि जो भी आदिवासी, दलित और पिछड़ों के मुद्दे उठाता है, उसे गाली दी जाती है। भाजपा नेता अनुराग ठाकुर ने कहा कि मैंने कहा था कि जो जाति के बारे में नहीं जानता, वह जनगणना की बात करता है। मैंने किसी का नाम नहीं लिया।

कांग्रेस नेता राहुल गांधी ने कहा कि जो भी आदिवासी, दलित और पिछड़े के मुद्दे उठाता है, उसे गाली दी जाती है। मैं इन गालियों को खुशी-खुशी स्वीकार करूंगा अनुराग ठाकुर ने मुझे गाली दी है और मेरा अपमान किया है। लेकिन मैं उनसे कोई माफी नहीं चाहता। मैं इन गालियों को खुशी से स्वीकार करूंगा...अनुराग ठाकुर ने मुझे गालियां दी हैं और मेरा अपमान किया है। लेकिन मैं उनसे कोई माफी नहीं चाहता। राहुल गांधी ने ठाकुर के भाषण को बीच में रोकते हुए कहा कि आप जितना चाहें मेरा अपमान कर सकते है, लेकिन आपको यह नहीं भूलना चाहिए कि हम संसद में जाति जनगणना विधेयक पारित कराएंगे। लोकसभा की कार्यवाही की अध्यक्षता कर रहे जगदंबिका पाल ने सदन को व्यवस्थित करने की कोशिश की। हालाँकि, सांसद अपना असंतोष व्यक्त करते रहे। शोर-शराबे के बीच राहुल गांधी ने कहा कि इस देश में जो भी दलितों के लिए बोलता है, उनके लिए लड़ता है, उन्हें दूसरों से गालियां खानी पड़ती हैं. मैं सारी गालियां खुशी-खुशी खा लूंगा...महाभारत में अर्जुन की तरह, मैं सिर्फ देख सकता हूं%% मछली की आँख, हम जातीय जनगणना करा देंगे, आप मुझे जितनी बार चाहें गाली दे सकते हैं।

समिति सदस्य मोहंती ने जताई आशंका: जगन्नाथ पुरी मंदिर का खजाना हो गया चोरी?

भुवनेश्वर (एजेंसी)। पुरी जगन्नाथ मंदिर के रत्न भंडार की देखरेख के लिए सरकार की तरफ से नियुक्त गई समिति के एक सदस्य ने यह शक जताया है। उन्होंने आशंका जताई कि पहले कीमती सामान चुराने के लिए नकली चाबियों का इस्तेमाल किया जाता था। दरअसल वर्ष 2018 में इस रत्न भंडार की असली चाबियां गायब हो गई थी। इसके बाद पुरी प्रशासन ने दो नकली चाबियां बनवाई थी। हालांकि 14 जुलाई को जब रत्न भंडार खोलने की कोशिश की गई, तो इन चाबियों ने काम ही नहीं किया। इसके बाद समिति के सदस्यों को रत्न भंडार के अंदरूनी कक्ष के तीनों ताले तोड़ने पड़े थे।

रिटायर्ड आईएएस अधिकारी मोहंती ने बताया कि उन्होंने बैठक में यह मुद्दा उठाया। हालांकि, उन्होंने कहा कि समिति और सरकार को आपराधिक जांच शुरू करने की सिफारिश करने का अधिकार नहीं है। मोहंती ने कहा, 'मंदिर प्रशासन सरकार को हमारे संदेह के बारे में बता सकता है।' उन्होंने कहा कि 14 जुलाई को आंतरिक कक्ष के भीतर कुछ बक्से खुले हुए पाए गए थे। अंदरूनी कक्ष में लकड़ी की तीन अलमारियां, एक स्टील की अलमारी, दो लकड़ी के संदूक और एक लोहे का संदूक था। मंदिर प्रशासन के सूत्रों ने बताया कि सिर्फ लकड़ी की एक अलमारी ही बंद मिली।

बता दें कि इस पैनल के अध्यक्ष विश्वनाथ रथ की अध्यक्षता में सोमवार को पुरी में बैठक हुई थी, जिसके बाद समिति के सदस्य जगदीश मोहंती ने ये सनसनीखेज आरोप लगाए। अंग्रेजी अखबार में छपी रिपोर्ट के मुताबिक, मोहंती ने बैठक के बाद कहा, 'नकली चाबियों के काम न करने के बाद ताले तोड़े गए, इससे यह साफ होता है कि आपराधिक मकसद और कीमती सामान चुराने की मंशा थी। नकली चाबी का मुद्दा एक धोखा था, क्योंकि चोरी की कोशिश से इनकार नहीं किया जा सकता है।' 11 मई को ओडिशा में एक चुनावी रैली के दौरान, पीएम मोदी ने नकली चाबियों को लेकर पिछली बीजद सरकार पर जमकर निशाना साधा था। पीएम मोदी ने सवाल किया था, 'असली चाबियों का गायब होना एक गंभीर मामला है और नकली चाबियों की मौजूदगी और भी चिंताजनक है। क्या नकली चाबियों का इस्तेमाल भगवान के आभूषणों को हड़पने के लिए किया जाता था?'

नवबिहार मीडिया प्रा. लि. के लिए मुद्रक एवं प्रकाशक डॉ. रामाज्ञा तिवारी द्वारा विश्वेश्वरा पब्लिकेशनंस एलएलपी की ओर से शिवासाईं पब्लिकेशन प्राइवेट लिमिटेड, नियर टेंडर बागीचा पेट्रोल पंप, रातू, रांची (झारखंड)- 835222 से मुद्रित एवं उद्योग भवन मार्ग, 19 A कोकर औद्योगिक क्षेत्र रांची- 834001 (झारखंड) से प्रकाशित। **संपादक- डॉ. रामाज्ञा तिवारी, प्रधान संपादक-देवेंद्र सिंह*** (*पीआरबी एक्ट के तहत खबरों के चयन के लिए जिम्मेदार), **प्रबंधक- नरेंद्र कुमार सिंह**. 9334331934, 9386895799, 9507466535, **RNI Regn.: JHAHIN/2011/40902**